STABANABALY

स्तवनावली।

श्रीराय शेताव चन्द नाहार बाहादुर द्वारा

संगृहीत।

THIRD EDITION

तृतीय बार

अजिमगञ्ज-"विश्वविनोद" छापाखानामे
श्रीश्यामलाल चक्रवर्त्तिने मुद्रीत ओ प्रकाशित किया।
ई: सन १९०४.   संवत १९६१.

निछरावर १॥) रुपैया

STABANABALY

स्तवनावली ।

श्रीराय शेताव चन्द नाहार वाहादुर द्वारा

संगृहीत ।

THIRD EDITION

तृतीय वार

अजिमगञ्ज—"विश्वविनोद" छापाखानामें

श्रीश्यामलाल चक्रवर्त्तिने मुद्रीत ओ प्रकाशित किया।

ईः सन १९०४.   संवत १९६१.

निछरावर १॥) रुपैया।

सूचना

इह "स्तवनावली" तृतीयवार प्रकाशित हुई। इस वार नाटक के स्वरके नवीन रचे भये अच्छे२ स्तवन संग्रह कीया गया है तथा पहलेसे वड़े और सुस्पष्ट टाइपोमे छपि है। इसके अवलम्बनसे दो घड़ि परमात्माके गुणग्राममे व्यतीत हो तो इसका परिश्रम सफल है। पूर्व्व २ वार जैन भाईयो इसे जैसे आग्रह सेती ग्रहण कीयेहै उम्मेद है कि इस दफेभी वैसी मुजब कबूल करेंगे। इसमे छापनेके दोषसे या स्वीय अज्ञानता के वससे जो कुछ कहीं भुल चूक हुवा होय सो मन वचन करके हमकु मिच्छामि दुक्कड़ होय। आप लोग इसे संशोधन कर यत्न सहित पाठ करे ऐसी मेरी प्रार्थना है। इति शुभं

अजिमगञ्ज
स १९६१ आषाढ़।

श्रीशेतावचंद नाहार
राय बहादुर।

सूचीपत्र।

(वर्णमालानुसार)



श्री.

श्रीआदिनाथजीका देख दरस	ठुमरि	४१
श्रीरे सुमति जिन वंदिया	होरी	८२
श्रीजिन धूम मचाई आज	„	२२७
श्रीजिन चरण गहे दिरगण	झिंझोटी	१२०
श्रीश्रीमंदिर जिन श्याम मुजरो	पिलु	१२७
श्रीपारश प्रभु साहब मेरे	बरसाति	१३७
श्रीवासपूज्य महाराज सफल	लावणी	२०७
श्रीसीमंधर साहिबा वीनतड़ी	देशी	१७९
श्रीसंखेश्वर पास जिनेश्वर	„	१८०
श्रीचिंतामण पास अरज	„	१८१
श्रीसंभव जिनराया जगजीवन	,	१९७
श्रीनवकार जपो मन रंङ्गे	„	२२९
श्री इक मन वंदु स्वामी वीर	„	२७६

सूचीपत्र ।

अ

अनुभव सुजन संघाती मेरे	भैरुं	२५
अव मोहे तारोगे दीन दयाल	अलहीया	३०
अव मेरी प्रभुसुं प्रीत लगीरी	टोरी	३१
अवतो चेतन चेत सत बुद्धि	गजल	४०
अवतो सुनो सखी फागन आवे	होरी	५७
अलख लख्या किम जावें हो	„	७६
अरज हमारी सुन लिजीये	हिरञ्जा	८५
अव मोहे प्रभुजी तुं हि हमारो	साहाना	१०६
अगर हम वेतमा होते तो चेतन	रेखता	१०७
अहो जिनवरजि नीके नयन	पुरवि	१०९
अंखिया सफल भई में भेट्या	चलत	१११
अंखिया मेरी प्रभुजीसुं आज	„	११३
अवतो उधारो मोहे चहिये	पिलु	१२५
अचिरा नन्दन स्वामिनी	वरसाति	१३८
अविनाशीके गुण गावना	कल्याण	१४५
अव लाग्यो तो सुं रङ्ग	इः वेहाग	१४५
अव चरणन चित लागे	हमीर	१४६
अरजि मेरी सहीया मोहे	रासधारी	१४६
अजब जोत मेरे जिनकी	गौरी	१४७

अभिनन्दन जिनराज सौ	गौरी	१४७
अति वन वन वन फूली वन	बसन्तबाहार	१४९
अनुभव मीत मिला दे मुजकु	मल्हार	१५३
अरथ करो कोई पडित ज्ञानी	भीम मल्हार	१५५
अब प्रभुसुं इतनी कहुं टुक	बेहाग	१६६
अरचुंगो आज ऋषभ चरणं	कालेगड़ा	१७३
अपने घर बैठा लील करो	देशी	१९५
अवधू सोयोगी गुरू मेरा	आशावरी	१९९
अखण्ड डङ्का मालवा खडमे	लावणी	२०९

आ

आज महोच्छव रङ्ग रलीरी	बाहार	१
आजकी रैन सोहाई	सोहिनी	३
आवो गावो वधाई मोरी	कालेगड़ा	४
आजतो वधाई राजा नाभिके	भैरवी	४
आज प्रभु तेरे चरण लाग	"	६
आदि जिनन्द मेरी आदि	"	८
आजकी रेण सोहाणि देखो	चैतावर	५
आदिनाथ जिन प्यारा हो	सिधु	१३
आंगन कल्प फल्योरी हमारे	भैरु	२१
आसरा तुमारा जैसे डुवते को	"	२३

सूचीपत्र ।

आज तो हमारे भाग वीर प्रभु	भैरु	२७
आवत सब इंद्र चन्द्र पूजत हैं	”	२७
आज सखि मेरे बालमा निज	बेलावल	३०
आज छवि नीकी छाजैरे	ठुमरि	४१
आवो नेम रह जावो सदन	”	४५
आज अजब छवि जिनवरकी	”	९५
आया हुं जिनराजसें मैं अरजि	इंद्रसभा	५३
आये थे पिया ब्याहकुं तुम	”	५४
आज भविक जन होरी खेले	होरी	६९
आज मिल्यो त्रिशला सुत	”	७९
आज नगरमें उछव भारी	साहाना	१०६
आदिश्वर जिनवर देह पदाश्रय	झिंझोटी	१२१
आज मन लाग्यो मेरो नेम	”	१२४
आयो सही अब जांउ कहां	पिलु	१२६
आवो प्रित आवो रुडा जिन	सारङ्ग	१३०
आजतो आनन्द भयो चित्तमें	जाजवंति	१३९
आज ऋषभ घर आवे	कल्याण	१४०
आज जिन चरण पूजन मेरे	इः बेहाग	१४५
आज हमारे आनन्दा	कानड़ा	१५०
आदि जिन चरणन पूजो	हमीर	१५१

आज तुम सुरतरु सरसे दरसे	भीम मल्हार	१५५
आज गिरिराजके शिखर	कहरवा	१९४
आज गई थी मे समोवसरणमे	देशी	१९६
आज म्हारा नयना सफल	"	१९६
आज हमारे हर्ष वधाई उछव	"	१९८
आवो आवो सज्जन मिल	ठुमरि	२३८

इ

इस काया नगरमे आयके	गजल	५७

ई

ईन्द्राणी प्रभुके वेगी आंज्यां	भैरवी	९

उ

उठोने मेरा आतमराम जिन	भेरुं	२३
उछी जिन्दगानीरे कारणे	होरी	८५
उमग भइ दरशनकी मनमे	चलत	११०

ऋ

ऋषभ देव सांवरा तेरे दरशन	झिंझोटी	१०४
ऋषभ देव धुलेवा विराजे	पिलु	१२६
ऋषभ जिनेश्वर त्रिभुवन दिनकर	देशी	१९२
ऋषभ योगीश्वर भजत जगदीश्वरं	विभास	२३०
ऋषभ अजित सम्भव	आरति	२४३

सूचीपत्र।

ए

ए हाल अपना कहुं मैं कासे	गजल	४८
एसी होरी होई रही चम्पा	होरी	७५
एक समें घन श्यामकी सुन्दरी	”	७४
एसो नर भव पाय गमायो	”	८१
एसो ब्रह्म मोपै कैसे कहायरे	कल्याण	१४२

ऐ

ऐसी तेरी मूरत बनी चन्द	गजल	३६
ऐसे प्यारेकी लटककी मैं	”	५१
ऐसी विध ते नें पाई रे	होरी	७४
ऐसो दाव मिल्योरी लाल	”	८०
ऐसे जिन चरणे चित ल्याउंरे	अः बेलावल	८९
ऐ… पाणी पड़े असराल	नाटक	२०२
ऐसे पूजा करने वाले मैं ने	नाटक	२३४

औ

औरनसे रङ्ग न्यारा न्यारा	कल्याण	१४३

क

कीजे मङ्गलाचार, आज घर	ईमन कल्याण	३
कुन वन वीर समोसरया	सिधु भैरवी	१३
कर्मो कर भक्ति करुं प्रभु तेरी	भैरवी	१६

क्या तें गाफिल सुता है	भैरुं	१८
कवन निंद सुता मन मेरा	"	२७
क्या सोवे उठ जाग बावरे	अलहीया	३८
कभी प्रभु पदमें मन लाया	गजल	४६
कृपाल जिनसे कहुं मैं मनकी	"	५५
कुन खेले तोसुं होरीरे सङ्ग	होरी	५९
किन डारी पिचकारी	"	६८
कासे कहु नेम बिना बतिया	खेमटा	९९
कोटिक कष्ट हरो प्रभु मेरे	धन्याश्री	११८
करम भरम जग तिमिर	ध्रुपद	१३३
किस पर मान गुमान करिजें	पिलु	१३६
क्यो कर भक्ति करुं प्रभु	कल्याण	१४१
कोन विध नाथ निकट तेरे	छायानट	१४९
कोयल टहुक रही मधुवनमें	मल्हार	१५१
कांई हट मांड्योछे जी राज	सोरठ	१५८
कवन गत होगी आतमराम	बेहाग	१६४
काहे जीव डरे दुखसु	"	१६५
करे जारे जारे जारे जा	कानड़ा	२००
क्या छवि लागत प्यारी	देशी	२२९

ख

खेलन दे मोंहे होरीरे मेरी	होरी	८०

ग

गावो मङ्गलाचार सखीरी	काफि	२
गिरनारी नेमि सांवरियारे	ठुमरि	१०३
गुण अनन्त अपार प्रभु तेरे	बिभास	१२५
गिरुआरे गुण तुम तणा	देशी	१९०

घ

घरी धन आज की पही सरचा	रेखता	९८
घुङ्घरु बाजत रुन झुन न न न न	चलत	११३
घड़ी घड़ी पल पल छिन	गजल	१७७

च

चितमें धरो प्यारे, ये सीख	भैरवी	१४
चिन्तामणि पार्श्व प्रभु अरज	इंद्रसभा	५४
चिन्तामण चित ध्यावोरे	होरी	६२
चन्दा प्रभु तेरी महिमा	,,	८३
चिन्तामण स्वामी अरज हमारी	हिरआ	९०
चालो सजनी जिन वन्दन	ठुमरि	९४
चुन चुन फूल [illegible] है मालन	पुरवि	१०९
चिन चाहत सेवा चरनकी	सारङ्ग	१२९
चतुर निरञ्जन मिल गाईये	श्याम कल्याण	१[illegible]
[illegible] गाईये जिन	खम्माच	१३५

चालो सखि वन्दन जईये	रासधारी	१४६
चञ्चल दृग धृति ना धरतरि	कानड़ा	१५०
चहूं दिश बरसन लागी	सोरठ	१५८
चन्दा प्रभुजीक नाल मेरी	बेहाग	१६७
चिंतामण पाशजी थारे	देशी	१८९
चलो भवी वन्दन वीर धीर	सिंधु	२२८
चाहे तारो या न तारो सरना	गजल	२३३

छ

छकि छवि वदन निहार	गजल	४९
छवि चन्दा प्रभुजीकी को वरणे	चलत	१११
छोड़िये न सत और राखिये	ध्रुपद	१२१

ज

जगदीठा तु मेरा प्रभु प्यारा	भैरवी	६
जिनन्दा मोरी नईया लगा दो	"	२८
जागरे बटाउ अब भई भोर	भैरु	२४
जिन चरणे चित लांनो आली	नट	३३
जागरे सब रैन विहानी	खट	३३
जब तलक तनमे मेरे यह	गजल	३८
जपो मन्त्र नवकार और	"	२२७
जिन नामको समर ले क्या	"	५०

जों तुं चेतनमें खबरदार	पिलु	४१
जात्रानुं फल मोंह दीजेरे	"	२४१
जिनन्दकी मैं वारि छवि	खम्बाज	४८
जिनवर देख दृगन सुख	खम्बाज	४९
जीया जिनजीसें ध्यान	"	१४८
जावो जावो नेम पिया थांरी	होरी	६५
जाव जाव तुम सखी मेरी	"	६५
जो लुं अनुभव ज्ञानेरे घटमे	"	७५
जय बोलो ऋषभ जिनेश्वरकी	"	७९
जय बोलोरे पास जिनेश्वरकी	"	८४
जीयारे जाणे मोरी सफल	अः वेलावल	८९
जिनजी हमे कछु दीजै	चैतावर	९१
जिनके हृदे भगवन्त नहीं	ठुमरि	९५
जय जय राणपुरा महाराजा	"	२४१
जुग मन्दिरजीके पास	"	१०३
जगतपति पाश जिनराया	रेखता	९८
जिनराज आज मैं तेरे	"	९८
जिन दरशन सुखकारी जगतमें	चलत	११६
जिनन्द देखके आनन्द भयो	झिझोटी	१२३
जांउ जांउरे सामलिया	मल्हार	१५४
जिनराज जगतका नाथ	माढ	१६२

जिन आपकुं जोवा नही तन	वेहाग	१६८
जिनराज चरणकी मे शरण	"	१६९
जिनजीसु मोरी अरज लागी	जोगिया	२०३
जिनतत्व सार सहु जग	नाटक	२३५
जिन दरशन विन अँखिया	बहार	२४०
जगत परमेश्वर तुम खरा	देशी	१७८
जय जय श्रीजिनराज जग जन	"	१८९
जगपति नेमि जिनन्द प्रभु	"	१९८
जिया चतुर सुजान नवपदके	"	२२३
जय जय आरति शान्ति	आरति	२४२
जय जगदीश्वर अति अलवेशर	"	२४३
जय जय जिनपद सेवन कारक	"	२४५
जय जय ऋषभ पदांबुज	"	२४५

ज्ञ

ज्ञान जोवे मन होवे सुरपती	वेहाग	२०१

झ

झूलत सब जिनराय हिंडोला	वेहाग	१६६

ट

टुक दिलका चश्म खोल	गजल	४९
टुक सुनले नाथ अरज	होरी	७९

ड

डूगरा वताय दे पहारिया	घाटो	८८

त

तारिये मोहे शीतल स्वामी	भैरवी	१६
तुम विन दीनानाथ जगतमे	भैरु	२०
तीरथपति नेमनाथ जदुपति	”	२४
तें मेरा भ्रमरा में फुलवारी	रामकेली	३२
तो विया वखान एमन	गजल	३५
तुभ्यं नमस्ते स्वामी शान्ति	खम्बाज	५६
तेविसमा जिनराज जोड़े थांरे	होरी	७३
तेरी सुरतसे जिन मेरा	कहरवा	९२
तुम सुनियो वो दीनानाथ	ठुमरि	१०१
तुम हो दीनबंधु दयाल	केदारा	१२९
तार तार भवसिंधु पार	सोरठ	१५९
तेरे दरसके देखेसे मुझे	बेहाग	१६८
तुमें रखोरे यादव दोय	कालेंगड़ा	१७१
तारो मोहे अवतो शीतल	जाज	२२८
तारो तारो जिनन्दा मोहे	नाटक	१६०
तोरा कथन निभानारे	”	२३३
तुं अब तार विमलवा	”	२३५

तुमतो भले विराजोजी	चलत	१०९
तु मेरे मनमे तुं मेरे दिलमे	देशी	१८६
तीरथनी आशातना नवि	”	१९४

थ

थारे मुखड़ारी हुं वारी राज	सोरठ	१५७

द

दूहा		३५
दूहा	भैरवी	६
दूहा	इमन कल्याण	१३९
दूहा	मल्हार	१५१
दूहा	सोरठ	१५६
द्रगन भररी देखन दे मुख	भैरवी	७
दोनु दस्तोमे अङ्गिया रचावो	”	१४
दीनके नाथ दयाल सबनको	बारा भैरवी	११
देखो भवि वीर प्रभु पावापुर	भैरु	२१
देखोरे आदिश्वर स्वामी कैसा	”	२२
दिलसे हरदम मै तरी याद	इद्रसभा	३९
दुनियाके अन्दर आयके तने	गजल	३८
दीले नादानकुं समझाया चायगे	”	४५
दिवाना तरे दरमका यार	”	४७

दिलदार नेम प्यारेको समझाई	गजल	५०
दिलदा महरम यार मेरा मीत	"	५१
देखत छवि सुखकारी आरि	होरी	७७
दरशन विना तरस रही	"	७८
देखो परव पजूसण आया सव	डोमनी	९३
देखो एक अपूर्व खेला, आपहि	कदारा	१२८
देखो देखोरे या गीरकी	सारङ्ग	१३०
देखो माई उमड़ घुमड़ी दोऊ	मल्हार	१५२
देख्या मैं दरस सरस सुखकारा	"	१५३
दरशन विन जीया तरसतरी	सोरठ	१५६
दरशन प्राण जीवन मोहे दीजे	वेहाग	१६४
दरशन दुरगत टाली जिनन्द	देशी	१८५
दिलहर ना जावोरे मेरा ओ	नाटक	२३७
देखी जिनराज आज अङ्गीया	ठुमरी	२४०
दानी दिमू ताना दिरना दानी	तिलाना	२०१

ध

ध्यानमें जिनके सदा लय	गजल	४७
धर्म्म विना नहीं कोई उमर	वेहाग	१६४

न

नेम जिनन्दजीसे आंखड़ली	भैरवी	७

नवरिया मोरा कौन उतारे	भैरवी	८
नाथ भये वैरागी हमारे	"	१६
नेक बातोंके तई दिल विच	गजल	३७
नेमि जिन तुमरी दरश लागै	टुमरि	४३
निठर नेम पीया गये गिरनारीरे	"	१४८
नई रे नार नव रङ्ग बनायो	होरी	६१
नेम निरञ्जन ध्यावोरे बनमे	"	६३
नेमनाथ वर पायोरे सजनी	"	६:
नेम पिया विन टरण अमे	"	६८
निसदिन जोउ थारी बाटडी	"	७३
निरमल होय भजले प्रभु	बहार	९०
नाथ कैसे जवुको मेरु कम्पायो	चलत	११०
नेम योगीयाकु किन विलमायारे	धन्याश्री	११८
नेम तोरी चाह मोकु निशदिन	झिझोटी	१२०
नेम देखन मुझे प्रेम जगतपती	विभास	१२५
नेम ब्रह्म सुजान अविचल	बरसाति	१३८
नयना दरशन के आविन	कल्याण	१४२
नट होई खेलो देखु चातुरी	"	१४४
नेमि जिन सामरा प्रभु प्यारो	सोरठ	१५८
नेमजीकु पूज आई मै दिलदा	बेहाग	१६३
नेमि जिनन्द जगो मो प्रभु	,	१६७

पावापूर महावीर विराजै	खेमटा	१००
प्रभुजी सदा सुख दीजै	चैतागर	९१
प्रभुकु भजलै मनुवा तेरा	डोमनी	९२
पारश प्रभु चिन्तामणि मेरे	भरथरी	९४
पारश प्रभुजीके पास मेरी	ठुमरि	१०२
पुर भदिल वधाई भई नन्दा	कजली	१०४
प्रभु तेरी महिमा केसे वरणी	पुरवि	१०८
प्रभु तेरी सूरत दिरग रही	झिझांटी	११९
प्रभु पदकी सेवा कियो न	पिलु	१२६
पार ब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम	ध्रुपद	१३१
प्रभुजी मोरा वहु गुण भरीया	सोरठ	१५७
पीया पीया पीया बोल मत	वेहाग	१६३
प्यारे मेरे प्रभुजीपे वारी वारी	नाटक	२०५
पञ्चम जिन जस आपो दयालु	„	२०५
प्रह उठी गौतम प्रणमीजे	वधावा	२२०

फ

फागुण खेलो भाई, तन मन	होरी	६६
फागुणके दिन चार रहे हे	„	७७
फटत भरम कट जात है	ध्रुपद	१३२
फलोधी पासरे जिन पूजो	देशी	१९३

व

वलिहारी मोरा देवी नन्दकी	भैरवी	६
वयना पिहरया गये नयना	„	९
वस्तु गते वस्तुनो लक्षण	गारा भैरवी	११
वसोजी मेरे नयनमे महाराज	भैरवी	११
वन्दो जिनदेव सदा चरण	भैरुं	२५
वीर प्रभु त्रिभुवन उपगारी	„	२६
वाजत रङ्ग वधाई नगरमें	टोरी	३१
वल जांउ तेरे नामकी जाते	मालकोस	३४
विषयनको पर सङ्ग चेतन	सिन्धु काफि	६०
वदन परि वरी जांउ नाभिके	दादरा	९७
वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें मेरी	खेमटा	९९
वेरी वेरी निरखोगे सजनी	„	१०१
वन वन आई सुवर नर नार	चलत	११३
वेर वेर नहीं आवेरे अवसर	धन्याश्री	११७
वेहारी आज भई देखो नेमजी	खिझोटी	११९
वारि जांउरे केशरीया सांवरा	„	१२२
वेरी वेरी अरज करी हम तुमसे	वरसाती	१३६
वीर सुजश मन भायो	मल्हार	१५४
विषय वासना छुटत न मनसे	प्रभाति	२०४

वीर जिन सिद्ध थया मह्य	देशी	२०४
वनारसीमे वन्दन किया सोले	लावणी	२११
वीर जिनन्दके समवसरणमे	"	२१७
वधे है अपनी भलमे इयारो	"	२१८
वावरोरे आज मनावो म्हारो	परज	२२१

भ

भर लावोरे कटोरा केशरका	भैरवी	८
भविक नर सेवो शान्ति	"	१२
भोर भयो भोर भयो प्राणी	भैरु	१७
भेटे श्रीआदिनाथ भले दिन	"	२६
भाव धरि धन्य दिन आज	फडूसा	१७
भगवत भजन करनकी वेला	अलहीया	२९
भ्रमर ज्यु फूलमे मोरी लगन	झिझोटी	१२२
भजले श्रीभगवान और सब	वेहाग	१६७
भजन विन नाहि गरज सरे	कालेगडा	१७३
भवी धरो जिन ध्यान कीर्त्तवाग	देशी	२०२
भवी भगति धरि नवपद	"	२२५

म

मङ्गल मूरत पाशकी या	कालेगडा	१
मै तो रही छु मनाय मनाय	"	१७२

मैं तरी वलि जांउ वारी	कालिंगड़ा	१७२
मिल जाज्योरे साहिव ध्याननमें	"	१७३
मन रम रह्यो मेरा रमा करमें	"	१७५
म्हे तो नवपदका गुण गास्यांजी	"	२२३
मङ्गल राजे गिरनार	चैतावर	२
मनुआ जिनन्द गुण गायरे	"	२१९
मङ्गलरे गावत सकल व्रजनार	भैरवी	५
मेरी लागी लगन नेम प्यारेसे	"	७
म्हारा सुज्ञने कव मिलस्ये	"	९
मैं तो दासी तुमारी विना	"	१०
मेरे जाई जुई गुलावरी	"	१२
मेरो मन लागी रह्यो महावीर	"	१५
मुजरा साहिव मुजरा	भैरुं	१९
मेरे इतनो चाहिये नित	"	२१
मेरे घर आईलो नेम जिनन्दा	मालकोस	३५
मोहे नीको लागे सूरत तेहारी	गजल	३७
मधुवनमे जाय मची होरी	होरी	५९
मेरे पीयाकुं कोई मनावोरे	"	६१
मत निरखो नारी पराई	"	६४
मन मोहन गज गतकी गामनी	"	६४
मेरो परम सनेही पास कुमर	"	७०

मैने देखी अनोखी होरीरे	होरी	७१
मत कर मान गुमान योवन	"	७४
मेरे काहेको लगावो तनमे	"	७६
मे तो ममताकु दूर भगाई	"	७८
मधुवनमे जाय मची होरी	"	८५
मेरे आदालत प्रभुजी कीजिये	हिरआ	८६
मेरो मन वस कर लीनो	घाटो	८९
मे तो जोती फिरु जिनरायारे	कहरवा	९२
मेरे साहव जिनन्दा दिल	"	२३४
मेरे मनको वेरागी कर गया	हिरामन	९६
मुझे है चाव दरशनका	रेखता	९७
मानो मानो वेदरदी सामरिया	खेमटा	९९
म्हारा केशरीया वाल्हाने	साहाना	१०५
मनरो निपट ध्यान गुरुजी	जेतसरी	१०६
माई तेरे आगन वजत वधाई	धन्याश्री	११७
मेरे मनके मनोरथ पूरण	श्रीराग	१३२
माई मेरो मन तेरो नन्द	कल्याण	१३९
मोहे केसे तारोगे दीन दयाल	"	१४०
मोतिनकी माला प्रभु गल सोहे	"	१४२
मे तो गिरनार गढ भेटन जाउगी	"	१४३
मिल जारे चेतन ध्यानमे	सम्याज	१४८

मोरी द्रगनवामें तोरी छवि	कानड़ा	१५०
मोरवा पपैया बोले पिउ पिउ	मल्हार	१५२
म्हानुं प्यारा लागो छो जी	माढ़	१६०
म्हारारे साहेब नीरे सेवामें	”	१६१
म्हारी राजुल राणी विनवे	”	१६२
मनुवा भजले श्रीभगवान	इमन	१७०
मैं वलिहारी जाँउरे सुरती	वेहाग	१७०
मन मधुकर मोही रह्यो ऋषभ	देशी	१८१
मन समरिये चौविश जिनको	”	१८२
मनड़ो अष्टापद मोह्यो माहरो	”	१८८
मैं अरज करुं सुनो महाराज	नाटक	४२
मेरे रङ्गीला चङ्गीला प्रभु	”	२३६
मोही रह्यु छुं गुणगानमां	”	२३९
मोरी लागी लगनवा हो केशरीया	”	२४१
मेरे तो दिलका महरम तुंही	लावणी	२१२

य

योगीश्वर तेरी गती क्या कोई	भैरुं	२२
या विध धूम मचाउं जपे मन	होरी	७१

र

राखो नाथ बड़ाइ हमारी	भैरवी	४

रात गई अब प्रात होन भयो	भैरवी	८
राम कहो रहिमान कहो कोउ	रामकेली	३२
राज केशरीया ते तो मन	ठुमरि	५२
रथ चढि यदुनन्दन आवत है	,,	९५
रङ्ग ल्यायो बनाय सखी	होरी	७५
रे जीव जिनधर्म कीजिये	भरथरी	९३
राणी त्रिशलाने देखा भला	कजली	१०५
राखुरे हमारे घटमे जिनराज	चलत	११४
रूप बन्यो अति नीको प्रभु	गौरी	१४७
रङ्ग रेवत देख सुमती फूली	कालेगड़ा	१७४

ल

लेना होय सो ले ले बाबा, फिर	भैरु	१८
लोक चवदे के पार किनारे परण	,,	१९
लागी लगन कहो कैसे छुटै	,,	२०
लगा रहताहै मन प्रभुके चरणमे	गजल	४०
लागी रही चन्दा प्रभुजीमें	खेमटा	१००
लगन लगी रहे मेरे जिनराज	ध्रुपद	१३३
लाल तेरी नयनोकी गति न्यारी	होरी	२०२

श

शान्ति वदन कज देख नयन	ठुमरि	४८
श्याम सलूना चले रथ फेरीरे	गजल	५२

शान्तिनाथ मुख देखनसैं मोरी	दादरा	१०१
शिव सुख दाई जगपतिजी	नेहालदे	१०३
शिवपुर जाना मोकुं प्रभुजी	कजली	१०४
शान्ति मूरत श्रीसुपाश प्रभुकी	कामोद	१०७
शिखरजीको आज मैं दरशन	चलत	११२
शितल जिनवर साहिबा मोरा	झिझोटी	१२२
शरण गही महाराज अवतो	पिलु	१२८
शुभ घड़ी शुभ दिन दिन	ध्रुपद	१३३
श्याम हमारारे समझावो	मल्हार	१५३
शिवपदको दातार बता दे	ठुमरि	१७७
शीतल जिनवर तार हो	खम्बाज	२०३
शान्ति जिनेश चरण कज	कानड़ा	२२१
शरणमें आयो आयो वीर	दादरा	२३६

स

सखीरी म्हारो नेम गयो	भैरवी	१०
समझ परी जग माया सब	”	१४
सदा करो चित ध्यान नवपद	”	२२४
सांवरिया साहिबका मिल	भैरुं	१७
साहिब करुणा निधान सुन	”	२२
समझ मन जग धोखेका टाटी	अलहीया	२९
सुहागन जागी अनुभव प्रीत	बेलावल	३०

सावरी सकूणां सखि मेर	बंगाल	१७७
सुरत लागत प्यारी प्रभुजीकी	टोरी	३१
सिखर समेत वसे हो विमल	अड़ाना	३३
सिवाय जिनपदकू जगमें	गजल	३७
ससार नाम उस्का जो मारा	"	४१
साहिब तेरी बंदगीमें भुलता	"	४४
सुमति जिनन्दा प्रभु आज	थियेटर	४२
सुरत ऐसी सावरी मैं जांउ	ठुमरि	४३
सुमति जिन मुजरो हमारो	"	४३
सुनिये सवकि कहिये न कछु	"	९६
सहियो देखो वानी अमृत	खम्माज	५२
सोहे सुरण गाती सुहाती	"	५६
सावरि सुरत मन मोह लियो	होरी	५८
सुमति सदा सुख दाई हो	"	६१
सत गुरुने मोहे भङ्ग पिलाई	"	६२
सांवरो सुख दाई जाकी छवि	"	६३
सुमति सखी सङ्ग लेके आई	"	७२
साहिब आदि जिनन्द चन्द	"	७३
सम्भव जिनचन्दा मेटे भवफन्दा	"	८१
सिद्धाचल भेटो भाई एह	"	८३
सांवरीया प्रभुजी लख मोहे	कहरवा	९१

सांवलिया जैसे बने वैसे तारो	चलत	११२
सब जीवन सुख देन सिद्धारथ	"	११५
सांवरी आंर मोरा मन्दिर आव	धन्याश्री	११६
सहस फणा मोरा साहिबा	झिंझोटी	११९
सूरत बिसराई भला नेमि प्यारेने	"	१२१
समझ जिन काहुसे न करो प्रीत.	"	१२२
सुनो मेरी इतनी अरज	"	१२३
सुनोजी त्रिलोकनाथ सामने	ध्रुपद	१३१
सत सुरण सुर साधत गुनीजन	कव्वाली	१३४
स र ग म	"	१३५
सुमति जिनन्द जुहारीये	बरसाति	१३७
सुनिजर कीजै दीन दयाल	कल्याण	१४०
सांझ समे जिन वन्दो भवि	"	१४१
समझि समझि जीया ज्ञान	कल्याण	१४२
सो मेरो मन लगा जिनेश्वरसे	"	१४५
सो योगी चित लाडरे वाला	वेहाग	१५५
सखि मोंह नीको लागे जिनन्द	"	१६५
सो प्रभु मेरे वीर जिनन्द जयो	"	१६९
सुमति जिनन्द स्वामी जपो	जाज	१७१
सहीयाए नेमिश्वर वनड़ेने	चाल जीले	१७८
सुण सुण सखियां हमारी	लावणी	२०६

सखि जिन मुख दरशन बिन	लावणी	२०८
सुन्दर सोहे मरुधर माही	„	२०९
सजन तेरे दिलकु समझाना	„	२१२
सब परव माहि परब अलबेला	„	२१६
सिद्धाचल गिर भेट्यारे धन भाग	देशी	१८०
सकल मङ्गल कला-गुण निलो	„	१८३
सखीरे गौड़ी पाशका दरशन	„	१८४
सखीरि जागति जोत केशरीयारे	„	१९१
सुरमणी सम सहु मन्त्रमां	„	२२१
सो अब हम नवपद नेह	„	२२४
सिद्ध चक्र पद वन्दोरे भवियण	„	२२६
सुमति जिनेश्वर तारो भवाब्धिथी	„	२३२

ह

हो देवि सवास मे तुझे बोलुं	भैरवी	३४
है मुनासिब अपने घर बेलाग	गजल	३९
हजुर तुमसे कहुं मै दिलकी	„	४४
हमसे छल बल करके नेम	„	५१
हे जि माई नाचत शक्र शक्री	तिलाना	५५
होरी आई सजन सुखदाई	होरी	५९
हारे तु तो प्रभु भज विलग्न	„	६०

॥ श्री ॥

स्तवनावली ।

॥ मङ्गल ॥

रागिणी कालेगरा

मङ्गल मूरत पाशकी या ॥ मङ्ग० ॥ दारुण पङ्क सकल दुखहारी, दायकहै सुखरासकी या ॥ मङ्ग०१ ॥ सेवत ईन्द्र चन्द्र रवी सुरगुरु, चाहत है नित जासकी या ॥ मङ्ग०२ ॥ निरखत नैन सफल भई आस्या, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

रागिणी बाहार

आज महोच्छव रंग रलीरी, जायो सुत त्रिसलादेराणी, कामित पूरण काम कलिरी ॥ आ० ॥ सझि सिनगार सकल सुर वनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥ आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतीयन चोक मीलिरी ॥ आ० १ ॥ ईन्द्र हुकुम करी धनद पठायो सब बसुधा धन धान्य भरिरि

कनक रत्नमणि पंच बरणके, कुसुम बिखेरत गलीय गलीरी ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सूर कुमारीरी ॥ बाजत गहर शब्द कर दुन्धभी, विणा वेणु मृदङ्ग भलीरी ॥ आ० ३ ॥ जय जय कार भयो तिहुं जगमे, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥ हरखचंद जनमें प्रभु मेरे, मनकी आस्या सफल फलिरी ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

चैतावरकी चाल

मङ्गल राजे गिरनार, नेम पद मङ्गल है ॥ देवा० ॥ मङ्गल राजमती पद पङ्कज, मंगल रहै नेमी राय ॥ ने० १ ॥ मंगल धन धन्या मुनिनायक, सब तपसि बिच सार ॥ ने० २ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक मंगल सब अनगार ॥ ने० ३ ॥ जयजय२ खेम कुशल गुरू, आनन्द घन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

रागिणी काफि

गावो मङ्गलाचार, सखीरी वीर प्रभुको जन्म भयो है । अवधी ज्ञानकर ईन्द्र हूकमदीयो, करहु महोच्छव सार ॥ स० १ ॥ मेरुशीखर पर देव सकल मिल, करत सुभक्ति अपार ॥ स० २ ॥ बसु विधि पूज रचत प्रभुजीकि, सफल करत अवतार ॥ स० ३ ॥ जय जय शब्द करत सूर नर वर, जय जय जगदाधार ॥ स० ४ ॥ अजय अमर पद दायक प्रभुजी, सेवो शिव सुखकार ॥ स० ५ ॥ इति ॥

रागिणी ईमन कल्यान

कीजे मङ्गलाचार, आज घर नाथ पधारे ॥ की० ॥
पहले मङ्गल जीनजीकी पूजा घस केशर घन सार ॥ आ० १ ॥
दुजे मङ्गल धुप जो खेऊं और चढाऊं पुष्प हार ॥ आ० २ ॥
तिजे मङ्गल घण्टा वजाउं, झांझनकी झङ्कार ॥ आ० ३ ॥
चोथे मङ्गल आरती ऊतारुं, नांचुं थेई थेई तार ॥ आ० ४ ॥
रुप चन्द कहे कहां लग वरणु, शिव लहिये भव पार ॥ आ० की० ५ ॥ इति ॥

रागिणी सोहिनी-ताल यत्

आज की रेण सोहाई, दरस मोहनकी में पाई ॥ आ० ॥
पद पङ्कज तेरो मन मधुकर मेरो, सदा रहत लपटाई ॥ द० १ ॥
नवपद ध्यान सदा मे चाहु, अवर नही दील आई ॥ द० २ ॥
अजय अमर पद चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द० ३ ॥ इति ॥

रागिणी काफी

पोढो पोढोजी ऋषभ पीयारे, निद्रा बस नयन तिहारे ॥ पोढो० ॥ प्रभु आलस अतो ललसानी, पुछे मरु देव्या माई पोढो० १ ॥ प्रभु सुनन्द सुमङ्गला राणी, जिनरुच रुच सेज सवारी ॥ पोढो० २ ॥ प्रभु नवल साजन्य सनेही, तुतां मन वछित फल देही ॥ पोढो० ३ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

राखो नाथ बड़ाई, हमारी ॥ रा० ॥ सेवा चोर सदा मोह जानो, दरसन देवोने गुसांई हमारे ॥ रा० १ ॥ अनाथनके नाथ भगत जिन वच्छल, सुन्दर वदन सुहाई हमारे ॥ रा०२॥ भान चन्द प्रभु जल थल अम्बर, जहाँ देखो जहाँ सहाई हमारे ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ रागिणी कालिंगरा ॥

आवो गावो बधाई, मोरी साथनीयां ॥ आवो० ॥ नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायों सुखदाईरी ॥ आवो० १ ॥ जन्म कल्याणक करीये जाको, मुनि सुव्रत जिन राईरी ॥ आवो० २ ॥ तीन लोकके हितकर प्रगट्यो, नाना ऋषि हरषाईरी ॥ आवो० ३ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी—ताल धिमे तेताला

आजतो बधाई राजा नाभिके दुवाररे ॥ आ० ॥ मरु देवीजीके वेटो जायो ऋषभ कुमाररे ॥ आ० १ ॥ अयोध्यामे उच्छव बड़े मुख बोल जयजयकाररे ॥ घनन २ घण्टा बाजै, देव करे थैथै काररे ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी सब मङ्गल गावै लावै मोती मालरे । चन्दन चरची पाये लागुं प्रभु जीवो चिरकालरे । नाभि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित धाररे ॥ आ० ४ ॥ हाथी देवे साथि देवे रथ देवे तुखाररे । हीर

चौर पितम्बर देवे, देव सब सिनगारेरे ॥ आ० ५ ॥ तिन लोक कर दिनकर प्रगटे, घर घर मङ्गलचाररे। केवल कमला रूप निरञ्जन, आदिश्वर जिनराजरे॥ आ० ६ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी–ताल धिमे तेताला

मङ्गलरे गावत सकल ब्रजनार ॥ टेर ॥ मोतीयन थाल भरी जाय बधावोरे, गावत गीत रसाल ॥ मं० १ ॥ केशर चन्दन डाबन भरीयारे, कर लीया कंचन थाल ॥ मं० २ ॥ चद कुशलकी यही अरज है रे, भवोदधि पार उतार ॥ मं० ३ ॥ इति ।

चैतावरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां ॥ आ० ॥ पारस प्रभुजी को जनम भयो है, हरष भई देवा हरष भई वामा राणी ॥ देआ० १ ॥ अश्वसेन घर बटत बधाई; घर२ अरी देवा घर२ मङ्गल मांनी ॥ दे०आ० २ ॥ दुआर२ सब तोरण थंभ है, चोमे सुख सेज संठानी ॥ दे० आ० ३ ॥ रतन थाल मुगताफल भरके, चोक पुरे इन्द्रानी ॥ दे० आ० ४ ॥ सुमन अधमको निज पद दीजे, सुध समकित सहनानी ॥ देवा० आ० ५ ॥ इति



॥ भैरवीका दूहा ॥

प्रभुको नाम अमोल है, जामे लगतन मोल ।
नफा बहोत तोटा नहीं, भर भरके मनतोल ॥
ए जीव भूला फीरत है, ममताके कल्लोल ।
अश्वसेनके लाडले, श्रीपारस मुख बोल ॥

रागिणी भैरवी—ताल यत्

बलिहारी मोरा देवी नन्दकी, भजनाभिके नन्दन अवध वेहारी ॥ बलि० १ ॥ तिन लोक तिन पावन कीन्ही, आनन्द लहर सुनन्दकी ॥ बलि० २ ॥ कोशलपुर निकट सरयू तट पूरण कलासो चन्दकी ॥ बलि०३ ॥ दास तुमारो करत विनाति जयजय ऋषभ जिनन्दकी ॥ बलि० ४ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताला

जगदीठा तु मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियांदी भानुं अजब बनी है, सुन्दर श्याम दीदारावे ॥ जग० १ ॥ घड़ि २ पल २ सुमरण तेरो, कबहुं न दीलसें न्यारावे ॥ जग० २ ॥ जो तुझ ध्याया तिन सुख पाया, दरशन ज्ञान आधारावे ॥ जग० ३ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यातनींद मैं खोईरे । दर्शन कर परशन मन मेरे, आनन्द चित अब होइरे ॥ आज०

१ ॥ तुम विन देव अवर नही दुजो, देख्या त्रिभुवन जोइरे ॥ आज० २ ॥ दास तुमारो करत विनती, तुम विन मेरो न कोइरे ॥ आज० ३ ॥ इति ॥

पुनः-ताल कवाली

नेम जिनन्द जीसे आसडली; मोरी रैंन दिवस नीत लग रहीरे ॥ ने०-१ ॥ पहले आप इन दोस्ती कीन्ही, ले पीछे छिटकाय दईरे ॥ ने० २ ॥ पशुवन पर प्रभु दया करीनै, शिव रमणीने वर लईरे ॥ ने० ३ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्न विमल पद पाय लई रे ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

पुनः

द्रगन भरी देखन दे मुख चन्द, मोरा देवीमाता भीधन धन, जायोछे ऋषभ जिनन्द ॥ द्र० १ ॥ यार्कु पजत अती सुख उपजत, सब जीवन सुख कंद ॥ द्र० २ ॥ याते हीतकर अरज करत है, चीरजी रहो तेरानंद ॥ द्र० ३ ॥ इति

पुनः

मेरी लागी लगन, नेम प्यारेसे ॥ मे० ॥ सुनरी सखी एक बात हमारी, कहीयो कन्त हमारेसे ॥ मे० १ ॥ जोगन होकर सङ्ग चलुङ्गी, प्रीत तजुं जग सारेसे ॥ मे० २ ॥ नाम लीयासें आनन्द उपजे, कीरत हो ठर भारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति

पुनः

रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोवे जिया जागरे रा० ॥ दोय घड़ी तड़को अब रहियो, ऊठ धरममें लागरे ॥ रा० १ ॥ जिन वानी ऊर वीच धारले, और भरम सब त्यागरे ॥ रा० २ ॥ आनन्द सुगुरु बचन हित मानो, ए सुधो शिव मागरे ॥ रा० ४ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द । दरसन तेरो है सुखकन्द ॥ मे० १ ॥ तुम दरसन विन कलन पड़त है छिन मै तो दीन हीन पकड्यो सरण ॥ मे०२ ॥ दास तिहारो अरज करत है जिनजी अबतो छुड़ावो भवफन्द ॥ मे०३ ॥

पुनः

नवरिया मोरा कोन उतारे वेडा पार । इह संसार समुद्र गंभीरा किसविध उतरुंगा पार ॥ न० १ ॥ राग द्वेष दोनुं नदिया वहत है । भमर पडत गति च्यार ॥ न० २॥ ऋषभ दासको दरसन चाहिये । ए वीनती अवधार ॥ न० ३

रागिणी भैरवी—ताल-दादरा

भरलावोरे कटोरा केशरका, मैं नव अंग पूजुं परमेश्वरका ॥ भ० ॥ मरुदेवी कुखें जन्म लियो है । कुमर नाभि रत्नेसरका ॥ भ० १ ॥ केशर चन्दन पुष्प चढाउं ॥ सुख

निरखुं ऋपभेसरका ॥भ०२॥ रत्न जडितकी आरती उतारुं । नृत्य करुं परमेश्वरका ॥भ०३॥ मोती चंदकी अरज वीनती चरणन छोडु परमेश्वरका ॥ भ० ४ ॥ इति

पुनः

म्हारो मुझने कब मिलस्ये मन मेलू ॥ मन मेलू विन केलिन कलिए । वालैस्वल कोई वेलुं ॥म्हा०१॥ आप मिला थी अतर राये ॥ सुमनुप ते नहि ले लु ॥म्हा०२॥ आनन्द घन प्रभुमन मिलियाविन ॥ कौन वि विलगेचेलूं ॥म्हा०३॥

भैरवी–ताल दादरा

इन्द्राणी प्रभुके वेगी आंज्यो कजरा । मे तो नयन कगि कर लेही, तु करले इयाकि जाप जीरा ॥इं० १॥ मे पहराति भुज और भुजवन्द, तु पहरा दे वाली कपडा ॥ इं० २॥ में तो मुगट धरुं सीर उपर तुं पहरा दे फुलोंके गजरा ॥इं०३॥ नयनानन्द सुर इन्द्र भगति लख, भविजन सम्यक दृष्टि खरा ॥ इं० ४ ॥

ताल दादरा

वयना पीहर वा गये नयना वदल । नयना वदल गये वनकु निकल गये, वृत लीना सुधर ॥ नेमी ० १ ॥ चौआरनकुं आये, मेरे दुला कहाए । देके दरस गये तोरण से फिर ॥ वय०१॥ मोडारथ परमारथ के कारण कंकणको तोड लीया संजमको धर ॥ ने०२ ॥ पशु पुकारे प्रभुजी

नीहारे। दुखिया विचार छोड़े बन्धन कतर ॥ वयना ० ३॥ हेलो प्यारी छीमा हमारि। मुझे वेगी वता दो गिरनारकी डगर ॥ने०४॥ करूंगी नयन सुखकारी तपस्या में तो लेंगी प्रभुके पद पंकज पकड़ ॥ व० ५ ॥

पुनः

सखीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार। तारि है राजुलनार सखिरी०॥ तोरनसे रथ पीछो घेरयो, पशुवांरी सुनिछे पुकार सखिरी० १॥ सहसा वनकी कुंज गलिनमें, पंच महाव्रतधार सखिरी०२ ॥ राजुल टभी अर्ज करत है, आवा गमन निवार सखिरी० ६॥ चंद कपुरा कहे कर जोड़ी, चरण सरण आधार सखिरी०४ ॥ इति

पुनः

मेंतो दासी तुमारी विना दामाकि। निजरमें जो ठहरूं किसी कामकि ॥१॥ और देवसे काम नही मेरे। दिलमें वसि है सूरत स्यामकी ॥२ मे० ॥ घड़ि घड़ि पल पल छिन छिन निस दिन। रटना लगी है तेरे नामकी ॥३ मे० ॥ राखूंगी आखुंमें सुरमें से बढ़के, जो पांउगी रजमें तेरे धामकी ४मे। तप जप संजममें चित लावो जासे मिले राज शिवधामकी जैन धरम मानव भव पाके। करले भलाई आतमरामकी ६ मे० ॥ दासी गुलावकी एहि अरज है। सार करो मुझ नाकामकी ॥ मे० ७ ॥ इति

रागिणी गारा भैरवी

वस्तुगतेवस्तुनोलक्षण, गुरुगम विनानहीपावेरे। गुरुगमविन नहीपावेकोऊ, भटकर भरमावेरे॥ भवनआरिशे श्वानकुकडा निजप्रतिविंवनिहालेरे॥ इतररूपमनमाहिविचारी, महाशुध विस्तारेरे॥ व० १॥ निरमलफिटक शिलाअंतरगत, करिवर लक्षपर छाहिरे॥ दशनलुराय अधिक दुखपावे, द्वेषधरत दिलमांहिरे॥ व०२॥ सश लेजाय सिंघकुं पकडे। कुवोदिठ दिखाईरे निरख हरितेजांणदुसरो। पड्योझंप तिहांखाईरे॥व०३ निजछायावेतालभरमधर॥ डरतवाल चित माहिरे॥ रज्जु सर्प करि कोउ मानत॥ ज्यौंल्यौंसमझत नाहिरे॥ व०४॥ नलनी भ्रममर्कट मुठीजिम॥ भ्रमवशअतिदुखपावेरे॥ चिदानद चेतनगुरुगमविना, मृग त्रसाथरोधावेरे॥५॥ इति

रागिणी भैरवी–ताल मध्यमान

वसोजी मेरे नेननमे महाराज, सामलि सूरत मोहनि मूरत तारण तरण लिहाज॥ व०॥ वानी सुधारस दरस ऊपन्यो करता अगम अपार॥व०॥ चेन विजय करजोडी वीनवे, चरण कमल सिरताज॥ व०॥ इति

रागिणी गारा भैरवी

दीनके नाथ दयाल सवन को। तें काहेकु कृपा विसारीरे

दीण० ॥ में हुं दीन अनाथ जगत मै तूं साहिब उपकारीरे दीण० । पण अपनेकी रीत निवाहिये । दो संपद सुखकारीरे दी ० ॥ दास चुनी सेवककी अरजी । सुनिये प्रभु जसधारी रे ॥ दी० ॥ इति

पुनः

प्रभु मोसे कवन वहाने बोलो, रैंन दिहा आलुं ध्यान तु सांडा अंतर दी पट खोलो ॥ प्र० ॥ हाल असांडा तुझनुं मालुम जो स्वामि टुक जोलो ॥प्र०। आस पुरावो दासको स्वामी झटपट सङ्ग मिलालो, दास चुनी पायो रत्न अमोलक बेर२ क्यु तोलो ॥प्र०॥ इति

रागिणी भैरवी–ताल तेताला

भविकनरसेवोशांतिजिनन्द ॥ कञ्चन वरन मनोहरसुरती दीपत तेजादिनन्द । १भ० ॥ पञ्चम चक्रधर सोलमजिनवर विससेननृपकुलचंद ॥ २भ० ॥ भवदुखभञ्जनजनमनरञ्जन । लञ्छन मृगसुखकन्द ॥ ३भ० ॥ गुनविलासपदपङ्कजभेटत ॥ पायोपरमानंद ॥ ४भ० ॥ इति

रागिणी भैरवीमे होली–ताल कवाली

मेरे जाई जुई गुलावरी ॥ आज प्रभु पूजनको हरख भयो ॥ एटेक ॥ केतकीचंपकमरुउ मोगरी ॥ फूलकी पगर, भरावरी ॥ आज प्रभु० ॥ १ ॥ मुकट कुंडल

गिरछत्रविराजे ॥ आंगीशोहे जडावरे ॥ आज०२ ॥ सत सवे मिली भावना भावो ॥ मादलताल मिलावरी ॥ आज ३ ॥ अनन्तनाथ जीके, गुणगांउ ॥ लालगुलाल उडावरी । आज०४ करजोरी प्रभुआगे अरजी ॥ भवदुग्वसे छोडावरी ॥ आ०५ आठोपोहोरहे नांम तुम्हारी ॥ ध्यानधरु शुभभावरी ॥आ०६ आनन्द हरप वधाई उनको ॥ विनय सहित गुणगावरी ॥ आज० ७ ॥ इति

रागिणी सिन्धभैरवी

कुणवनवीरसमोसरया, मैतोसुणिहे श्रवनधुनि आजरी कुण ॥ जंगम तीरथ सुरतरु जगनायक श्रीजिनराजरी ॥ १ कुण० ॥ गोतमगणधर सारिपा साथै एकादश गणधाररी ॥ मुनिचऊदसहससाथेभला गुरुतारणतरणजिहाजरी ॥ २कुण० शमवसरण रचनारची मिलचउसटसुरराजरी सूर नर विद्याधर मिली मिलचउविहसघ समाजरी ॥ ३कुण० ॥ घणांदी वशनी भावना म्हारी सफल फली सवआजरी । चलो सखी विलँवनकीजीपे वंदीजेश्रीजिनराजरी ॥ ४ कुण०। भावभगति दिलमे घणी सखि साथै सामग्रीसाजरी ॥ हरखचद रांणी चेलना सारयानिज आतमकाजरी ॥ ५ कुण० ॥ इति

रागिणी सिन्धु

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आनन्दकारा

१ ॥ नाभि राय मारुदेविके नन्दा। तुम तारण संसारा ॥ हो ते० ॥ तुमरे गुणको पार न पावे भजन करे जगसारा ॥ हो ते०३ ॥ वरस दीवसने पारणे स्वामी पीयोरस अपारा हो ते०४ ॥ ईन्द्रचन्द्रनी आस्या पुरो । मेटो कष्ट हमारा, हो ते०५ ॥ इति

रागिणी भैरवी

समझ परी मोहे समझ परी जगमाया सब झुंठी ज०॥ १ ॥ आजकाल तुं कहा करै मूरख नांहि भरोसा दिल येक घरी ज०॥ २ ॥ गाफिल छिन भर नांहि रहो तुम, सिर पर घुंमें तेरे काल अरी ज० ॥ ३ ॥ चिदानंद ये वात हमारी प्यारे जाणो हो नित्त दिल मांहि खरी ज० ॥ ४ ॥ इति

पुनः

चितमें धरो प्यारे चितमें धरो ये सीख हमारी अब चितमें धरो, थोडासा जीवनां काज अरेनर काहे कुं छलपर पंच करो ये० ॥ १ ॥ कूड कपट पर द्रोह करण तुम अरे मन पर भव थाह भरो ए० ॥ २ ॥ चिदानंद जो ए नहीं मानौ तो जनम मरन भव दुखमें परो ए० ॥ ३ ॥ इति

ताल दादरा

दोनुं दसतो में अगीया रचावो सखी, नयना हमारी प्रभुसेलगी ॥ दोनु० ॥ जालीकी अंगीया प्रभुकी रचावो ॥

मसतग मुगट पहनावो सखी ॥ नय० १ ॥ चलो सखी बागोमें जइये ॥ चुनर कलियां चढावो सखी ॥ नय० २ ॥ चलो सखीजिननंदन जइयें ॥ नित्य करो सब मिलके सखी नय० ३ ॥ सांवरी मूरत खूब रची है, देखतही मन नीहारो सखी ॥ नय० ४ ॥ सवत उनीसे चऊटेकी साल माघ वदि तीथ नवमी सखी ॥ नय० ॥ सुन्दर विजयपर्जाकी पदिअरज है ॥ नित उठ चरण पखालो सखी ॥ नय० ६ ॥ इति

रागिणी भैरवी

मेरो मन लागी रह्यो महावीर चरणमें जाय ॥ सिद्धारथके नन्दन एसे ॥ मातात्रिसला देवीमाय ॥ मे० १ ॥ जनमतही स्वामी मेरुकम्पायो संसयदीया हैं मिटाय ॥मे०॥ खत्रिकुंड स्वामि जनम लिया है मुगत पाया पुरी जाय । मे० जो कोई ध्यावे स्वामी सोफल पावे. चद किरत गुण गाय मे० ॥ इति

पुनः

प्रभु मेरी विन तदी उर धारो। तुम तारण तिहु लोकके स्वामी । मोहि भरोसो तीहारो ॥ १ ॥ मोसे पतीतन आ जगमें कोई । मैं ठगो जग मारो ॥ २ ॥ तुम प्रभु तारण, पतीत उधारण । भवसागरथी तारो ॥ ३ ॥ प्रभु सेवकरी चित्त न दीजे अपनी ओर नीहारो ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

नाथ भये वैरागी हमारे ॥ कासे जाय कहुं मेरी सजनी। बीन अवगुन मोहे त्यागी ॥ हमा० ॥ परवस तुती जाय पड़ी है। तुही तुही रटणा लागी ॥ ह० ना० ॥ लाल वीनोदी ईह रुपको नीरखत। वीर ह वृथा तन भागी ॥ ह० ना ॥ इति

पुनः

तारिये मोहे शीतल स्वांमी ॥ सितल स्वांमी अन्तर जामी ॥ आंकड़ी ॥ काल अनादि पुदगलके संगे, भटकत भयो हुं निकामी ॥ तारो० १ ॥ एसो न रहियो कोई थानक मरण बिनाको अंतरजामी ॥ २ ॥ ओर फीर सुष्यम वादर पुदगल ॥ परावरत कीयो सीरनामी॥ ३ तारो० ॥ अधम उधारण बिरुद तिहांरो कृपा करी तारो भव्यजानी। भानु चंद कहे प्रभुजीकी सेवा सिवसुख की है यही निशानी ॥ ४ तारो० ॥ इति

पुनः

क्योंकर भक्ति करूं प्रभु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम क्रोध मद मान विषय रस, छोड़त गेलन मेरी प्र० ॥ करम न चावत तिमही नाचत माया वस नट चेरी ॥ प्र० ॥ दृष्टि राग द्रढ़बंधन वाध्यो निकसत न लहे सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रसंसा सब मिल अपणी। परनिंदा अधिकेरी ॥ कहत मान जिन भाव भगत विन शिवगत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति

राग भैरु

भोर भयो भोर भयो भोर भयो मानी ॥ चेतन तूं अचेत चेत चिरिया चचहानी ॥ भो० ॥ कमल खंड मंड विकस फोलनी सुहानी, रतन उपम सजनसी नैना मे घुरानी भो० ॥ है निभाव वीच नीन्द सुपनकी निसानी, तेरे सु सुभाव माहि दोनु न समानी ॥ भो० ॥ आरोपित धर्म ते मुक्तकी दुरानी, स्पर्क सुज्योत ज्ञानसार ज्योत ठानी ॥ भो० ॥ इति

चाल कडखा

भाग्य घरी धन्य दिन आज सफलो गिणुं आज में सजनि आनंद पायो भा० ॥ कनक धर निजर भरि विमल गिरि निरख पर रजत मणि कनक मोतिन वधायो भा० ॥ पग पगे उमग धर पथ नित चढतां धन्य दो चरण जिन चरन आयो आज धन दीह जागी सुकृत की दसा आज धन दीह प्रभु सुजश गायो भा० ॥ दूर दुर्गति टली जात्र शिव सुरगी पुन्य भंडार पोतै भरायो वदत जिन राज मन रंग सुरगिरि शिखर ऋषभ जिन चंद सुरतरु फल पायो इति

भैर

मानविया सांभला जिन भगवत जन गुण गाने। पावागढ़ परम धाम, धनाश्री नाद नाम, तारा प्रभु गणस नंत,

:

राणी हुलरावें ॥ सां० ॥ अखसेनजीके नन्द, वामा जननी जिनन्द; लच्छन शोहे फनीन्द्र, धरणीन्द्र वधावै ॥ सां० ॥ संवत् सुभसे उनिस, आसाढ़ सुकल नवमी दीश श्रीजिन सौभाग्य सूरी, प्रतिष्टा करावे ॥ सां० ॥ श्रीसंघ सव मिले आय, उछव करे प्रभु वधाय, रामवाग नवल मंदिर, प्रभुको पधरावे ॥ सां० ॥ सेवक तो आयो धाय, सुनियो प्रभु चित लगाय, गुण समुन्द्र वीनये करी प्रभुके जश गावे ॥ सां ॥

पुनः

क्या तें गाफिल सूताहै अव उठरे भया सवेरा ॥क्या०॥ ए संसार हाटका मेला । चिड़िया रयन वसेरा ॥ क्या० १ ॥ मातपिता सुत वनिता कारण । मोह मदननेः घेरा । तन मद धनमद योवनके मद । कंचन कचरे मेगेरा ॥ क्या० २॥ पग धरते धरती धूजावै । फूक फूक तनहेरा । चंद दिवश की है रोशनाई । आखर जाणो अंधेरा ॥ क्या० ३ ॥ हरि हलधर वासव चक्री । भवन आरीसाकेरा । छोड़ छोड़ गये जंगलवाशी । रंग महल क्या तेरा ॥ क्या० ४ ॥ जो माने सो चतुर कहावै । बचन चटाका मेरा । ए हीत सीख दीया है सवकुं । इंद्रचँदका चेरा ॥ क्या० ५ ॥ इति

पुनः

लेना होय सो लेले वावा । फिर पीछे पित्ता वेगा ॥

कर प्यारे सुगुरुण क सेवा । वही नफा वतलावेगा ॥ ले० १
जो समय गाफिलमें जावे । फेर न पाछे आवेगा । कर
सुमरण साहिवके नामका । अजय अमर पद पावेगा ॥ ले०२
विकट वाटडि चलनि प्यारे । शूल विषमका आवेगा । जब
कांटा लगसीरे प्यारे वडी विपद उपजावेगा ॥ ले० ३ ॥ खोटी
करानि पार उतरणी । कहो केसे विध होवेगा ॥ एहोनो कवहि
नही प्यारे । मूल पदारथ खोवेगा ॥ ले० ४ ॥ इति

पुनः

लोक चवदेके पार किनारे ॥ पूरण ब्रह्मका वासा हैं ॥
पैंतालिस लाख जोजनकीसीला ॥ फिटक रतन उजवासाहे
लो० ॥ पञ्चवर्णकी धजा फरुंके ॥ क्या कहुं अजव तमासा
है। चौपठ ईन्द्र खडे तेरेद्वारे खिजमतवन्दा खासाहे। लो० १
निसिदिन ध्यान तुमारो ध्यावुं, उरनकी नहीं आसाहे ॥ रूप
चंद भगतिकी वीनती, चरणकमलका दासाहे ॥ इति

पुनः

मुजरा साहिव मुजरा साहिव, मुजरा साहिव
मेरारे ॥ साहिव सुविध जिनेश्वर स्वामी, चरण पखालुं
तेरारे ॥ मु० १ ॥ केशर चंदन चरचुं अङ्ग, फूल चढाउं
सेहरारे ॥ घण्ट वजाऊ अगरऊ खेऊ, करुं प्रदक्षिणा
फेरारे ॥ मु० २ ॥ पञ्च शब्द वाजिंत्र वजाइ नृत्य

करूं अति घेरारे । रूपचंद गुण गावत हरषित दास निर-अन तेरारे ॥ सु० ॥ इति

पुनः

लागी लगन कहो कैसे छुटे प्राण जीवन प्रभु प्यारेसे । ला० ॥ निर्मल नीर कमल सरोवरसें, भ्रमर रहत न निवारे से, जैसे चन्द चकोर मगनमें चकवी चरु जग तारेसे ॥ ला०१ ॥ राजसींह नवलो नेह लाग्यो नायक नाभि दुलारे से ॥ ला० ॥ इति

पुनः

तुम विना दीनानाथ जगतमें अवर नहीं कोई मेरारे ॥ तु० ॥ तारण, तरण कृपा निधि स्वामी विरुद सुना तुम केरारे ॥ तु०१ ॥ एक भरोसा जाण प्रभुका । चरण कमल का घेरारे । अवतो सरण लीया तुमारा । दीजै दरस सवेरा रे ॥ तु०२ ॥ रागी दोषी देवीदेवा । उनके बड़ा अंधेरारे । धनधन प्रभु सबके उपकारी । तुमकुं हमने हेरारे ॥ तु०३ ॥ दिल अंदरकी तुमही जाणो । घटघट वास बसेरारे ॥ सुख साता के दाता जगपति । मेटो करम बिखेरारे ॥ तु०४ ॥ कहत अबीर मन तन लगाई । जैसे चंद चकोरारे । आठ पहर घड़ी चोसठ ध्या है ॥ नाम जपूं में तोरारे ॥ तुम० ५ ॥ इति

पुनः

देखो भवि वीरप्रभु पावापुर आवे ॥ सुरनर सब ईन्द्र आय ॥ पूजत सब प्रभु पाय, इन्द्राणी मिल मङ्गल गावे आनन्द बधावे ॥ १ दे० ॥ विन्तरादिक देव आय तिन पीठ तिहां रचाय । सोभा तन अति सुहाय, दुन्दभी बजावे ॥ दे०२ ॥ आनन्द वरधन सुहाय, मन खुस्याल चंदके भाय, जीनजीके गुणग्राम सुमन राय गावे ॥ दे०३ ॥ इति

पुनः

मेरे इतनो चाहिये नित दरसन पांउ, चरण कमल सेवा करु मेरो जीव रमाउ ॥ मे०१ ॥ मन पङ्कजके महलमे प्रभु पास वसाउं, निपट नजीके हुय रहु चरणे चित लाउ ॥ मे०२ ॥ अन्तरजामी एकतु अन्तरीक गुण गांउ आनन्दघन प्रभु पासजी मै और न ध्याउं ॥ मे०३ ॥ इति

पुनः

आंगन कल्प फल्योरी हमारेमाई ॥आ० ॥ रिध ब्रिधि सुख सम्पति दायक श्रीशातिनाथ मिल्योरी हमारे ॥ अ० ॥ केसर [illegible] ...आदि बरास मिल्योरी ॥ पूजत श्रीशाति [illegible] प्रतिमा अलग टङ्केग टल्योरी हमारे ॥अ०॥ सरणे [illegible] कृपा कर साहिब ज्यु पार वो पल्योरी ॥ समय सुन्दर तुमारी कृपासे, हुं रहि स्युं सोहिलोरी ॥ हमा० ॥ इति

पुनः

देखोरे आदीश्वर स्वामी कैसा ध्यान लगाया है ॥ दे० कर उपर कर अधिक विराजे नासा ध्यान लगाया है केवल ज्ञाण उपाय जिणेश्वर मुक्ति रमणीकुं चाया हे ॥ दे०१ ॥ दशविध पूजा रचना जिनको सब मिल मङ्गल गाया है, सेवै सोही लहे सुख संपत सब संतन मिल गाया है ॥ दे०२ सुरनर मुनिजन भक्ति करत है छवि देखत मन भाया हैं तीन लोकमें महिमा तेरी चंदखुशाल गुण गायाहै ॥ दे०३ ॥ इति

पुनः

योगीश्वर तेरी गती क्या कोई विचारे ॥ यो० ॥ अनुभवकी वात अगमविरला कोईधारे ॥ यो० ॥ अदभुत अखंड जोत शोभा त्रिभुवनमें होत निरुपम है रूप परम गुण आनंद कारे ॥ यो०१ ॥ योगमें अयोग नही संसारी भोग नहीं राग देष मोह कर्म फंदसैं किनारे ॥ यो०२ ॥ मत मतके भेद वहुत कर्मकी लपेटवहुत नानाविध रूपधरे पंथ न्यारे२ । यो०३ स्वैमतमें भेद नहीं वेदमैं अवेद नहीं भरमजाल वीचमें अनेक भेदडारे ॥ यो०४ ॥ चुन्नी लख अलखनाम अजपाजप सिद्ध काम, सोहं जयकारी निजकाजही सुधारे ॥ यो०५ ॥ इति

पुनः

साहिव करुणा निधान सुन पुकार मेरी, दीनवंधु जग

दयाल शरणागत तेरी ॥ सा० ॥ भव अटवी विकट सघन जिसमे अगणित विघन चोर जार ठग लूटे डार मोह अंधेरी सा० ॥ किसविध उतरुंगा पार अपना कोई नही हे लार, अवसर ने स्वामी नाथ चहिये नही देरी ॥ सा० ॥ सानिध करिये दयाल प्रण अपनेकुं संभार, दास चुन्नी पार लहे छुटे भव फेरी ॥ सा० ॥ इति

पुनः

उठोने मेरा आतमराम जिन मुख जोयवा जईयेरे ॥ उ० ॥ जिनजीनो दरसण छे अति दोहिलो तेकिम सोहिलो जाणोरे वारवार मानव भव जेहवो जुडवो मुसकल टाणोरे उ० ॥ च्यार दिवसतुं चटको भटको देखीने मत राचोरे विनसी जाता वार न लागे काया घटछे काचोरे ॥ उ० ॥ अनंत गुणे भरियो इह जिनवर पूरव पुन्ये पायोरे एहने देखी दिलमे आनंद करतुं सदा सवायोरे ॥ उ० ॥ हीरो हाथ अमोलक आयो मूढपणे मति गमजोरे सहिज सलूणा पास जिनंदसुं राजी होय चित रमजोरे ॥ उ० ॥ मनगमता तुं माहरा आतम करिजे सुकृत कमाईरे लाभ उदय जिन चंद लहीते वाद्रं सिद्ध वधाईरे ॥ उ० ॥ इति

पुनः

आमग तुमारा जैसे डुबतेको वेडा ॥ अंधेकोलकडो

जैसे मुझे नाम तेरा ॥ पारससे स्वामीजीका जपत होय सवेरा ॥ आ० १ ॥ काम क्रोध लोभ मोह आनके घघेरा ॥ ऐसे कृपा कीजे जैसे मेहकाढडेरा ॥ आ० २ ॥ तुं साहब मेरा है वंदा मैं तेरा जनम पाय जादुराय ॥ चरणन का चेरा ॥ आ० ३ ॥ इति

पुनः

तीरथ पति नेमनाथ जदुपति जदु राई ॥तीर०॥ सावरीसलूणोगात, राणी शिवा देवी मात, समुद्र विजय नृपति तात शंष लंछन पाई ॥ तीर० १ ॥ वा वीसम जिनराज देव सुरनर सव सारे सेव देवनके देव प्रभु त्रिभुवन सुखदाई ॥ तीर० २ ॥ उत्तम गुण ज्ञान वांन करुणारसके निधांन दीनो तिहां अभयदान जीवनके तांई ॥ तीर० ३ ॥ तोरनसे रथ फिराय पहुंचे गिरनार जाय, संजमव्रत लीनो धाय सहसावन जाई ॥ तीर० ४ ॥ समवशरणमें जिणंद वैठे उपशमके कंद पूजत पद इन्द्रचंद तनमन हुलशाई ॥ तीर० ५ ॥ इति

पुनः

जागरे वटाऊ अब भई भोर वेला, भयारवीका प्रकाश कुमद थये विकाश, गयानाश प्यारे मिथ्या रयणका अंधेरा जा० १ ॥ सुताकिम आवे वाट चालवी, जरूरवाट, कोई नहीं मिल परदेशमें जूं तेरा ॥ जा० २ ॥ अवसर वीत जाय

पाछे पछ तावा थाय चिदानन्द निसचे ए मान पद्या मग ॥ जा० ३ ॥ इति

पुनः

वन्दो जिनदेव सदा चरण कमल तेरे। ऋषभ अजित संभव अभि नन्दन जिनकेरे। सुमत पदम श्री सुपाश चन्दा प्रभु मेरे ॥व०१॥ पहुपदन्त सत सुविध श्रीअस गुन घनेरे। वास पूज्य विमल अनन्त धरम जग उजेरे ॥ व०२ ॥ सान्त कुंथ अरीमल्ल मुनी सुवरत मेरे। नमो नेम पारसनाथ वीर धीर हेरे ॥ व०३ ॥ सुमरत प्रभुनाम सकल मेटत भव फेरे जनम पाय जादु राय चरणनके चेरे ॥ व०४ ॥ इति

पुनः

परम शान्तिरसभीनी मूरत, जिनवरदेव सुहावेरे ॥ प० ॥ सुरनिय नृत्य करत नित जाके। देखत चित चपलावेरे ॥ प०१ ॥ आप रागसे रहत वैरागी। परकु राग वढावेरे ॥ प०२ ॥ याभव याकुल यातेरी महिमा जगत राम जस गावेरे ॥ प०३ ॥ इति

पुनः

अनुभव सुजन संघाती मेरे, सान्ति रसो कब आवेंगे ॥ मोसुं सांचि कहो मेरी आली, कब मोहे दरस दिखावेंगे ॥ ॥ कौन कुमतके संग रमे प्रभु, पर घर रैण विहावेंगे ॥

२ ॥ मन मलिन नलनीकी संगत, विरथा काल गमावेगें ॥ ३ ॥ कोई उपाय करो चतुराई निकलंकी हो आवेगें ॥ ४ ॥ दास चुन्नी घरकी ठकुराई, पाय अचल सुख पावेगें ॥ ५ ॥

पुनः

वीर प्रभु त्रिभुवन उपगारी जान सरण हम आये हैं । वी० ॥ पावापुर स्वामी दरसन पायो दुख सब दूर गमाए हैं ॥वी०॥ केवलपाय पावापुर आये समव सरण वि रचाए हे संघ चतुर्विध थापना करके शिवपुर पंथ चलाए हैं ॥ वी १ ॥ महिमण्डल विचरत जिनवरजी वहुच्येतन समझाए हैं तीन लोकमें अदभुत महिमा सुरनर मुनिजश गाए हैं ॥ वी० चरम चोमासे पावापुर आए करसव करम खपाए है, सोले पहर लगेदसना देता परम २ पद पाये है ॥ वी०४ ॥ अमृत धर्म सुवाचक प्रभुके दरसण कर हुलसाए हैं ॥ सीस क्षमा कल्याण सुभावें शासनपति गुणगाये हैं ॥ वी०५ ॥ इति

पुनः

भेटे श्री आदिनाथ, भले दिन ऊगे आजके भेटे श्री शान्ति नाथ ॥ भले० ॥ चित मन मेरे तुं मनमें, पाप गयो सब भाज ॥ भले०१ ॥ ए संसार समुद्र विषमें तामें आप जिहाज ॥ भले०२ ॥ कहे जिन चन्द तुमारी कृपासे सेवे सकल सभ [illegible] ॥ भले०३ ॥ इति

पुनः

आजतो हमारे भाग वीर प्रभु आये है ॥ आ० ॥ चदना खडी दुवार चित्तमे करे विचार देखत दीदार हीये हरष भराये है ॥ आ०१ ॥ आज मेरी आसफली अली मेरे रग रली । विकसीत आतम कली । प्रभु पात पाए है ॥ आ०२॥ धन दिन आज मेरो गयासव कर्म झेरो सुकृत बहुतेरो, भगवान दिल भाये है ॥ आ०३ ॥ सिद्धारथ राय नंद सोहत सरद चद । कहे जिन चद चित आनन्द वधाए है ॥आ०४॥

पुनः

कवण नींद सूता मन मेरा, प्रभु सुमरनकी वेला ॥क० एटेर) चेत चेत नवकार समरले समझ २ मन मेरारे ॥ अवकी वेरियां भूल जायगो वहत खायगो फेरारे ॥ क०१॥ शिरपरकाल फिरे सरसाधे अवमन चेत सवेरारे ॥ रंगमहल से उतर जायगो जङ्गल होयगा डेरारे ॥ क०२ ॥ हिरदे ज्ञान प्रकाश्यो नाहि गुरु विन बहुत अधेरारे, चेन विनयकी एही वीनती, होय सदगुरुका चेरारे ॥ क०३ ॥ इति

पुनः

आवत सब इन्द्र चन्द्र, पूजत है अति उमङ्ग, मङ्गल ध्वनि करी आनन्द प्रभुको वधावै ॥ जय २ श्रीजगआधार, जगदीश्वर गुण अपार समताके तुमही सार, मुनि जन यश

गावै ॥आ० १॥ सुमतिनाथ तुम दयाल, वाणी है अति रसाल, भव्य जीव प्रतिपाल, मनही हर्ष आवै ॥ आ०२ ॥ सुद्ध चित्त ध्यावै कोई, मन वंछित पावै सोई, नयनानन्द सुख जोई, अजयराज पावै ॥ आ० ३ ॥ भक्ति वच्छल जगतनाथ तुमही त्रैलोक्यनाथ, सेवक करिये सनाथ हृदय ज्ञान आवै आवत० ४ ॥ इति

रागिणी भैरवी ताल—दादरा

जिनन्दा मोरी नईया लगा दो बेड़ा पार ॥ १ ॥ मैं विनवुं वारम्वार ॥ जि० ॥ इह संसार गहर कर सींधु । जा को न दीसे किनार ॥ जि०२ ॥ काम तरङ्ग उठे अति भारी मोह भमर मझधार ॥ जि०३ ॥ मिथ्या मतको मेघ चहु-दिस । छाय रहो अन्धकार ॥ जि०४ ॥ लाल चुनी कर जोड़ी विनवे । वेगी करो भवपार ॥ जि०५ ॥ इति

रागिणी—अलहीया

क्या सोवे उठ जाग बाउरे, अञ्जरी जलज्यूं आयु घटत हैं देत पोहरिया घड़िया घाउरे ॥ क्या० ॥ इन्द्र चन्द्र मुनि नागेन्द्र चलै सब कुन राजा पति साह राउरे ॥ क्या० ॥ भमत भमत भव जलधि पायके भगवंत-भगति सुभाव नाउरे

क्या०॥ कहा विलंब करे अब बोरो नर भवजल निधि पार पाउरे आनन्द घन चेतन मय मूरति शुद्ध निरञ्जन देव ध्याउरे ॥ क्या ॥ इति

पुनः

भगवत भजन करनकी वेला, क्या सोवे उठ प्रगट उजेला ॥ भ० ॥ काल निरर्थक मत खोयो प्राणी फिर पाना नर जनम दुहेला ॥ भ० ॥ ज्योति स्वरुप निरख अविनाशी, घट वासी तन ताप बुझेला ॥ भ० ॥ अलख निधान प्रगट सन मुख है जिनसे जनम मरण भय ठेला ॥ भ० ॥ चुन्नी चित्त विचार विवेकी ज्ञान गुरु प्रधान है चेला ॥ भ०॥ मिथ्या त्याग तिहा चढ बैठ जहां अविचल सिद्धोका डेरा भ० ॥ इति

पुनः

समझ मन जग धोखेका टाटी, काल अनाद ते मोह नींद वस जिन्दगी अकारथ काटी ॥ स० ॥ गाफिल क्यू अब चेत चतुर नर काल खडा लिये लाठी ॥ स० ॥ अध्यातम धर ध्यान हिये मे नांढ करमकी काटी ॥ स० ॥ स्वगुण रच पर गुग मत राचो आखर एकदिन माटी ॥ स० ॥ दास चुन्नी शुभ भावमे लीन होय, लह्व भवसागर पाटी ॥ स० ॥ इति

पुनः

अब मोहे तारोगे दीन दयाल ॥ अब ० ॥ सबही मत देख्यो मै जित तित ॥ तुमही नाम रसाल ॥ अब ० ॥ आद अनाद पुरुष हो तुमही, तुमही विष्णु गोपाल शीव ब्रम्हा तुमही हम सरदे ॥ भाज गयो भ्रम जाल ॥ अ० ॥ भव अनन्त भटक्यो भव मांहि ॥ फिरो अनन्तेकाल गुण विलास श्री ऋषभ जिनन्दा ॥ मेरी करो प्रतिपाल ॥ अ०॥



रागिणी—वेलावल

आज सखी मेरे वालमां । निज मन्दिर आये ॥ अति आनन्द हीये धरी ॥ हंसी कण्ठे लगाये ॥ आ० १ ॥ सहज स्वभाव जलेंकरी रुचिवरनवरावें थाल भरीगुण सूंखडी । निज हाथ जीमावे ॥ आ०२ ॥ सुरभी अनूभव रसभरी ॥ बीडांस बराये ॥ चिदानंद निजदंपति मनवांछित पाये ॥आ०३॥ इति

पुनः

सुहागणजागी अनुभव प्रीत ॥ सुहा० ॥ नीद अनादि आपानकी, मेटी गहिनिज रीत ॥ सु०१ ॥ दीपक घट मंदिर कीयो, सहज स जोतिसरूप, आप पराई आपहि, टानत वस्तु अनूप ॥ सु०१ ॥ कहा दिखाउं औरकुं कहा समझांउ

भोर, तीरन चुके प्रेमका, लागे मो रहे ठोर ॥ सु० ३ ॥ नाद विलूधी प्राणकुं, गिनेन तृणमृग लोइ। आनन्द घन प्रभु प्रेमकी, अकथ कहानी होइ ॥ सु० ४ ॥ इति

रागिणी-टोरी

सूरत लागत प्यारी प्रभुजीकी, सुरत लागत प्यारी । पारसनाथ प्रगट परमेश्वर ऊनसुं कीजीये यारी ॥ सुर० १ ॥ आठोजाम रहत चित भीतर मूरती मोहन गारी । जबदेखु तब आगेही ठाढे विसरतनांहि विसारी ॥ सु० २ ॥ मस्तक मुकट रतनमणि मण्डत, कुण्डलको छवि न्यारी । हरखचन्द वामाजीके नन्दन पर, वारवार बलिहारी ॥ सु० ३ ॥ इति

पुनः

वाजत रंग बधाई नगरमे । वाजत रंग बधाई, जैजेकार भयो जिन शासन, वीर जिनन्दकी दुहाई ॥ वा० १ ॥ सब सखियन मिल मङ्गल गावे मोतियन चोक पुराई ॥ वा० २ ॥ केतकी चंपो फुल मगावो, जिन जीनी अङ्गीया रचाई ॥ वा० ३ ॥ न्याय सागर प्रभुचरण कमलको, दिन दिन जोत सवाई ॥ वाजत० ४ ॥ इति

पुनः

अब मेरी प्रभुसुं प्रीत लगीरी । घनसों मोर चकोर ससीज्यों ॥ कमल मधुप ज्यों पुहपगीरी ॥ अ० १ ॥ दिन-

कर को चकवी ज्यों चाहे । त्यों मेरे मन आनिजगीरी ॥ गुण विलास प्रभु कुंथ जिन देखत ॥ दिलको दुविधा दूर भगीरी ॥ अ०२ ॥ इति

रागिणी–रामकेली

रांम कहो रहिमान कहो, कोउ कांन कहो महादेवरी, पारसनाथ कहो कोउ ब्रम्हा, सकल ब्रम्ह स्वय मेवरी ॥ रा०१ भाजन भेद कहावत नाना एक मृत्तिका रूपरी ॥ रा०२ ॥ निज पद रमे राम सो कहिये, रहे इमान रहिमानरी, करखें रुपकान सो कहिए, महादेव निर वाणरी ॥ रा०३ ॥ परसेरूप पारस सो कहीए, ब्रम्हा चीन्हे ब्रम्हरी, यहविध साधो आप आनंद घन, चेतन मय निज करमरी ॥ रा०४ ॥ इति

पुनः

पूरि मनोरथ साहिव मेरा । अहनिशि सुमरन करि हुं में तेरा ॥ पू०१ ॥ अन्तराय अरिकरि रह्यो घेरा । ताकि तत छिन करहुं निवेरा ॥ पू०२ ॥ भवबन माहि भम्योवहुतेरा । पुन्य संयोग लह्यो तुम डेरा ॥ पू०३ ॥ गुणविलास प्रभु टारो फेरा ॥ दीजे सुपाशजी पाश वसेरा ॥ पू०४ ॥ इति

पुनः

तें मेरा भ्रमरा में फुल वारी । तें मेरा साजन में तेरी नारी ॥ तें०१ ॥ एक कूवा पांचु पणि हारी । पांचुं सिंचे

अपनी नारी। उरगया कुत्रा बिन्नर गई बाडी ॥ बिलखचली पाछु पिनहारी ॥ ते०२ ॥ कहत द्यानत राय अन्तकी बाडी हाय झुलाय चले जुहारी ॥ ते०३ ॥ इति

रागिणी–नट

जिन चरणे चित लीनी, आली मेरो जिन चरणे चित लीन्हो ॥ पदम प्रभु पदपङ्कजके रंग निसवासर रहे भीन्हो आ०१ ॥ अरुण वरण जिन चरण कमल पर मै उज्वल चित दीन्हो ॥ आ०२ ॥ मेरो हित प्रभुजी सों लागी, सो क्यो होवत हीनी, ज्यौ ज्यौ नेह नयन ते देखो त्यों त्यों होत नवीनो ॥ आ०३ ॥ अन्तरजामी साहिब मेरो सब विधि जांन गवीनो हरख चंद हितकर प्रभुजी सों जनम सफल करि लीन्हों ॥ आ०४ ॥ इति

रागिणी–नट

जागरे सब रैन विहानी। उदयो उदयाचल रवि मडल पुन्य कालरगु सोवे प्राणी ॥ जा० ॥ कमलखड बन बन बन विकसाने अजहु न तेरो दृग उघरानी। चेतन धरम अनादि तुमासो ताते सब उरझेरा ॥ मे० ॥ इति

रागिणी–अडाना

सिग्रर समेतवसे हो विमल जिन ॥ सिग्रर० ॥ विषय विकार आदि सत लीनो, भवफन्दमे नफसे हो ॥ १ ॥ वि०

मनतन जीत वचन बसिकीन्हो, इंद्री पंचकसे हो, छांड़ि सकल परिग्रहकी ममता समता, रंग, रमेहो ॥ वि०२ ॥ अष्टकर्म अतुलीवल बसिकर, शिवपूर पंथधसेहो, वहुत जीव भवजलसे तारे कीन्हे आपजिसेहो ॥ वि०३ ॥ पूरव पुन्य जग्यो प्रभु परसन, दरसत दृगहुलसेहो हरखचंद चित हित अतिबाध्यो सब दुख दूर नसेहो ॥ वि०४ ॥

रागिणी–भैरवि

हो देवी सबासमे तुझे बोलुं । तेरा मान वधाबुरे ॥ हो प्रिये० ॥ मांग तूं अब मुझसे क्या चाहती हे ॥ जो चाहे सो दिलाबुंरे ॥ हो देवी०१ ॥ ज्ञानका हीरा ध्यानका मोती भगतिकी लाल दिलाबुंरे ॥ हो० प्रि०२ ॥ सेवा थकि केई समकित पाम्या । आर्द्रकुमार वताबुंरे ॥ हो प्रि०३ ॥ मृग भवमे मुनि भगति प्रसाद हे । ब्रम्हकल्प महाआबुंरे ॥ सुरपति वानी सुनके ऐसी । उदय अचलसुख पाइंरे । हो ॥ प्रि० ४ ॥ इति

रागिणी–मालकोस

बल जांउ तेरे नामकी, जाते परम मनोरथ लहीये ॥ ऋद्ध वेरिद्ध सुखकामकी ॥ व० ॥ तेरो नाम लीयां संकट सव । पाप डरे आठो जामकी ॥ व०२ ॥ अष्ट सिद्ध नव निद्ध सदाई । प्रगटे ठामो ठामकी ॥ व० ३ ॥ सब जग व्यापत

सव घट भीतर । जाप जपे तेरे नामकी ॥ व०४ ॥ आनतना पूरनता सवगुण । पावे आतमरामकी ॥ व०५ ॥ इति

पुनः

मेरे घर आईलो, नेम जिनन्दा ॥ तोरण आई चले रथ फेरी, पसुवन की सुनीरे पूकार, रथ फेरवोरे ॥ मो० १ ॥ सहसा वन जाई सजम लीन्ये, जाई चडी गड गिर नार पञ्चे महा व्रत आदरे ॥ मो० २ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, चरण की जाऊं वलीहारी ॥ मो० ३ ॥ इवि

दोहा

जिवडा जिनवर पूजीये, तासे सम्पती होय ।
राजा नमे प्रजा नमे, वालन वाकि होई ॥

गजल (फारासि)

तो विया वसान एमन । अजान दिलनवाजम । कदम नृ व चश्मदारम् । हरखाक सुमैंसारम् ॥ तो० ॥ दराहिजूरे सोखत जानम् । एकमुस्ते उस्तखानम् । नेताकते सवूरी । ने ताव दर्ददारम् ॥ तो०२ ॥ रहमो करम वसुर्गा । गजवो अताव वरमन् । अमुत्सफी नवाशद । हर लहजान्दश्म जारम् । तो०३ ॥ वरकोह नार रफते । महसुद व ईस्क दीगर । रजी दई दिलेमन दिलस्ते शुद निगारम ॥ तो-४ ॥ दर इनकी

लावतन्हीं । भयमव जुनाचे गोयंद । दरसुरतेकेवुदि जारों जहम् रिकावम् ॥ तो०५ ॥ मारा सहो नमृदी तकसीर मन चे दिदी । अजान मनचेकरदी, जांहाल वुरदवारम् ॥ तो०६ मादरपिंदरीविरादर, खुदगरजकारसाजंद । वा वक्तआंजुनावम् जुजूतो दिगर नदारम् ॥तो०७ ॥ वेवजूद वेगुनाही, वरखुद कवुलदारम् ॥ वरहालतमू नजर कुंन । वरईम्ज इनकीसारम् ८ ॥ अनेस साहेवे मन्, रजमति अरज वदिल कुन । मेहेरे वकुन् वजानम्, जेकरम उमेदवारम् ॥ ९ ॥ दिलखुस अगर तोखाही, राहत् रसां दिलारा । वरमुद्दया रसीदी, अजवे अकीन दारम् ॥ १० ॥ इति

पुनः

ऐसी तेरी मुरतवनी चंदवी लजाईयां ॥ ए० ॥ देख नयन मेरे हीये, हरख हीमें पाईयां ॥ ए० ॥ नगरी बनारसी कासी देश सुहाईयां । ए० ॥ अखसेन राजाके घर वामारानी जाईयां ॥ ए० ॥ तीन ज्ञान सहित प्रभु जनम हीते आईयां दिक्षा लियेते ज्ञान मन परजव पाईयां ॥ ए० ॥ गामागाम विचरतां घाती करमही खपाइयां, चएतवदी चौथके दिन केवल ज्ञान पाईयां ॥ ए० ॥ समेतसिखर ऊपरही प्रभु मुग तहीं सीधाईयां, दास आसधारके प्रभुके सरणे आईयां ॥ ए० इति

पुनः

मोहनीकी लागे सूरत तेहारी, मेरो मन वस कीनो ऋषभ वेहारि॥ मो० ॥ धुलेवा नगरमे आप विराजे श्याम मूरत सुभकारि। मो०॥ मस्तक मुकट काने कुण्डल विराजे आंगी की छवप्यारी ॥ मो० ॥ सेवग ऊभो अरज करत है, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ मो० ॥ इति

पुनः

सिवाय जिनपदके जगमे प्यारे, विचार हरदम न कोई किसीका ॥ पे नाम अनुभव हितु है प्यारे ॥ वि० ॥ जिसे समझता है ए तु मेरा, समझ तू दिलमे कहां है तेरा, फसा है नाहक ममत मे घेरा ॥ वि० ॥ ए मोहकी ते बिछाई चोसर लगाई स्वारथकी वाजी इस पर, है जीत पाशेके हाथ दिलवर ॥ वि० ॥ सुघर खेलारी सोही कहावे, जो छक्के पञ्जे नरद बचावे लख चौरासीमे फिर न आवे ॥ वि० ॥ ए चुन्नी प्रभुके भजनकुं गावे, गुरुके चरणो मे शिर नमावे गुरु धरमका मरम वतावे ॥ वि० ॥ इति

पुनः

नेक वातो के तई दिल वीच रखना चाहिये। उसके रस कसका मजा दम दम मे चखना चाहिये ॥ ने० १ ॥ रुप जिसका है निरुपम लख सके कोई क्या मजाल, जो लखे

उसके तई लखके हरखना चाहिये ॥ ने०२ ॥ नाम जिनका है अलख, लक्षण का क्या देवे पता झुठ सच इस्की तुम्हे लाजिम परखना चाहिये ॥ ने०३ ॥ ध्यान अनुभव मिलका आया परम आनन्दमें देखकर स्वरूप अब किसकों निरखना चाहिये ॥ ने०४ ॥ दास चुनीं ज्ञान धन पाया विमल जिन देवसें सुखसेती गुणगान अमृत रस बरपनां चाहिये ॥ इति

पुनः

दुनियाके अंदर आयके तूंने क्या भला किया। अपना जो माल जानके संग बांध कीया लीया। आयाहै तुं बांधि मुठि पसार हाथ गया ॥ दु०१ ॥ सूत मात तरुणिके मोह जालमे पड़ा। सोतोंहैं सब गरजेंके दरदि तेरा कोन जिया दु०२ ॥ नौमास रहा तु वोहि जगे पे ऊसका खियाल न किया। अवल भटकता आया हैं चौरासिसे जिया ॥ दु०३ ॥ पञ्च इन्द्रिके मोहसे तुं डरके चल, जीया। उनने तुझे फिरा फिरा हैरांण वहत कीया ॥ दु०४ ॥ सात विसन भेले करके उसका पीयला तैं पीया। गती नरक भोग भोगवी दुनियां में डुब गया ॥ दु०५ ॥ आनन्द घनकी वीनाति मनमें सुनियां जीरा। मनुष्य हवा चलि गई फेर हाथ क्या रहा ॥ इति

पुनः

जब तलक तनमैं मेरे यह दम रहे प्रभु नामका सुमरन

मुझे हरदम रहे, मैतो हुं चाकर तेरा जगनाथजी । तेरे चरनोंमे मेरा मन रम रहे ॥ ज०१ ॥ तुझ विन अपनी व्यथामे किससे कहु । पाउ मैं वञ्छित क्षय उपशम रहे ॥ ज०२ ॥ इतनी अरजी है मेरी सुन लीजिये । चुनीकु आधार प्रभु दम दम रहे ॥ ज०३ ॥ इति

पुनः

है मुनासिव अपने घर वेलाग होकर आईये । लाग तो रखना नही लाजिम है मन समझाईये ॥ है०१ ॥ लागमे देखा तो क्या क्या सूरते आई नजर, तारमे लिपटी हुई ढवसे इन्हे सुलझाईये, लाग किसके हाथ है और डोर किस्मे है लगी, घर व घरका नाच इसको देख गैरत लाईये ॥ है०३ दास चुन्नीने जो देखा ज्ञानके चश्मेके वीच, आपतो वेलाग लगा रख अलग सुख पाईये ॥ है० ॥ इति

पुनः (चाल थियेटार)

दिलसे हरदम मै तेरी याद किया करता हूं । तेरे वस्फोका गुने वाद किया करता हूं । तुं निरङ्कार निराबाध अगम अगोचर, मै तेरे ध्यानमे दिलशाद किया करता हूं ॥ दि०१ है अलख नाम कोई तुजकुं लखावे विरला, साबित अपनी येही शुनियाद किया करता हूं ॥ दि० २ ॥ दिलमे बसता पें तू रहता नजरसे गायब, क्या गुनह इसके मे फरियाद किया

करता हूं ॥ दि०३ ॥ मिट गया भरम का परदा खुल गया अंतरके पट, चुन्नी खुश दिल असे आवाद किया करता हूं । दिल०४ ॥ इति

पुनः

अवतो चेतन चेत सतबुद्धि संभाला चाहिये ॥ लख अरूपी ज्ञान गुन अपनेको पाला चाहिये ॥ अ०१ ॥ इस जगतकी रीति झूंठीमें फसे त्रिभुवन के लोक, इनसे वेमुख हो सजन औगुन की मिटाना चाहिये ॥ अ०२ ॥ जो धरम बुझेहै अपना जिनके घर आनन्द है, पापके विध्वंस होनेको उजाला चाहिये ॥ अ०२ ॥ सूत्र सिद्धान्तसे सत गुरुका यही आदेश हैं, काज सिद्धीके लिए मारगसुं चाला चाहिये । अ० ४ ॥ दास चुन्नी ज्ञान सिंधु मथ कै पाया सार रस, पीने वालोंका जगत में, बोल वाला चाहिये ॥ अ० ५ ॥ इति

पुनः (पहाड़ी)

लगा रहता है मन प्रभुके चरण में) करूं सेवा प्रभुकी रात दिनमें ॥ मिटा कर भरमका परदा जो देखा है झूठा कारखाना सोच दिलमें ॥ ल०१ ॥ हुवा जव वोध आतम का मगनसे, तो पाया सार सदगुरु के वचनमे ॥ ल०२ ॥ सफल जीवन प्रभु चुन्नीका कीना परम आनन्द पद ध्याता हूं मनमें ॥ ल०१ ॥ इति

पुनः

संसार नाम उस्का जो सारा असार है, इस जगमे न कोई मेरा तेरा नाम सार है। भवजल अगम अथाहरे इस का न पार है, चारो गतिकी भवरां पडती अपार है ॥ सं० १ ॥ जिया देख डरा मेरारे तुंमसे नही छिपा, तेरे हाथ मेरारे अवतो उधार है ॥ सं०२ ॥ तुम सिवाय देव मै ध्याउं न दूसरा, मैनेतो अपने दिलमें किया करार है ॥ स०३ ॥ अब छोड सकल बातकुं तेरी शरण गही, जिन दास हाथ जोडके करता पूकार है ॥ स०४ ॥ इति

पुनः (पीलू)

जो तूं चेतन में खबरदार होगा। असा वखत मिलना दुसवार होगा ॥ जो० ॥ मानुप जन्म और जैन धरम श्रुचि सगत असा न बहार होगा ॥ जो०१ ॥ आकर जमानेमें विपयनकु सेवै। अष्ट करमका गिरफ्तार होगा ॥ जो०२ ॥ ऋपभ दास सुख चाहे तो प्रभु भज। नही तो प्रभुका गुण-हगार होगा ॥ जो०३ ॥ इति

पुनः (ठुमरि)

आज छविनीकी छाजेरे। समोसरण जिनराज आज ॥ नाभिरायके कुलमे चंदा। मरुदेवी राणीके नन्दा ॥ अजी मुख देख्या आपद दूर टले। सुख भेम विराजेरे ॥ आ०१॥

शीतलतरु हरतकी छईयां ॥ तीन छत्र धूज आगु सुहईयां ॥ अजी भा मंडल सूरजताप झीले । देव दुन्दभी वाजेरे ॥ स० २ ॥ कंचन मोली सिर सिवर शोहे । कुंडल युग श्रवणे जग मोहे अजिकर श्रीफल मोतिनकी माल गले । लख रतिपती लाजेरे ॥ आ०३ ॥ अतुलित महिमा कान सुनी । एलुभावे चंद कपुर थुनी । अजि आश फली मुज भाग भले । सुख संपति साजेरे ॥ स० आ० ४ ॥ इति

पुनः (थियेटर)

मैं अरज करुं, सूनो महाराज । पायो में चरण सरण राखोने प्रभुजी लाज ॥ सु०१ ॥ सुमति जिनन्दा मेरे । सुरत सुहानी तेरे । कुमति न आवे नेड़ । महिमा कहां लं देखो ॥ सफल घड़ी है आज ॥ सु०२ ॥ वैशाख मास जो आया । सहु लोग हरष पाया । रोग शोग दुख पुलाया । शुक्ल पक्ष देखो सोहे । पंचमी तिथि है आज ॥ सु०३ ॥ नविन मंदिर छाजै । जहां प्रभुजी विराजे । मानुं शशि सूरज लाजे । चलो सखी सव मिलि । प्रभुजीकुं पुजुं आज ॥ सु०४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो । अष्टद्रव्य लेके आय ॥ पुजुं प्रभुजीके पाय । मनहिमें हरष अति भयोही मेरो ॥ सु०१ ॥ आयो मैं तुमारे पास । पुरो मेरी अभिलाष । दीन-

चन्दु दिनानाथ जगत उजियारो। नामिलेगो एमो दाव राज सुधारो ॥ सु०२ ॥ इति

पुनः (ठुमरि)

नेमि जिन तुमरो दरस लागे प्यारोरे । दरस देख मन आनन्द आवे । पातिक हर गयो सारोरे ॥ ने०१ ॥ मै हु दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरिब नेवाज हो तुमहि । कृपा करी मोहे तारोरे ॥ ने०२ ॥ सेवककी प्रभु एहि अरज हे । भव सङ्कटसे निवारोरे ॥ ने०३ ॥ इति

पुनः

सूरत एसी सावरी । मे जाउ वारि २ । प्रभुजी एक अरज सुनो मोरी ॥ टेर० ॥ समुद्र विजेजीके नन्दन प्रभुजी सेवा देवी माता जिके नयननको भये गुलजारी ॥ सु०१ राजुलको पर नीज न आये। पशुवनको निरख रथ फेरके चले गये गिरनारी ॥ सु०२ ॥ नव भव भीत छिनमे तोडी । नेम राजुल मिल हुवे जब सुगतिके अधिकारी ॥ सु०३ ॥ दास आस पर अरज करतु हैं, मेहर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे । चरनणकी मे जाउ बलिहारी ॥ सु०४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी ॥ मेघ नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमङ्गलाके प्यारोजी ॥ सु०१ ॥

असो नर भव पायके प्राणि । नित नित वन्दन किजेजी ॥ सु०२ ॥ असे जिनजीको पूजत प्राणी । भव भव पातिक छिजेजी ॥ सु०३ ॥ दास तूमारो करत वीनति अजय अमर पद दीजोजी ॥ सु०४ ॥ इति

पुनः

हजूर तुमसैं कहुं मैं दिलकी वेजार पनमें जो वीती वतियां । ह०टेर । न धीर तनमें खुसी न दिलमें वेहाल पनमें भराई छतियां ॥ ह०१ ॥ सिद्धार्थ त्रिसला के नन्द सुनिये कृपाके सिन्धु हे वीरस्वामी । संसार वनमें कियो भ्रमन मैं चोरासि दलकी यह च्यार गतियां ॥ ह०२ ॥ कषाय कुमति कुकर्म मिलके दे मार च्यारुं तरफसे घेरयो । सदासे इनकी वेजासही है मैं मेरे दमसे उपाधि अतियां ॥ ह०३ ॥ रही न वाकी विपतकी वातें न जानुं तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहुं सरणमें निहाल कीजै अजैकी लागी चरनसै मतियां ॥ ह०४

पुनः

साहिव तेरी वंदगी मैं भुलता नही, भुलता नही साहव विसरता नही ॥ सा० टेर ॥ अष्टादश दोष रहित देव है सहि औरदेव अन्यदेव मानता नही ॥ मा० सा०१ ॥ मुनि है निग्रन्थ सो तौ गुरु है सहि और गुरु भैसधारी मानता नही ॥ सा०२ ॥ जीव दया सुद्ध सो तौ शास्त्र है सहि और शास्त्र

आस्या रुपी मानता नही ॥ सा० ३ ॥ दान शियल तप जप धर्म है सहि और धर्म विषय धर्म मानता नही। सा०४॥ मुक्ति रुपी सिद्ध शिला वांछता सहि संसार दुखजाल रुपी मेटीए सहि ॥ सा० ५ ॥ कहत मुनि खेत माल तारिये मोहि आवागमन मोरी मेटिये सहि ॥ सा०६ ॥ इति

पुनः

दीले नादानकुं समझाया चायगे। हालमे हमकुं भगति भली हुवे। सुभ शीयल संजमकुं सजवाय लायेंगे ॥ दी० ॥ अष्टकर्मोंकी प्रकतिका सञ्चय होए जाहिल। बंध वा उदय उदीरण सत्तामें तूं गाफिल। महाराजा मोहकी गति भाति से उलझा सामिल। सागर कोडा कोडी सतरे काठीया भव सामिल। चउनाणी अनगार जिनोंके हीये इस धाईल। अैसे कर्म मोह मदनकुं जीतावी चायेंगे ॥ दिल०२ ॥ इति

पुनः

आवो नेम रह जावो सदन, हमको न सन्तावोरे। आ०
ब्याहन आए सजके सजन, पशुवनकी सुन देख
नारि चले निज छाड वतन् तकसीर बतावोरे ॥
नेम जैसे चदवदन, मोहन मुरति श्याम वरण,
लागी नव भवकी लगन् मतछेह दिखावोरे ॥ ये-
। सजम दूती लागि श्रवन्, प्रभुको सिखाए नीके

फिरन् । प्रभु तारण नाम तुम्हारो तरण । रथ फेरिन जावोरे येरिर०३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरन् राजुल मन वेराग धरण लेउं दोड़ नेमि जिनजीकी सरण, शिवपूरतो दिखावोरे ॥ येरिशि०४ ॥ इति

पुनः (पहाड़ी)

कधी प्रभु पदमें मन लाया तो होता, अरे निरगुनका गुण गाया तो होता । पड़ा है वेखवर मायाके फंदमें, जगत जञ्जाल सुलझाया तो होता ॥ क०१ ॥ अब अवसर आमिला टुक सोच प्यारे, आतम हितकार प्रभु ध्याया तो होता ॥ क०२ ॥ तू है मनमोहनके त्रिशलानंद प्यारा । जिन सेवामें सुख पाया तो होता पुरायो आश चुनीकी प्रभुजी, दिल भर दरस दिखलाया तो होता ॥ क०३ ॥ इति

पुनः

शांति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे ॥ भला- भ० टेर ॥ श्रीजिनके मकरंद बैन । विरमी भव दुरगन्ध रैंण शिवपुरके सदासुख कंद दैन । समकितरस भीनोरे ॥ भ०१ कामित पूरण काम धेन । मद मोहके चूरण ठांम फैन, लहे मनको अली आराम चैन गुंजे अति झीनोरे ॥ भ०२ ॥ कपूर कहे जिनपदका अैन । उरधारो भवितार लैन । होय मुक्ति सेझ पर सार सैन । आगम कह दीनोरे ॥ भला ॥ इति

पुनः

दिवाना तेरे दरसका यार मै हु। जो रखता हु तुझसे सरोकार मै हु ॥ दि० ॥ तेरा ध्यान रहता है हरदम् मुझको। टुक एक महर कीजो लाचारमे हु ॥ दि० ॥ दया भाव धारो प्रभु चरणसे लगालो खबर लोगे मेरा गुणेगार मे हु। दि० ॥ दरसवेगी दिजीये दया कर चुन्नीको, जगन्नाथ तुम हो, तावेदार मे हु ॥ दि० ॥ इति

पुनः

ध्यानमे जिनके सदा लयलीन होना चाहिये, ज्ञान गुरु ज्ञानीसे ले परवीन होना चाहिये ॥ राह सञ्जम कापकड कल्यानकी सुरत मिले, काल गफलतमे सजन्, नाहक नखो ना चाहिये ॥ ध्या० ॥ धर्मकी खेती किया चाहे जमीकु साफ रख बीज समकितको हृदयमे सच्चेसे वोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ कामना मनकी सफल आनन्दसे पूरन भई, अबतो समता सेजउपर सुखसे सोना चाहिये। दास चुन्नी अपने घर आग नमे फूलेगा कलप। भव थिति पकनेसे मुक्ति फल सलोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ इति।

पुनः (ठुमरि)

श्रीआदिनाथजीका देख दरश दुविधा मोरी मिट गईरे आज दुवि० ॥ आनन्द आज भयो मेरो मन सिव सुख

चाहतहूं प्रभु हाथन जिन की मुरत चन्दनसे तनमनसे लपट गईरे ॥ आज दुवि०१ ॥ अष्टद्रव्य ले पूजन आये वीतराग के दरशन पाए जिनवांनी कांनासै सुनी दुरगत मोरी कट गईरे ॥ आ०२ ॥ काल अनादि मैं प्रभु फिरीयो कारजएक मेरोनासरीयो अब मैं तेरो दरशन पायो कुमति मोरी हट गईरे ॥ आ०३ ॥ जबलग मुक्तन आवैं नेडे तबलग भक्ति वसौ उर मेरे आत्म सुद्ध समकित धरके शिव रमणी वर लईरे ॥ आ०४ ॥ इति

पुनः (खाम्बाज)

जिनन्दकी मैं वारी छवि प्यारी, वारी जाउं वार हजारी जि० ॥ वदन छवि मांनुचंद शरदसी मेटो अशुभ अंधियारी जि०१ ॥ निरख चकोरी हरष भरानी नैनन मङ्गल कारी ॥ जि०२ ॥ चुन्नी तृप्त होत दरसनसे आसा पूरो हमारी ॥

पुनः

एहाल अपना कहूं मैं कासे, सजन विना भर भर आवै छतिया ॥ ए० ॥ न ताव तनमें न चयन दिलको विरहका मारा वेहाल मतिया ॥ ए० ॥ न कोई असा हकीम देखूं जो मेरे दिलको करार आवै, सखी स्वजनका खवर जो पाऊं, तो लिख लिख पठाऊं पतिया ॥ ए०२ ॥ जल विन मीन क्योंकर जीवे अरज इतना विचार देखो, एजीव जीवन

पिया दरश विन कटैगा कैसे अन्धेरी रतियां ॥ प० ॥ कपट के पट खोल आए सजन सखी गये दुख जनम जनम के । चुन्नी निरुपम दरसके आगे कहूं मैं अब क्या अनुठी बतियां प० ॥ इति

पुनः

छकी छबि वदन निहार निहार ॥ छ० ॥ प्रोखितपति अगमा गम कीनो विसरी विगत विहार ॥ छ०१ ॥ गये अनादि कालमे असे दीठी न हिय दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिय रूप रिझ वार ॥ छ०२ ॥ अन्तर एक महूरत अन्तर प्यार करी अणपार, लीने ज्ञान सारपद भीन्तर चेतनता भरतार ॥ छ०३ ॥ इति

पुनः (खाम्वाज)

जिनवर देख द्दगण सुख पायो ॥ जि० ॥ व्याकुलता मिट सुख भयो मेरे, रोम रोम हुलसायोरे ॥ सुमति प्रवेश॥ जि० ॥ अब हम जानो मेरे करम नत्रईयां सुगुरु वचन मन भायो ॥ हित उपदेश ॥ इति

पुनः

टुक दिलका चश्म खोल जिन आगमसे मन लगा आराध निजानन्द जगमे और, नसगा ॥ टु०१ ॥ परमादकुं विडार स्याद् वादमे पगा मतलब उसीका होयगा विवाद्

जिनतजा ॥ टु० २ ॥ सूता है अनाद कालसे मिथ्यात में पड़ा समकित नाही दिलमें चाहे मुगत कुं मगा ॥ टु० ३ ॥ इन्द्र चन्द्र वा धरणेन्द्र नृपति खगा, जिन धर्म सान मित्र और सर्वहेदगा ॥ टु० ४ ॥ परतीत ना भई जैसे हंसमे वगा, धरे भेष विन विवेक आपही आपकुं ठगा ॥ टु० ५ ॥ सतगुर जवा हर पाय निरख परखने लगा, निज ज्ञान हीए धार अनुभो सुरसेषगा ॥ टु० ६॥ कुटंव कैसा खेल इन्द्रजालमें पगा, जिन वक्स यों कहते पाय सिन्धु भोपगा ॥ टु० ७ ॥

पुनः

जिन नामको समरले क्या खूब वखत पाया है, मेरे हाथ नहीं आया सतगुरू वताया है, कहता है मेरा मेरा इहां तेरा कौन है, मायाके निसेमें जो वेहोस हो रहा है, माया न तेरी सङ्ग चले किस नीन्दसो रहा है, मातर पिता विरादर फरजन्द इयार मन घड़ी पलका हैं वसेरा फिर आता कौन है । सव सुखमें है सङ्गाति टुक सुनले इयार मन, एक लालजी श्रावक कहता घड़ि घड़ि, प्रभुका नाम सच्चा झूटा सव जतन है ॥ जिन० २ ॥ इति

पुनः

दिलदार नेम पियारेको समझाई लावोगे । कोई सम० जोदाई दरदहाल कहके उसे फिराके लावोगे ॥ दि०को० ॥

व्याहनके काज आयके, रथ फेर चले हो तुम। भव भवके नेह विचारके तुम फिरवी आवोगे ॥ दि०को० ॥ सङ्गदिल एसाजो कभी कोईभी होता है मुक्तिसे नेह लगायके मुझको बुलावोगे ॥ दि०को० ॥ सेताव अब चरणका शरणा मुझे दीजे। अजे अमर पद आप लिया। हमकोभी देवोगे, क्या राजुलको देवोगे। क्या दासनको देवोगे ॥ दि०को० ॥ इति

पुनः

दिलदा महरम ईयार मेरा, मीत आवेहो। मीत असेडा अष्ट भवन्दा नवमे भवजादू जानलावे हो ॥ दि० ॥ दुरजन साडोदादिन आखे। साजन रथ फिरी फिरी जावेहो ॥ दि० नेम कुवर पिया राजुल नारीको। अनुभव रसको रीझ पावे हो ॥ दि० ॥ इति

पुन॰

असे पीयारेकी लटक, को मे वारीया। मनमोहन त्रिभुवनमे तुहि प्रभु। ताडी सूरतकी वलहारीयां ॥अै०१॥ अति ह उदार निरुपम मूरत, दरशन आनन्द कारीयां ॥ अै०२॥ जुनी निरख परम सुख पावत, पूरण काज सुधारीया ॥ अै०३

पुनः

हमसे छलवल करके नेम गिरनारी गये गयेरे ॥ ह० ॥ लाए वराती व्याहन आए पशुवन सुनी पुकारेरे, जीव दया

शुंके कारणे, रथ फेरी गए गएरे ॥ ह० ॥ हाथ कङ्कना तोड़ करके, सिरके लोचे केसरे पञ्च महाव्रत जोग लिये । पद केवल लये लयेरे ॥ ह० ॥ अरज करत हुं पइयां पड़त हुं, वीनति करत कर जोड़रे । दास फतेकी एही अरज चरणां चित लहे लहेरे ॥ ह० ॥ इति

पुनः

राजकेसरीया तेंतो मन लीनोरे ॥ रा० ॥ तेरी सांवरी सूरत मेरो मनमें भाव, अब चढ्यो प्रेम वस मेरो मन कीनो रे ॥ रा०१ ॥ सुनी श्रवन मेरी मन भयो उचाङ्ग, मोसे रहो न जात वावरीसी करलीनोरे ॥ रा० २ ॥ करजोड़ी सेवक गुन गावे सूरत मोहन गारीरे ॥ रा०३ ॥ सेवक प्रभुजीका गुणगावे, तुं मन मोहन मेरोरे ॥ रा०४ ॥ इति

पुनः

श्याम सलूना चले रथ फेरीरे ॥ महाव्रत गई अति सहसावनमें, परणति सुमता केरीरे, सञ्जम लीनी, नेमनगीनो वीनती आनन्द घन केरोरे ॥ श्या०१ ॥ इति

पुनः

सहियो देखो बानी अमृतरस बरसै ॥ सहि० ॥ निरखत नैंन हुलसहिये हरषै २ ॥ स० ॥ अदभुत छवी श्री वीर प्रभुकी देखन कुं जियारा तरसे २ ॥ स० १ ॥ चालो सखी

आज समव सरणमे गोतम गणधर सरसे २ ॥ स० ॥ राय श्रेणिक राणी चेलना प्रभुको वदन जात नगरसे २ ॥ स० ॥ सुरनर तिरी भविजनके आगल अरथ अगम गम दरसे २ ॥ स० ॥ बालकहे धन वानी सुनेनर । सुमरण करत जिगरसे जिगरसे ॥ स० अमृ० ॥ इति

पुनः (इन्द्रसभाके चाल)

आयाहूं जिनराज से मैं अरजी करने आज । पार करो भवजलसे मुझकुं बांह पकड महाराज ॥ कहताहूं मैं अपनी तुमसे सुनियो देकर कांन । मुझकुं दरशन दीजिये मेरे दिल में हैं अरमांन ॥आ०१॥ दुशमन मेरे आयके करते है हैरान इनसे पला छोडाइयें तो मानेगे आसान ॥ तुमहो स्वामिन्द नाथजी और हम है खानेजाद । आशा है इक आपकी जरा दिलमे रखियो याद ॥ आ०२ ॥ देखा मैंने ढुंढके इस दुनियाके दरम्यान । मिला नही कोई दिलका महरम तुम असा भगवान ॥ कदम तुमारा देखके हम मनमें भंय खुशाल । सेवक अपना जानके अब जलदी करो निहाल ॥ आ०३ ॥ अवर किसीसे काम नही मेरे तुमसे है दरकार । सफल करो यह वीनती प्रभु पूरा करो करार ॥ वाचक श्रीइछचन्दका चन्द अजीरा नाम । चिन्तामण प्रभु पाशजी थे पूरण करदो काम ॥ आ०४ ॥ इति

पुनः

आयेथे पीया व्याहनकुं तुम सजके खुब वरात । तोरण से रथ फेर चले सो यह कैसी है वात ॥ सुनहो यादवराय जी तुमहो मेरे नाथ । जातेहो कहां छोड़के जरा पकड़ो मेरि हाथ ॥ आ० १ ॥ तुमहो मेरे अन्तरजामी नव भवके महा-राज । तुम सिवाय कोई नही जगमें मेरातो शिरताज ॥ आवो मेरे घरमें स्वांमी मन धर हरप अपार । अरज हमारी सुनियो साहव मुझपर दयाविचार ॥ आ० २ ॥ दिलकी दिल में रही है मेरे किसकुं करूं पूकार । मेंभी तुमरे सङ्ग चलुंगी आखर गढ़ गिरनार ॥ लिखा है लेख विधाताने सो कवण मिटावण हार । होनी थी सो हो गई अव तुमरे हाथ करार आ० ३ ॥ मुगति पूरी जानेका रस्ता धरलीयाहै आप । ज्ञान ध्यानसे दूर किया सब जगतजालका पाप ॥ राजमतीकी अरजी ऐसी सुनियो दीन दयाल । इन्द्रचन्दका कहे अवीरा करिये मङ्गल माल ॥ आ० ४ ॥ इति

पुनः

चिन्तामणी पार्श्वप्रभु अरज करुं में तुझकुं । अव मेरी अरज सुनी पार उतारो मुझकुं ॥ १ ॥ शत्रु मेरे अष्टकर्मोंने फंदमें फसाया मुझकुं । तुम विन और नही फंद छोड़ावे मुझकुं ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यान तप जप नहीं, उदये आवे मुझकुं

एक तेरा नामका आधार प्रभु है मुझकु ॥ ३ ॥ नरनारि सुर वर नित्य नमे है तुझकु। मेरा मनमे तो प्रभु ध्यान धरुं मे तुझकु ॥ ४ ॥ कल्याण निधान प्रभु अरज करे हुं तुझकु। चंद गोपाल कहे दरस देखावो मुझकु ॥ ५ ॥ इति

पुनः

कृपाल जिनसे कहुं मे मनकी प्रमाद पनमें जनमगमायो कृ०टेर ॥ सुक्षमनिगोद की पीड सही है बादरमें कुछ चैन न पायो ॥ कृ०१ ॥ अनन्त कालसे निकसत नांहि जनम मरणको फंद मचायो ॥ कृ०२ ॥ गिरि सरिताके उपल ज्यु मेन कोमल सहज स्वभावमें आयो ॥कृ०३॥ अब्द सख्याते विकल विकसे जलथल खेचर दुख लहायो ॥ कृ०४ ॥ श्री महीर जिनिन्द कृपासे मानव भव पन्योदय पायो ॥ इति

पुन० (तलाना)

देवि गावे नाचत शक्र शची। छम छम छम छन नन नन नन ॥नाचत० टेर ॥ श्रीऋधृति कीर्ति बुद्धि और लछमी छपन कुमारी और मातासीकी सेवना. नाभ राय राजा कुल कमल भान, तुम ऋषभ देवजीके सरन न न न न ॥ नाचत ०१ ॥ तम्बुरा सजिग बीण झाज मोरचङ्ग चङ्ग सरम नगारे और गावे सब रागरङ्ग, एक २ शक्र जहां एक २ शची सङ्ग नाचत मृदङ्ग गत गन न न न न ॥नाचत०२ ॥ ए१ सुरपरा

सुख वसु २ दन्त छाय, दन्त २ उपर सुरङ्गना समूह नाच्च, वाजत समीर गत सन न न न न ॥ नाच्चत ०३ ॥ प्रभुको ले न गई शुचि जिन माता पास, जाय जिन जननीको राचें निद सुखलाय, लायके जिनन्द दियो गोदमें प्रथम इन्द्र, वाजत घुङ्घरु पग झन न न न न ॥ नाच्चत ०४ ॥ लायके सुमेरु क्षीर नीरसे न्हवन कीन्हो, सव देव देवी मिल जनमको लाहो लीन्हों, धन भाग वाको जाने समे देखो हीरालाल, वाजत तम्वुरा सन न न न न ॥ नाचत ०५ ॥ इति

पुनः (खम्वाज)

सोहे सुरण गाती, सुहाती ॥ सो० ॥ सङ्गीत गत थेई २ ता ता थेईया ; नाचे नाटक साथी ॥ सु० १ ॥ वजावे मृदङ्ग भावे धां धां किट २, धां धां धां किट २ ध प म प धुनि जाति सु० २ ॥ ता धिलाङ्ग धुन किट २ धिन किट धिन्ना किट धिन्ना किट धा किट, धिन्ना किट धा धिन धा किट धाति ॥ सु० ३ जनम समय जिन जान आन सव, शिखर शैल जाति ॥ सु० ४ ॥ सूरी सुरिंद सव आल वाल मिल गाति गवाति आति ॥ सु० ५ ॥ इति

पुनः

तुभ्यं नमस्ते स्वामी । शान्ति जिनन्दजी दृग देखे परम आनन्दा, सुख पूनम चन्दा ॥ तू० ॥ जनमें प्रभु शान्ति

सुधारीजी । जगमे मारि निवारिजी । तुम शांति नाम हित कारी, मैं सेवाधारी ॥ तु०१ ॥ तुम दीनदयाल जगदयाला लाल्न पतिलालाजी, मैं सदाजपुं गुणमाला, धर प्रेमप्याला जी ॥ तु०२ ॥ तुझविन कौनहै मेरा, तुं साहिबहै मेराजी । हरोमिथ्यात घोरअंधेरा, काटो भवफेरा ॥ तु०३ ॥ तुमकल्प वृक्ष हितकारी । चिन्तामणि धारीजी । तुम पूरो आसाहमारी खुसी हो सो तुमारीजी ॥ तु०४ ॥ इति

पुनः

इस काया नगरमे आयके भूलि रहा है तु इस दिन न तेरी ईयाद पडे गाफल रहा है तु ॥ १ ॥ ईह सुवस चिमन से कुछ साथ लीजीये। निरगन्ध झुटे रङ्गमें फुली रहाहै तुं ॥ २ ॥ सदा बाहार धर्म्मको काहे नही करता, ज्ञानी गुरुके वचनमे दिल साफ रखना तु ॥ ३ ॥ इस प्रभुके नाम को जलदीमे ले शिताब, अजय अमर पद लेवेगे क्यों सोचता है तुं ॥ ४ ॥ इति

होरी

पुनः रागिणी रागसागर–ताल कवाली

अरनो सुनो सखि फागण आवे । चो नदी जो मोह होरी खिलावे । अ० । ना दिनमे गिरनार सिधाए तादिनते

मोहे कछु न सुहावै ॥ अ०१ ॥ मातपिता सब सुखके साथी ऐसा नहीं कोई पिया मिलावै ॥ अ०२ ॥ आयो वशन्त कट कले कामको विरहकी वानसे तान डरावै ॥ अ०३ ॥ हमकरहें जो पिया करलीनी जो कोई गिरकी राह वतावै ॥ अ०४ ॥ चन्दकपूर अपूरवनेहा राजुलको क्योंकर समझावै ॥ अ०५ ।

पुनः

सांवरी सुरत मनमोह लियो मेरो प्रभुजीसे ध्यान लगा ढंगी अरे मैतो उनहींसे ध्यान लगाउंगी ॥ सा० ॥ मन वच कायकरी एकांते जिनचरणे चितलाबुंगी अरे मैतो प्रभुचरणे चितलाबुंगी ॥ सां०१ ॥ अश्वसेननन्दन सहु जगवन्दन वामा के गुण गाउंगी अरे ॥ मै० सां०२ ॥ समेतशिखरगिर भावें फरसी सुधसमकित उपजाउंगी ॥सां३॥ श्रीचिंतामणि पास दरस तें परमानंद पद पाउंगी ॥ सां०४ ॥ लखमणपूरसे श्री संघ हरखै समेत शिखर चित लाउंगी॥सां०५॥ संवत अठारे वांणवें वरसे माघ तेरस सुख पाउंगी ॥ सां०६ ॥ श्रीजिनचंद गुरुसुपसाये नन्दी वर्द्धन गुणगाउंगी ॥ सां०७ ॥ ईति

पुनः धुरिया सोरठ

पर घर खेलत मेरो पिया कछु वरजो नहि येहनें भइया ।प० नकटोरिनके सङ्ग नचत हो तत तत तत तत ता थेईया

चङ्ग बजावै गारी गावे कौन बनाव बन्यो दइया ॥ प०१ ॥ खर असवारी चमर डुहारी श्याम वदन शिरपर धरिया, विष्ठा रगरी जुती पयरी लाज मरत हूं मै मइया ॥ प०२ ॥ इह सब चेष्टा पर परिणतकी निज धरमें रमिंह भविया आतम सीस गुरु हो मेलै ज्ञान सार जिनमे मिलिया॥प०३॥ इति

पुनः

कुन खेले तोसू होरीरे सङ्ग लागोई आवे ॥कुन०॥ अपने जो अपने मन्दिरसे जो निकसी कोई सांवरी कोई गोरीरे । सं ॥ चोवार चदन अवर अरग जा केशर गागर घोरीरे । सं भर पिचकारी मुखपर डारी भीजगई तनसारीरे ॥ स ॥ आ नद घन प्रभु रसभरि मुरति आनंद रहि चा ओरीरे ॥

पुनः प्रभाति

होरी आई सजन सुखदाईरे रग सुरङ्ग अटपट सम्भार रुचसे धार अध्यातम सेली आतम गुण वरदाईरे ॥ हो०१॥ धीर विवेक परम सवेगी समता नार सुहाईरे ॥हो०२॥ मृदु गुण अबीरलिये आनन्दसे ज्ञान गुलाल मजाईरे ॥ हो०३ ॥ ध्यान साध भरे पिचकारी सन्मुख ताक लगाईरे ॥ हो०४॥ रगमे रंग मिले जब चुन्नी घर २ हरष वधाईरे ॥ हो०५ ॥

पुनः

मधुपनमे जाग मची होरी ॥ मिरि मर मेर मरा

होरी ॥ म० १॥ ज्ञान गुलाल अबीर उड़ावो, समता केशर रंग घोली ॥ म०२ ॥ अमृत रूप धरम जिनवरको शुद्ध क्षमा कहे करजोडी ॥ म०३ ॥ इति

सिन्धु काफी-ताल दीपचन्दी

विस्रयनको परसङ्ग। चेतन छोड़ दे ॥ इ०१ ॥ गीरोई फीरत विललात फरसवस। वान्धोई फिरत मातङ्ग ॥ चे०१॥ कण्ठ छिदायो मीन आपनो। रसनाके परसङ्ग। नेत्रवीसे कर दीप सीषापे, जलजल मरत पतङ्ग ॥ चे०२ ॥ षटपद जलज मांहि फस मुरख, खोयो अपनो अङ्ग। वीन शब्द सुन श्रवणे ततखीन। मोही भयोहै कुरङ्ग ॥चे०३॥ एक एक इन्द्री चलत वहुदुख पायो है सरभङ्ग। पांचो इन्द्री चलत महादुख। ईम भाषत देवचन्द ॥ चे०४ ॥ इति

पुनः

हांरे तुंतो प्रभु भज विलंब न करहो। होरीके खेलईया शिव फगुवा मागन वरहो ॥ हो० ॥ नरभवमांनु वंसत ऋतु फुले समकित वासना धरहो ॥ जिन ॥ अराधि जन तिहां मधुकर गुञ्जत। प्रछना मकरन्द हो ॥ हो० ॥ सासना वासना वासित कोकिल वोले मधुरेसुर हो ॥ जि० ॥ जिनमतलाल गुलाल अरगजा। छिरकतसुभ मति जनहो। चङ्गमृदङ्ग तिहां नयनिरमल। अवीर अरगजाधरहो तालकंसालगुनावली वाजै

खेले चिदानन्द घर हो ॥ हो॰ ॥ अनन्त विरज जिन होरी खेल। न्याय भवोदधि तरहो ॥ हो॰ ॥ इति

पुनः

मेरे पियाकु कोईमनावोरे। जिरा होरी खेलु मेरीसजनी १ ॥ शमता केशर दया पिचकारी। ग्यान गुलाल मंगावोरे ज॰२॥ समकित गागर जलभर लावो सञ्जम रंग लगावोरे ॥ ज॰३ ॥ श्याम सुन्दर मेरा प्राण पियारा चन्द वदन दिख-लाय जारे ॥ ज॰४ ॥ नेम कुमर धन राजुल राणी, पहत अधिर गुण गावोरे ॥ ज॰५ ॥ इति

पुनः

नईरे नार नव रग वनायो। अपने नेमजीके घर मेरे नईरे ॥ आवो मोन्यों केसु फुल्यो। फुल्लो सगलो वन्नमेरे ॥ न॰ ॥ उपशम रसको रग भयोहे, अबीर अरगजा धरकेर न॰२ ॥ पञ्च सुमति खेलें अब रहीड शील सदाके घरमेरे। न॰ ॥ रान मन्योहे सुभमति मनोको। कुमतिसखीरो उर हेरे ॥ न॰ ॥ फगुआ दो अर छोलो अविचल। महानन्दके घर मेरे ॥ न॰ ॥ इति

पुनः

सुमति सदा सुखदाई हो। खेलन आई रोरी॥ पुनानंद गुरुद पीद संग। मनमणी आन मिलाई हो ॥ खे॰ ॥ निज

गुण वागमे सहज वंसन्ते । मौज मची मनभाई हो । खे० ॥ ध्यान समाधि भवनमें बैठे । रसभरि खेले गुसांई हो ॥ खे० ॥ प्रभु आन शिरछत्र विराजे । विहुनय चमर ढोलाईहो ॥ खे० ॥ आगम वचन सङ्गीते वहुगम । वाजित्र विविध वजाईहो॥खे० शान्तिसुधारस प्याले पीवत । आनन्द लीन जमाईहो ॥ खे० यावि‌ध पीउ प्यारी मीली खेलत । सव सुखसम्पति पाईहो खे० ॥ भांनुचंद्र प्रभु पास पसाए । शिवसुख हर्ष वधाई हो खे० ॥ इति

पुनः

सत गुरुने मोहे भङ्ग पिलाई, अंखियामें छा गई लाली सत० । भावकि भङ्ग मरमकी मिरची शयिलकी साफी वनाई सत०१॥ ज्ञानका घोंटा कीयाकी कुंडी, घोटनवारो मेरासांई स०२ ॥ ऐसी भङ्ग सुघड़ नर पिवे अजय अमर हो जाई ॥ सत०३ ॥ आनन्द घनकी एही अरज है शिव रमणी वर जाई ॥ सत०४ ॥ इति

पुनः

चिन्तामण चित धावोरे । वंछित फल पावो ॥ सकल भविकजन मिलकर आवो । राग फागुन गुण गावोरे ॥वं०१ अविर गुलाल लाल सङ्ग लावो । भर २ मुठियां उडावोरे । वं०२ ॥ कुङ्कुम केशरकुं छिरकावो । भाव सुकल मन भावोरे

वं॰३ ॥ अङ्गी चङ्गी पुहप बनावो। दीपक ज्योति दीपावोरे व॰४ ॥ दरस परस करके सुख पावो। पुन्यभण्डार भरावो रे ॥ वं॰५ ॥ वाजित्र बाजा विविध बजावो। नृत्य सङ्गीत नचावोरे ॥ वं॰६ ॥ अमर सिन्धु आनन्द वधावो। जिनजी से लय लावोरे ॥ वं॰७ ॥ इति

पुनः

सावरो सुखदाई जाकी छवि बरणि न आई ॥ सा॰ ॥ श्रीअस्वसेन वामानन्दन की कीरति त्रिभुवन छाई, समेत सिखर गिर मण्डण प्रभुको देख दरस हरसाई, हृदय मेरो अति हुलसाई ॥ सांव॰ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो आज आनन्द वधाई, तीन भुवन को नायक निरख्यो प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जनम कहाई ॥ साव॰ २ ॥ प्रभु के सरस दरस विन पाये, भव भव भटक्यो मे भाई, अब तेरो चरण शरण चित चाहत, बाल कहे गुण गाई, प्रभुजी से लगन लगाई ॥ ३ साव॰ ॥ इति

पुनः

नेम निरञ्जन ध्यावोरे वनमे तपकीनो ॥ ने॰ ॥ सब जादव मिल व्याह रचा आए, पहिर जराव जरी नारे ॥ व॰ १ ॥ कङ्कन मुगट हाथ सु तोडे पशुवन परचित दिनारे ॥ वन॰ ॥ सहसावन की कुञ्ज गलिन मे पञ्च महाव्रत

लीनोरे ॥ वन० २ ॥ जिनवर भूषण कहे भविजनने, सहु जगमें जस लीनोरे ॥ वन० ३ ॥ इति

पुनः

मत निरखो नारी पराई, भलाहो मत निरखो । टेक ॥ वेद पुराण किताव कहतहै, जाणों लोग लुगाई, राजा डण्डे दुरगति जावे, लोक माहे लघुताई, होएगी कन्त तुमारी ॥ मत०१ ॥ काजल ढोले छवीकीशोभा, विगड़त देखोविचारी, तप जप दान पुन्य सव करणी, सुधरत कैसे तुमारि ॥ रखगो उलटी प्यारी ॥ मत०२ ॥ परनारी तज विषय छोड़ दे जीव दयादिलधारी, सतगुरु सङ्ग गुनिजन सेवा, विनय कहे सुखकारी, सुनिये अरजी हमारी ॥ मत०३ ॥ इति

पुनः

मनमोहन गजगतकी गामिनी । आज चली गिरनार कामिनी ॥ म० ॥ सुन्दर रूप वनाय सखी सव शिखर शैल जैसे चमके दामिनी ॥ म०१ ॥ नेम प्रभुको व्याह मनायो । मोसे पीत लगाई भामिनी ॥ म०२ ॥ मैने तजुंगी नवभव केरी प्रीत वनी जैसी इंदु यामिनी ॥ म०३ ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती वाल कहे भई मुगत धांमिनी ॥ मन० ॥ इति

पुनः

होरी खेलिये नर वहुरण ऐसो दाव ॥ होरी ॥ दया

मिठाई रसभरीरे तपमेवा परधान। शील अथानो अति भली चारी सञ्जम नागर पान ॥ हो॰१ ॥ समता केशर घोरीयेरी दमवाको छिरकाय ज्ञानपिचरको पकरके वारी मुगत वधु चितलाय ॥ हो॰२ ॥ लेश्या मादल भाव डफरे क्रोध मान दोयताल सुमतिपाचको अग्गजो वारी नवतत्व लेहो गुलाल होरी॰३ ॥ ऐसे साज बनायकेरे ऋषभदेव गुणगाय श्रीजिन चन्द्रइम खेलता वारी । भव २ पातक जाय ॥ हो॰४॥ इति

रागिणी दरबारी–ताल पञ्जाबी होरी

जावो २ नेम पिया थारी गति जानीरे । इतनी अरजी मोरी नांहि पिया मानीरे । जा॰टेर। जबआहे किन्हासंग,सह सावन लीये रग, सोलेसे राणीके विच राधारुखमनीरे॥ जा १ ॥ पिचकारी जलभरी विमल कमलकरी, अबीर गुलाल विच फैसी झीनी छानीरे ॥ जा॰२ ॥ पशुवन दयाकरी भए व्रतधारी । आगेहो मिलुंगीतुमसे सुनो केवल ज्ञानीरे । जा॰ ३ ॥ अधमउधारी त्रिभुवन उपगारी कपर प्रभुकेपाय जैसें दूधपानीरे ॥जा॰४ ॥ इति

पुनः

जाव जाव तुम सखी मेरी । पिया विना न खेलुं होरी १ ॥ आई बसन्त नहीं कन्त फुलफुले देखो टेरी टेरी ॥पी॰ २ ॥ राजुल कहे सुनो सखी । पीउ चरणमें ध्यानन रखी ।

आउंगी प्रीतम सङ्ग सखी खेलुंगी फाग ध्यानथकी ॥ पी० ३ गिरिकी डगरी पकडुं सकड़ी छोडुं न सङ्ग एक घड़ी॥जा०४

पुनः रागिणी काफी–ताल दीपचन्दी

हमारेको खेले असी होरी। जामें आवागमनकी डोरी। ह० ॥ टेर ॥ सीलशृङ्गार पहरसतवागा । सुमति पिचरको लोरी ॥ ज्ञान गुलाल अबीर उडावो ॥ सत्य उदककुं ग्रहोरी झराझर कर्मकुं तोरी ॥को०॥ क्रोध मान माया मद त्यागी कुमति कदाग्रह छोरी । धर्म्मशुक्लकूं ग्रहन करीने । उपशम श्रेणी लहोरी अपूरव प्राप्त करोरी ॥ को०२ ॥ सुमति वेद निधि कुमुद अब्दधर । ज्ञानवसन्त पढोरि । भक्तिकरणसे महिमा वढेगी ॥ पद्मोदय सुखदोरी । अरजी प्रभुजीसेमोरी को०३ ॥ इति

पुनः

फागुण खेलो भाई । तनमन ध्यान लगाई ॥ फा०टेर ॥ सुभमतकी पिचकारी हाथलै । कुमति नीर छडकाई । ज्ञान गुलाल अबीर उडावो । अष्टकर्म भगजाई । चिदानंद निर्मल थाई ॥ फा०१ ॥ दानशील तपभाव अरगजो । क्रोधकी पङ्क रचाई । धर्म शुक्ल लेश्याको मादल द्वादश भावना भाई । पद्मोदय हरषवधाई ॥ फा०२ ॥ इति

पुनः (चाल थियेटर)

होरी आई वरस दिनसे ॥ हो० ॥ अबीर गुलाल झोली भरके, लावो, उडावो, मत जावो, हम तजके॥हो०॥राजुल विनती करे पीवसे, मै हूं तव दासी, चरणकी, नही छोडु ॥ हो० ॥ मोह प्रीत सबको छिनमे, जीत्या, जातीहे, पीवसङ्ग मे गिरनारी ॥ हो० ॥ सेवक बीनती करे प्रभुसे दीजे निरमल, शिवपद सुखकारि ॥ हो० ॥ इति

पुनः

होरी आई मेरो मन भयो प्रसन प्रसन भयो प्रसन न नहे ॥ हो० ॥ व्रज वनिता मिल नेम कुमर सङ्ग फाग रमत हिये हसन हसन हसनन नहे ॥ हो०१ ॥ वाजत ताल मृदङ्ग झांझ डंफ वीणाकी धुनि जिम मेघ गरजन गरजन ननहे ॥ हो०२ ॥ उडत गुलाल लाल भये वादल, हरि हलधर हीये हरखन हरखन हरखनन नहे ॥हो०३॥ मवल आधार चरण जिनजीको सेवकु नित दीजिये दरशन दरशन दरशन ननहे हो० ४ ॥ इति

पुनः

होरी खेलो नेमसे धाय धाय। दुरजन की लाज मरो फेरे वन्दाय ॥हो०॥ ज्ञानगुलाल अबीर उडावो क्षमाको रङ्ग लाय लाय ॥ हो० ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई, ध्यान

धरूङ्गी मैं गाय गाय ॥ हो० ॥ अष्टकर्मकी खेह उड़ादो ज्ञान हीयेमें लाय लाय ॥ हो०२ ॥ जगतचन्दकी अरज वीनती शरण लहीं मैं तेरी भाय भाय ॥हो०३॥ इति

पुनः

नेमनाथ वर पायोरे सजनी धन राजुल तेरो भागरी ॥ ने०॥पहलीमें पूजुं ऋषभजिनन्दा जिन मोही दियो सुहागरी ने० ॥ सोनेको छत्रधरो सिर उपर गल मोतीयनकी मालरी ने०१ ॥ चम्पा चमेली दोना मरुवा फुल चढ़ाउं गुलावरी ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती मुख वोलो जयजय काररी ॥ ने०२ जयरङ्गकी प्रभु अरज वीनती भवभव दिजो दिदाररी॥ने०॥

पुनः

नेम पियाविन उरण ऐसी, मेरे सङ्ग होरीको खेलईया । नें०॥ परउपगारी वाल ब्रह्मचारी शील सनेह धरईया ॥ने० जगमें जैन धरम परकास्यो दशविध धरम बतईया ॥ने०१॥ राजुल शिव पटराणी करके खेलत खेल सवईया ।।ने०।। जय रङ्ग पाठककी प्रभु लज्जा, तुमबिन कोन रख बईया ॥ नें० ॥

पुनः

किनडारी पिचकारीरे, मैंतो सारी भिज गई ॥ कि० ॥ चोवा चन्दन अविर अरगजा केशरकी छवि न्यारीरे ॥ मे० १ ॥ बत्तिस सहस गोपी मिल खेलत, वासुदेवकी नारीरे ॥

मे०२॥ नेम कुमारकुं मनावन चाली । बोलत भोली वारीरे मे० ३ ॥ नवल कहे ऐसे नेम कुमरसुं, हसी हसी देत है तारीरे ॥ मे० ॥ इति

पुनः (प्रभाती)

आज भविक जन होरी खेले, ज्ञान गुलाल सुहाया है। कर पिचकारी करुना कीन्ही, समता रङ्ग भराया है ॥ आ० शील सुरङ्गी चीर विराजे, तनमन ध्यान लगाया है ॥ आ० धप मप धु धु किट मादल बोलें, रिम झिम ताल बजायाहे आ० ॥ तननन तुम तननन आलापे, सारी गम पदनी गाया है ॥ आ० ॥ घन नन घुम घुङ्घरु बाजे, थङ्गी थन थेई नृत्य मचायाहे ॥ आ० ॥ जिनमन्दिरमे इनविधहोरी, सुमतिसखी सङ्ग लाया है। सुद्ध चेतना अनुभव चाहे ऐसा खेल मचाया है ॥ आ० ॥ इति

पुनः

होरी आई तुं बैठी है क्या बेखटक । उठ सुमति सखी झट रङ्ग ले चटक ॥ हो०१ ॥ सील सिङ्गार पहेर सत बागा छोड असत मेटो मनकी भटक ॥ हो०२ ॥ खेले फाग समकित गुरु धरके, परही के सब जञ्जाल पटक ॥ हो० ३॥ ज्ञान गुलाल लगाय सुरतसु, प्रभुपदपङ्कजमे जा अटक ॥ हो०४॥ शुभ मतकी पिचकारी हाथ ले अशुभ करम तक मार सटक

हो० ५ ॥ चुन्नी निज आतम रङ्गमें खेल, देख सुघरकी अनुठी लटक ॥ हो० ६ ॥ इति

पुनः

मेरो परम सनेही पास कुमर, मोकुं याद आवतहै वार वार ॥ मो० १ ॥ अखसेन वामाजीके नन्दन भवजलथी मोहि तार तार ॥ मो० २ ॥ घड़ि घड़ि पल पल ध्यान धरत हूं, येही जगतमें सार सार ॥ मे० ३॥ मैं तुम चरण शरण लपटो हूं, अवीर कहे गुण धार धार ॥ मो० ४ ॥ इति

पुनः

होरी आई तूं समताकुं भजले झटक, पर गुणकी सङ्ग तैं अलग पटक ॥हो०॥ परिहर मन नृपकी चञ्चलता निज कुं पहिचान सटक ॥ हो० १॥ निसिदिन जिनवरके गुणगावो विषय कषायको छोड़ चटक ॥हो० २॥ सरधा शीयल संतोष सञ्जम धर, आगम अमृत पीवो गटक ॥ हो० ३ ॥ कहत अवीर सुमति सखि सङ्ग, होरी खेल जिनराजानिकट ॥ इति

पुनः

प्यारे सम्भव जिनकुं समरले । ऐसी होरीया खेलन जिन जावो वावरे ॥ स० ॥ आगम उदधि सुधारस जलसें । घटकी गगरियाकुं भरले ॥ ऐसी होरी० ॥ हित उपदेशक सुगुरु बतायो, शिवकी डगरिया पकड़ले । परम ब्रह्म पद

अन्तर भीतर आतम अनुभव करिले ॥ऐसी होरी०२॥ सम कित नाव सुदृढ अवलम्बन, भवसागरकु तरले ॥ ऐसी हो० चाल सुमतिसङ्ग खेलत हिलमिल, परम परम पद वरले ऐसी होरीया०३ ॥ इति

पुनः (ताल खेमटा)

मैने देखो अनोखी होरीरे ॥ मे०१ ॥ सहसावनकी कुञ्ज गलिनमे, अनुपम सोर मच्योरे ॥ अ०१ ॥ यादव पति श्री नेमि कुमरजी । सुमता सखी मिलगोरी ॥ अ०२ ॥ समता केशर भर पिचकारी, डारत है बरजोरी ॥ अ०३ ॥ ज्ञान गुलाल उडे अतिभारी । अबीर उडे भर झोरी ॥अ०४॥ कपूर कहे प्रभु मोहे खिलावो । अरजी सुनो पक मोरी ॥ इति

पुनः

या विध धूम मचाउँ; जपे मन जिनगुण गावुं । काम क्रोध मद मोह लोभकी, धूर अबीर उडाउँ, ले समता जल भर पिचकारी, तृष्णाकु छिरकाउं, अध्यातमपद गमोही ध्याउं ॥ या०ज०१॥ फेर उमङ्ग सुरङ्ग भर्ग हिय । अङ्ग अनङ्ग न साऊं, जिनचरनण ह धार सदा और मन सुर चग वजाउ फेर दुर्गति नहीं जाउँ ॥ या०२ ॥ धूधर धामा धम देघर ध्यान अवीर धकाउँ, मनवचकाय लाय समकित हुं गहिरी रंग लगाउं, ज्ञान गुण तेसोहि पाउँ ॥ या०३ ॥ इति

पुनः (कालंगड़ा)

सुमति सखी सङ्ग लेके आई, पहुची श्रीजिनजीके द्वार ॥टेर॥ विनय सुरङ्ग पिचकारण भरके । खेले होलीकी वहार सु०१ ॥ मन मृदङ्ग तन डफली वजावे गावे होलीकी वहार सु०२ ॥ रेजन मूरख कब हुन तजिये, ऐसी होलीकी वहार सु०३ ॥ अजय अमर पद चाहै सोई, देखे मुक्तिकी वहार॥ सु०४ ॥ इति

पुनः

पन्थीड़ा पन्थ चलैगो, प्रभु भजलै दिन च्यार ॥ पं० ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठी सब परवार ॥ पं०१ ॥ बाल पणेमें खेल गमायो, जौवन मायाजाल ॥ पं०२ ॥ बूढ़ापण आयो धरम न पायो, पिछै करत पूकार ॥ पं०३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जासी, पाप पुण्य दोयलार ॥ पं०४ ॥ दया मया कर पास एवन्ती; अब तेरोही आधार ॥पं०५॥ इति

पुनः

हम जानतहै तुम तारोगे ॥ हम० ॥ नाभिराय मरुदेवी को नंदन, मेरी और निहारोगे ॥हम०१॥ आदि जिनेश्वर अंतर जामी; स्वामी कछु न विचारोगे ॥ ह०२ ॥ जगजींवन जग तारक तुमहो, एही विरुद संभारोगे ॥ह०३॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरिंदकुं साहिब; भवजल पार उतारोगे ॥ ह०४ ॥ इति

पुनः

तेंविसमा जिनराज, जोड थांहरे कौन जुडेगा ॥ ते० ॥ अश्वसेन तात वामादेवी माता, तूं तारण संसार ॥ जो०१॥ कमठ विडारण नागकुं तारण संभलाव्यो नवकार ॥जो०२॥ विविध कुशल कर जोड़ीने विनवै भव भव दिज्यो दीदार॥ जो० ३ ॥ इति

पुनः ताल यत्

निसदिन जोटं थांरी वाटडी घर आवोनी ढोला ॥ नि० मुझ सरिसा तुझ लाख है, मेरे तुंही अमोला ॥ नि०१ ॥ जोहरी मोल करै लालनका, मेरो लाल अमोला ॥ जिसके पटन्तरको नहीं, उसका क्या मोला ॥ नि०२ ॥ कौन सुने किसपे कहुं, किस मांडुं चोला । तेरा मुख दीठे टले, मेरा मनका झोला ॥ नि०३ ॥ मीत विवेक कहे हितं, सुमता सुन बोला, आनन्द घन प्रभु आवसे, सेझडी रङ्ग रोला ॥ इति

पुनः

साहिब आदि जिनन्द चन्द ; मोहे अपने रङ्गमे रङ्गदे एटेक ॥ रतन वर्या रिद्धी तेरी मैं देखी ; सो जव मुझकु सजदे ॥ साहि०१॥ रङ्ग मिच्यात लग्यो है आदिको, साहिब उनकु मिणदे ॥ साही०२ ॥ तुम सम साहिब औरन देख्यो आप समान तुं करदे ॥ सा०३ ॥ इति

पुनः

मत कर मान गुमान, योवन धन ठग है। वेळूकी भीत उसको मोती, कोई घड़ी कोई पल है ॥ यो०म०१ ॥ नदिया गहिरी नाव पुराणी, तारण हारा जिन है। रूपचन्द कहे नाथ निरञ्जन, आखर जङ्गल घर है ॥ यो०म०२ ॥ इति

पुनः

अैसी विध तेनें पाईरे, कछु करणी करजा ॥ अै० ॥ उत्तम नर भव जैन धरम रुचि, सुगुरु सेवा सुख दाईरे ॥ जासू पातक झरजा ॥ अै०१ ॥ हिंसा जूया झूठ परत्रिया परिग्रह मद फल चोरीरे, घट जायगा दरजा ॥ अै०२ ॥ तप जप सञ्जम सील दान कर, आनन्द सुमति सुहाईरे, भव जलनिधि तरजा ॥ अै०३ ॥ इति

पुनः (वारमा)

एक समे घन श्यामकी सुन्दरी, नेमसे ब्याहकी होड ज्युबांधी ॥ एक० ॥ एटेक ॥ चुएको कीच फुलेलको रेला, गुलालको मेह अबीरकी आंधी ॥ एक०१ ॥ सोधेको नीर लीए सब वाला, गाती धमाले नएण रस साधी ॥ एक०२ ॥ त्रियाकोखेल देखी मुसकाने, मान्यो विवाह अन्तरकी लाधी एक०३॥ ब्याहकुं छोड़ चले गिरनारी; समाधीको गेह चरण

आराधी ॥ एक०४ ॥ करमकुं चूर लीए शिवलीला, ज्ञान उद्योत कला गुण बाधी ॥ एक०५ ॥ इति

पुनः (परोज)

एसी होरी होई रहि चम्पा नगरमे, फागुणका दिन आवे ॥ एसी०१ ॥ केशर घोरी भरीरे कचोली, प्रभु पूजे भले भावे ॥एसी०२ ॥ अनोपम प्रेम पिचरकी अदभुत, भावना अबीर सोहावे॥ ए०३ ॥परमानन्द परम सुखदाता कीर्त्ति जगमे कहावे ॥ एसी०४ ॥ इति

पुनः (काफी)

जोलु अनुभव ज्ञानरे, घटमे प्रगट भयो नही ॥ जो० ॥ तोलु मन थिर होत नही छिन, जिम पीपरको पानरे, वेद भण्यो पण भेद विना सठ पोथी थोथी जानरे ॥ घ०१ ॥ रस भाजनमे रहत द्रव्य नित न होत रसपहिचानरे, तिमसुभ पाठी पण्डित कुंपण। प्रवचन कहत अज्ञानरे ॥घ०२ ॥ सार लह्याविन भार कह्योश्रुत परदृष्टान्त प्रमाणरे, चिदानन्द अध्या तम सेली समज परत एक तानरे ॥ घ०३ ॥ इति

पुनः

रङ्ग रचायो बनाय सखी झट पट। होरी खेलुं मे आज भली चट पट ॥ र० ॥ पाच नार इक मन्दिर अन्दर एक से एक चढी नट खट ॥ रङ्ग० ॥ पांच नार पचरङ्गी बनीहे

निस दिन मोसे करत खट पट ॥ र०३ ॥ एक होयतो पकड़ ले आंउ पांचुंकुं केसे करूं गट पट ॥ र० ४ ॥ चुन्नी आतम रङ्ग चटकले। पांचोंकुं आज करूं लथपथ ॥ र०५ ॥ इति

पुनः

अलख लख्याकिम जावें हो, एसी युगति बतावें ॥ अ० तनमन वचनां तीन ध्यान धर अजपाजाप जपावें, होय अडोल लोलता त्यागी, ज्ञान सरोवरे न्हावेहो ॥ ए०१ ॥ सुद्ध स्वरूपमें सकति सम्भारा ममता दूर बहावे, कनक उपल भिन्यताकाजे जोगानल उपजावेहो ॥ ए०२ ॥ एकसमें समश्रेणी रोपी चिदानन्द इम गावे, अलखरूप होय अलख समावे अलख भेद इम पावेहो ॥ ए०३ ॥ इति

पुनः (पीलु वारमा)

मेरे काहेको लगावो तनमें। अतर गुलाब और चोवा चन्दन ॥ मे० ॥ सखी मेरे मलमल जात अङ्गनमें ॥ मे० ॥ नेमपीया गीर वनको सिद्धाए, एसे सुनीवेननमें ॥ अ० ॥ वे महाराज गए किस कारण, सोच रही मेरे मनमें ॥ अ० ॥ स० ॥ पशुवनकी उन करुणाकीनी, तो टेर सुनी काननमें। में ॥ उनहीके सङ्ग राम लिखाउँ, फेरन फिरूं भववनमे ॥ सखि मे० ३ ॥ इति

पुनः

पारशनाथ दया कर मोपे, द्यो दरशन तुम आजरे ॥ पारश० ॥ मैं हू अनाथ अधीन तुमारे। तुम प्रभु त्रिभुवन ताजरे ॥ पारश०१ ॥ कीर्ति जवर सुणी प्रभु थारी, तारण तरण जिहाजरे ॥ पारश० ॥ विरद विचार रखो प्रभु मेरी वाह गहेकी लाजरे ॥पारश०२। दे नवकार थे नाग उधारी साहिव गरीव निवाजरे ॥ पारश० ॥ कहत अवीर चिन्तामन पारश। जय जय जय जिनराजरे ॥ पारश०३ ॥ इति

पुनः

देखत छवि सुखकारी अरिहारे लाला ॥ दे० ॥ विमल प्रभुके चरण कमलकी ॥ दे० ॥ टेर ॥ अदभुत रुप अनोपम महिमां तीन भुवण शिनगारी ॥ अरि०१वि०दे० ॥ समेत शिखर पर तप जप करिके ; प्रभु वरियां शिवनारी ॥ अ० दे० ॥ अवीर कहे मेरे अैसे प्रभुकी वारी जाऊं वार हजारी अ०३ वि० दे० ॥ इति

पुनः (वारमा पीलु)

फागुनके दिन चार रहे हे, आज काल परसुं तरसुरे ॥ टेर ॥ मनमें ऊमङ्ग पीयासे मिलनकी ऊञ्यो न जाय विना परसुरे ॥ फा०१ ॥ चोवा चोवा चन्दन और अरगजा, मीत लगी राजुल घरसुरे ॥ फा०२ ॥ ज्ञान गुलाल अवीर ऊडाऊ

/

गढ़ गिरनार जाय फरसुरे ॥ फा० ३ ॥ मो परे किरपा करो मोरे स्वामी प्रभु चरणापर चित धरसुरे ॥ फा० ॥ इति

पुनः

में तो ममताको दूर भगाई आज जिनराजसे प्रीत लगाई ॥ मैं० एटेर ॥ समताकी ढाल संवरका गोला शरधा की तोप चड़ाई, विनय वारूद विवेक पलीता तप तरवार वनाई ॥ आ० १ ॥ शील सनाह सञ्जमकी सेना सत्य संवेग सहाई, ज्ञान गजेन्द्र सुमति पटराणी मन्त्री सन्तोष सवाई ॥ आ० २ ॥ दान चतुर मुख दूत भलेरी दयाकी धजा फहराई, भाव भवनमें चेतन राजा नौवत नय वजवाई ॥ आ० ३ ॥ पाप रिपुदल जेर करणकुं असी करकै सझाई, कहत अबीर भविक जिनवरसे होरी खेलो गुणगाई ॥ आज० ४ ॥ इति

पुनः (राग वाहार)

दरशन विना तरस रही अखिया, जिन दरशनकुं चलो सखियां ॥ दरश० एटेर ॥ तुम पदकजमें लपटन चाहुं जेसे गुड़ पर रहे माखियां ॥दरश० १॥ भमत फिरयो भववनमें तुम विन, जीव भयो अतिही दुखियां ॥ दरशन० ॥ शमकित रतनके जतन कियो नहीं मनमें कूड़ कपट रखियां ॥ दरशन० ३ ॥ अबीर चन्द कहत है जिनसे, अरज हमारी ए लखियां ॥ दरशन० ४ ॥ इति

पुनः (रागिणी पीलु वारमां)

आज मिल्यो तृसला सुत प्यारा, हे कोई होरीको खेलन हारो ॥ आज० १ ॥ सिद्धारथ नृप नन्दन कहिये तीन भुवन को हे उजियारो ॥आ०२॥ खत्री कुण्ड प्रभु जनम लियो हे सुगति पावापुर जाय पधारा ॥ आज० ३ ॥ ज्ञान गुलाल अवीर मंगावो केशर चन्दन भर पिचकारा ॥आ०४॥ सेवक की प्रभु यही अरज है भव सागरसे पार उतारा ॥ आज०५

पुनः

होरी खेले वामाजीके नन्द, आतम रङ्गसं, ज्ञान गुलाल सञ्जम भर झोरी भाव वसन धरि अङ्ग ॥ हो० १ ॥ अशुभ करम मल सकल धुवाने ध्यान गङ्ग जल सङ्ग ॥ हो० २ ॥ दास चुनी जगनाथकी शोभा निरख हरख मन रङ्ग ॥ इति

पुनः (डफकी चाल)

टुक सुनले नाथ अरज मेरी । तुमहो तीन भुवन के नायक, अब मै शरण ग्रही तेरी ॥ टु०१ ॥ रिपु जन मिलि मुझे बहोत सन्तावे, काटो अष्ट करम मेरी ॥ टु० २ ॥ अब मुझ दरशन अनुभव दीजे मेटो भवभय दुख फेरी ॥ इति

पुनः

जय बोलो ऋषभ जिनेश्वरकी । जनम अयोध्या माता मरुदेवा नाभि नन्दन जगतेश्वर की ॥ ज०१ ॥ धनुष पाच

से काया जिनकी लञ्छन वृषभ धरेश्वर की ॥ ज० २ ॥ लख चौरासी पूरव आयू, कुल इक्षाकु करेश्वरकी ॥ ज०॥ दास चुन्नी प्रभु सेवा चाहे तारण तरन तारेश्वरकी ॥ ज० ४ ॥ इति

पुनः

ऐसी दाव मिलोरी लाल क्योंन खेलत होरी, मानव जनम अमोलक जगमें सो बहु पुन्य लहोरी, अवतो धार अध्यातम सेली आयू घटत थोरी थोरी, वृथा नित विषय पगोरी ॥ ऐ०१ ॥ सुमत सुरङ्ग सुरुचि पिचुकारी, ज्ञान गुलाल सजोरी, झट पट धाय कुटिल कुमता ग्रही दाढि मालि सियल करोरी, सदा घट फाग रचोरी ॥ ऐ०२ ॥ धर्म धमार वजाय सुघर नर प्रभु गुण गाय नचोरी, सुजश गुलाव सुगन्ध पसारो निरगुण ध्यान धरोरी कहा अलमस्त परोरी ॥ ऐ०३ ॥ इति

पुनः (धमाल)

खेलन दे मोहे होरीरे, मेरी इच्छा जिनन्दसुं ॥ खे० केशर चन्दन अगर कुम कुमा अतर अबीर कि झोरीरे ॥ मेरी०२ ॥ जिन अङ्ग अङ्गिया नव रङ्ग पूजो नवविध नव रङ्ग कोरीरे ॥ मेरी०३ ॥ नृत्य करो घन मादल वाजी प्रभु मुख आगे दोरीरे ॥ मेरी०४ ॥ भावना भावो नर भव लाहो

लीजै भव जश भोरीरे ॥ मेरी०४ ॥ इण विध पूजो लीजै लाहो आनन्द विजै कर जोडीरे ॥ मेरी०५ ॥ इति

पुनः

एसो नर भव पाय, गमायो ॥ टेक ॥ धनको पाय धरम नही कीनो चारीत्र चित नही लायो, श्रीजिन देवको सेवा नही कीनो ; मानुष जनम लजायो जगतमे आयो न आयो ए०१ ॥ विषे कषाय वडी उर अन्तर आतम बलसो घटायो तज सतसङ्ग भयो तूं कुसङ्गी, मोक्ष कपाट लगायो, नरकको राज कमायो ॥ ए०२ ॥ कन्दमूल मद मांस भक्षणकुं नित प्रति चित्त लुभायो, श्रीजिन वचन सुधारस तजके नयनानद पछतायो, श्रीजिनको गुण नही गायो ॥ ए०३ ॥ इति

होलीके ख्यालकी चाल

सम्भव जिनचन्दा, मेटे भव फन्दा, भविजन वृन्दका ए०) सावथी नगरी भलीसरे अलकापुर समजाण रायजी तारी सोभ तोसरे तेजे तरणी समांनजी ॥ स०१ ॥ अनुपम मणि गुणमय सोभतोस रे सेना दे जी माय तसु कूखे जिन जनमियासरे कञ्चन कोमल कायजी ॥ स०२ ॥ तन अवगाहन धनुप च्यारसत हय लञ्छन परधांन राज ऋद्धि सुख भोग वेसरे दो गेंदुक अनुमानजी ॥ सं०३ ॥ लोकांतक सुर वचन सुनीने दीधो वरसीदान अनुपम मक्षम आदर्योसरे

निश्चल मेरु समांन जी ॥ सं० ४ ॥ करम सघन वन दूर करीने पांम्या पञ्चम ज्ञान, प्रभुजी सजल जलद सम ध्वनि करि बरसै सुधा समानजी ॥सं०५॥ जिन गुण वचन अमृत तणोंसरे श्रवणकरे भविप्राणी आतम गुण गण उल्हसेसरे प्रगटे परम कल्यानजी ॥ सं०६ ॥ द्वादश गुण मनि राजतो सरे सुमति गुप्ति गुणवांन, मिथ्या कुमति निवारक प्रभुजी तारक पोत समानजी ॥ सं०७ ॥ भूमण्डलमें विचरतासरे शिखर शैल पर आया मास खमण अणशण करीसरे शिव रमणी सुख पाया ॥ सं० ८ ॥ आज जनम सफलो भयोसरे दीठो प्रभु दीदार तन मन दृग हुलसित भयोसरे सफल भयो अवतार ॥ सं०९ ॥ आज मनोरथ मुझ फलोसरे फली मनो रथ माल आज आनन्द घन उलट्यो सरे प्रगट्यो पुण्य विशाल ॥ सं०१० ॥ गज गुण नन्द चन्द सम आश्विन शरद पूणम कविवार अमृत चन्द सूरीश्वर भावै वन्दै बारम्वार जी ॥ सं०११ ॥ इति

पुनः

श्रीरेसुमति जिन वन्दिया हारे ॥ जि० ॥ जयपूरके मांहि ए आंकड़ी ॥ मेघ पिता माता है मङ्गला, जनम अयोध्या ठांम ॥ मघा नक्षत्र रास सिंह सोहे ; क्रौञ्च लञ्छन अभिरामजी ॥ ज०१ ॥ चालीश लाख पूरवनो आयू धनुष

तिनसै देह, पाणी ग्रहण करी सुख भोगवि व्रत वरियो प्रभु तहजी ॥ ज०२ ॥ दोय हजार ग्यारसे साधु चवदे पूरवधार समेत शिखर पर मुगति सिधाए, सिव सुख दीजै सारजी ज०३ ॥ उगणीसे बाईश असाढे सुदि एकम ने भाव विनय विमल मुणि वरके शिष्य है, सुखलाल गुणगायजी ॥ ज०४

पुनः

चन्दा प्रभु तेरी महिमा अब जाणी । तोहे भजके तरे केते प्राणी॥ चन्दा०आंकडी॥ चन्द पुरी महसेन नरेश्वर तसु देवी लछमा राणी तासु उदर प्रभु जनम लियो है आप भए केवल ज्ञानी ॥ प्रभु० १ तोहे० ॥ बालपणेमें खेलमे खोयो सोयो नीदमें भर ज्वानी अबतो बूढापो आण रजू भयो जी भ लगी पलटापानी ॥ प्रभु० २ तोहे० ॥ सूत्र सिद्धान्त कछु नही सुनियो नाहि सुणी में जिनवाणी विरत नही नही आखडी लीनी बोधि भाव नही सनमाणी ॥ प्रभु० ३ तोहे० ॥ अधमाधम में शरण पुकारुं आयो जांण तो है महादानी पतित उधारण पावन कीजे राखो गुलाब अरज मांनी ॥ प्रभु० तोहे० ॥ इति

पुनः

सिद्धाचल भेटो भाई, यह अवसर पाई ॥ सिद्धाचल

तीरथ है मोटो, महिमा वर्णि न जाई। पूर्व्व निनानुवार ऋषभ जिन, समोसरया गिर आई ॥ सिद्धा० १ ॥ पापी अभव्वि नजर न देखे, इन गिरको चित लाइं। भविक जीव सुध भावसे तरी गये, नरक तिजञ्च मिटाई ॥ सिद्धा०२ ॥ नरभव पाय भेट्यो नहीं सिद्ध गिरि, गरभावास कहाई। वार वार नर भव न मिलेगो, करले सुकृत पुण्याई ॥ सिद्धा०३ ॥ इनगिर साधु अनन्ता सिधा, शिवरमणी पदपाई। शास्वता तिरथ कहिये मोटो, सव जीवन सुखदाई ॥ सिद्धा०४ ॥ सम्वत् उगनिश उपर तेविश फागुण सुकल सहाई। एकादशी दिन अरज करत है, चरनन सिस नमाई ॥ सिद्धा०५ ॥

पुनः

जय वोलोरे पास जिनेश्वरकी ॥ ज० ॥ मस्तक मुगट सोहै मन मोहन, अङ्गिया सोहे केशरकी ॥ ज०१ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखण्डित तिनको श्याम घटा जैसी जलधरकी ॥ ज०२ ॥ कमट उड़ाय वाय ज्युं वादल, जीत करी अपने घरकी ॥ ज०३ ॥ वालपने में अदभूत ज्ञानी, करुणा किधी विषधरकी ॥ ज०४ ॥ अष्टकर्म दल सवल खपाये, श्रेणी चढ़वा शिवपुरकी ॥ ज०५ ॥ माता वामा उदर जिन जायो राणी अखसेन नरेश्वरकी ॥ ज० ६ ॥ कहे जिनचन्द मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज०७ ॥ इति

पुनः

मधुवनमे जाय मची होरी ॥ म० ॥ सिरि सङ्घ खेले सदा होरी ॥ म०१ ॥ ज्ञान गुलाल अवीर उडावो समता केशर रङ्ग घोली ॥ म०२ ॥ अमृत रूप धरम जिनवर को शुद्ध क्षमा कहे करजोड़ी ॥ म०३ ॥ इति

जिन्दुवाकी चाल

उछी जिन्दगानीरे कारणै भूलो फिरेरे गमार । धरम रतन आयो हाथमें युंही दीयो तैने हार ॥ उ०१ ॥ पांचुंही इन्द्री तुं पोषतो लागो विषयन् लार, जगत लागो इण फन्द में डुबा केई नरनार ॥ उ०२ ॥ तन धन जोवन थिर नहीं बिजली झबकार, ओसका जल जैसें जीवना जातां लागे नहीं वार ॥ उ०३ ॥ जगतको सुख सुपनां जिसों करो मनमें विचार, जिनदास कहैं सुण जीवडा ममताकुं मार ॥ उ०४

हिरजाकी चाल

अरज हमारी सुन लिजीये, जिनमतके राजा ॥ अ० ॥ दुशमन क्रोधादिकलगारे, पञ्च प्रमाद ठगेरा, तेरै काठिया केडन मूके विषयादिक रहे घेरारे ॥ जि०१ ॥ आठ करम मोहे नाच नचावै जोनी लाख चौरासी निजगुण विन कछु

कामनसरियो तुमसे कहुं अविनाशीरे ॥ अ० २ ॥ धरम २ करतो जग ढुंढै धरम मरम नहीं जाणे, साचै धरम विना लहो कैसे तत्व बात पहचानेरे ॥ जि० ३ अ० ॥ भववन माहे चेतन भमतां समकित कुं नहीं पायो गिलगिचिया जिम गुडता २ अवके नर भव आयोरे ॥ जि० अ० ॥ समरथ साहिव जान प्रभुजी तुम दरसन मन भायो मुगति नगरकी डिगरी दिजै अवीर चन्द गुण गायोरे ॥ जि० ५ अ० ॥ इति

पुनः

मेरे आदालत प्रभुजी कीजिये ॥ जिन शासन नायक मुगति जाणेंकी डिगरी दिजीये ॥ जि० टेर ॥ खुद चेतन मुदई वना है, आठु करम मुदाला। दावा रस्ता मुगति मारगका। धोखा देजाय टालाजी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया तलवाना खिमा विचारी। सिज्झाय ध्यान मजमुन वनाकर। अरजी आन गुजारीजी ॥ जि० २ ॥ मैं जाताथा मुगति मारगमें। करमुंने आघेरा। धोखा देकर राह भुलाया। लुट लिया सव डेराजी ॥ जि० ३ ॥ वहोत खराव किया करमुने, चौरासीके मांहि। दुख अनन्ता पाया मैंने। अन्तपार कछु नांहि जी ॥ जि० ४ ॥ सच्चे मिले वकिल कानूनी। पञ्च महाव्रतधारी। सूत्र देख मसोदा कीना। तव में अरजी डारीजी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमति तिन गुप्तिए।

आठु गवा-बुलावो। सील असेसर वडा चौधरी । इसकुं पृछ मंगावो ॥ जि०६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी। हुवा सफीनाजारी । हाजरआवो जुवाप लिखावो । लावो साबूता सारीजी । जि०७ ॥ आंठ मुदाले हाजर आये । मोह मुकत्यार बुलाये । च्यार कषाय अरु आठे मदकुं। साथ गवाईमे लाय्जी ॥जि०८ टेर ❀ मुदालेकी ❀ ॥ जिन शासन नायक। झुठा दावा है चेतन जीवका ॥ जि० ॥ हमनें नहीं वहकाया इसकुं। ए हमरे घर आया । करजा लेकर हमसे खाया एसा फरेव मचाया ॥जि०९॥ विषय भोगमें रमिया-चेतन घाटा नफा नजाना । करजदार जव लारे लागा । तवलागा पिस्तानजी ॥ जि०झू० १० ॥ हाजर खडे गवाह हमारे ॥ पूछिये हालत सारा । विनां लिया करजा चेतनसे । फैसे फरे किनागजी ॥ जि० झु०११ टेर ॥ ❀ चेतन कहे शताधी मांही सुन शासन सिरदार । इमानदार हैं गवा हमारे । जाणे सव संसार जी ॥ जि० मे० १२ ॥ मे चेतन अनाथ प्रभुजी । करम फरेवी भारी । जीव अनन्ते राह चलतकुं । लूटे चौरासीमें डारीजी ॥ जि० १३ ॥ वडे २ पण्डित इण लूटे। एसा दम वतलाया । धरम कहा और पाप कराया एसा परज चढायाजी ॥ जि०में०१४ ॥ हिंसा मांहि धरम वताया तपस्या मेती टिगाया । इन्द्रिय सुखमें मगन करीने । झुठ

जाल फैलायाजी ॥ जि॰१५ ॥ एसा करो इनसाफ प्रभुजी अपील होन नही पावे। हक रसि चेतनकी होवे। जनम मरण मिट जावेजी ॥ जि॰१६ ॥ ज्ञान दरशन करी मुनसफी दोनुकुं समझाया। चेतनकी डिगरी कर दीनी करमुका करज वतायाजी ॥ जि॰१७ ॥ असल करज जो था कर्मोंका चेतन सेती दिलाया। सुध सञ्जम जद करी जमानत। आगे का सूद मिटायाजी ॥ जि॰ १८ ॥ आश्रव छोड़ सम्वरको धारो तपस्यां सें चित लावो। जलदि करज अदा कर चेतन। सिधा मुगतिको जावोजी ॥ जि॰ मे॰ १९ ॥ सुध सञ्जम जद करी जमानत चेतन डिगरी पाई। फागुन सुद दशमी दिन मङ्गल सन उगनीसे अठाईजी ॥ जि॰मे॰२० ॥ इति



घाटोकी चाल

डगरा वताय दे पहारिया में वन्दुं पारशनाथ ॥ ड॰ ॥ देश देशके जात्री आए मधुवन कियोहै मुकाम ॥ ड॰ १ ॥ ले चलुं विकट पहारिया जिहां श्रीजिनराज ॥ ड॰३ ॥ मोती दुंगा मुगा देहुं देहुं हीरा अनमोल ॥ ड॰४ ॥ तु मोहे दरश करायदे देहुं रतन जड़ाय ॥ ड॰५ ॥ टुंक टुंक पर प्रभुजी कूं वन्दे नेंनां भयाहै निहाल ॥ ड॰६ ॥ हरखचन्दके साहिब साचै शिवपूर कियोहै मुकाम ॥ ड॰ ७ ॥ इति

पुनः

मेरो मन वस कर लीनुं जिनवर प्रभु पास ॥ मे० १
अंखिया कमल पांखडिया मुख सुन्दर जास ॥ मे० २ ॥
नील वरण तनु सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे० ३ ॥ काने
कुण्डल दोय झलके, शशी सुरज सम भास ॥ मे० ४ ॥
प्रभु तुम चरण रही ने, समरु सासां सास ॥ मे० ५ ॥
लालचन्दकी अरज सुणीजे पूरो वन्छित आस ॥ मे० ६ ।

अलीया वेलावल

जीयारे जांणे मोरी सफल घडीरे ॥जी०॥ सुत वनिता धन जौवन मातो गरभ तणी वेदनविसरीरे ॥ जि०१ ॥ अति अचेत चेतत कछु नाहि पकरी टेक एहाल करीरे। आय अचानक काल पंछेगो ग्रहेगो ज्युं नाहर वकरीरे ॥ जि०२॥ सुपनेका राज साच कर राचत माचत छाय गगन वदरीरे आनंदघन हीरो जन छाडि नरमोह्यो माया कंकरीरे ॥ जि०३ ॥

पुनः

ऐसे जिनचरणे चित ल्याउरे मना ॥ ऐसे०॥ अरिहंतके गुण गाउरे मना ॥ ऐसे जिन० ॥ ए आंकणी ॥ उदर भरन के कारणरे, गौआं वनमे जाय ॥ चारा चरे चिहुं दिस फिरे, वाकी सुरति वछरुआ मांहरे ॥ ऐसे जिन०१ ॥ सात पांच सहेलीयारे, हिलमिल पाणी जाय । ताली दिये हड

हड़ हसेरे वाकी सुरति गगरुआ मांहेरे ॥ ऐसे जिन॰२ ॥ नटुआ नाचे चोकमें रे, लोक करे लखसोर। वांस ग्रही वरतें चढे, वाको चित्त न चले कहुं ठोररे ॥ ऐसे जिन॰३ ॥ जूआरी मनमें जूयारे, कामीके मन काम। आनन्द घन प्रभु युं कहे, तुम ल्यो भगवंतको नामरे ॥ ऐसे जि॰४ ॥

मल्हार

निरमल होय भजले प्रभु प्यारा सब संसारसे है प्रभु न्यारा नि॰१ ॥ पार्श्व प्रभुको दरशण करलें भव जल पार उतारन हारा ॥ नि॰ २ ॥ जाको अविचल जोत विराजे अलख अगोचर रूप उदारा ॥ नि॰ ३ ॥ अकलंकी अविनाशी अदभुत तीन भवन बिच है प्रभु न्यारा ॥ नि॰ ४ ॥ जाके गुणको पार न पावे कहन सके कोई जस विस्तारा ॥ नि॰ ५ ॥ जाके भजन से पावत प्राणी, सुद्ध क्षमा कल्याण उदारा ॥ नि॰ ६ ॥ इति

हिरआकी चाल

चिन्तामन स्वामी अरज हमारी सुन लिजीये ॥ चि॰ अ॰ ॥ तुम राजा हम प्रजा तुमारी निश दिन करते सेवा सु निजर करके मुझकुं दीजे अविचल सुखका मेवाहो ॥ चि॰ १ अ॰ ॥ तुम शिववासी हम जगवासी एही बड़ा अंधेरा इसकुं आप बिचारो मनमें कैसे होय निवेराहो ॥ चि॰अ॰२

दीना नाथ दयाल कहायो जग जीवन जिन राया ऐसा विरद तुमारा साहिब सरदहि मन भाया हो ॥ जि० ज० ३ चरण कमल की सेवा चाहूं एही विनती मेरी रतन अबीर दया निधानकी लागी सुमतिको डोरीहो ॥ जि० ४ ज० ॥

[illegible] चाल

जिनजी दर्श नहु दीजै, प्रभु [illegible] [illegible] कीजै। मैं आयो [illegible] तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ज्ञान प्रकाश [illegible] ॥ जि० ॥ [illegible] प्रभुजी पर उपकारी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हरीजे ॥ जि०

पुनः

प्रभुजी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तुम [illegible] ॥ प्र० ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ प्र० १ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] २ प्र० ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३ प्र० ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] । [illegible]

झाड़ी विषम पहाड़ी एकोहि नाम तिहारो ॥ सा०३॥ भूधर की प्रभु एही अरज है आवा गमन निवारो ॥ ४सा० ॥

पुनः

तेरी सुरतसे जिन मेरा जुहाररे ॥ ते० ॥ वखत उदे भया सकल विघन गया, निरख दीदार में मगन भयारे ॥ ते० ॥ सकल सुरन्द केरा मन मधुकर मेरा ॥ तेरा चरण कमल पर दिया घेरारे ॥ ते० ॥ अमृत सिन्धु दया जिन जननी जया, शिव चन्दपर पीया करमयारे ॥ ते० ॥ इति

पुनः

मेतौ जोती फिरूं जिन रायारे । नेम श्याम नहीं पायारे ॥ मे०१ ॥ एकवन ढुंढ़ दूजे वन ढुण्डे । मेतो ढुंढ़ लिया वन सारारे ॥ ने०२ ॥ पांवमें पिञ्जनी गले विच माला, मेतो सेली को साज्ञ वनायारे ॥ ने०३ ॥ रूप चन्द कहे नाथ निरञ्जन, मेतो प्रभु चरण सुख पायारे ॥ ने० ॥

डोमनीकी चाल

प्रभुकुं भजले मनुवा तेरा अवसर बीताजायरे ॥ घड़ी २ पल २ प्रभुकुं ध्यावो तेरा जनम अकारत जायरे ॥ प्र०१ ॥ लख चौरासी जोनीमें भमतही मानव भव नही पायारे ॥ प्र०२ ॥ धन रमणीके खातर भटके वछ रमणी धन नहीं साथरे ॥ प्र०३ ॥ पञ्च इन्द्री के वसमें पड़के खबर नहीं

तें घिमरायारे ॥प्र०४॥ रतन सुन्दर प्रभुजी के आगे लुली२ लागे पायारे ॥ प्र.५ ॥ इति

पुनः

देखो परव पजूसण आया सब दुनियामें आनन्द छायारे ॥ दे० ॥ केई करें पूजा केई सुणे पोथी केई शुभ भावना भायारे॥ दे०१ ॥ केई पालें शीयल केई करें तपस्या केई कुछ दान दिलायारे ॥ दे०२ ॥ केई सामायक केई पडिक्रमणा केई पडह अमारि वजायारे ॥ दे०३ ॥ धरमकी करणी भवजल तरणी श्रीमुख प्रभु फुरमायारे ॥ दे०४ ॥ जिन शासन जिनपरव जिनन्दके अमीरचन्द गुणगायारे ॥

भरथरीकी चाल

रे जीव! जिनधर्म्म कीजीये। धरमना चार प्रकार, दान शील तपभावना, जगमें एतलो सार ॥ रे०१ ॥ वरस दिवस ने पारणे आदीसर सुखकार, इक्षुरस दान वहि रादियो श्रीश्रीअंसकुमार ॥ रे०२ ॥ चम्पा बार उघाडियो चालनी काढ्यो नीर, सतीय सुभद्रा जशपयो शील सुरगिरी धीर ॥ रे०३ ॥ तपकर काया सोखवी जरस निरस आहार वीर जिनन्द वखानीयो धन धन्नो अनगार ॥ रे०४ ॥ अनित्य भावना भावतो धरतो निरमल ध्यान। भरत आरीसा भवनमें पाम्यो केवल ग्यान ॥ रे०५ ॥ एह जिन धर्म्म सुर

तरु समो जेहनी शीतल छांह । समय सुन्दर कहे सेवता । सुगत तणा फल मांण ॥ रे० ६ ॥ इति

पुनः

पारश प्रभु चिन्तामणि मेरे, चरण कमल वलिहारी । अश्वसेन वामाजीके नन्दा, अलख अगोचर धारी ॥ पा० ॥ काशी देश वनारसी नगरी, निरुपम सुख हितकारी ॥ पा० केशर चन्दन कुंकुम घसिके, नृत्य करे नरनारी ॥ पा० ॥ सुरनर मुनि तिह लोक विद्याधर, जै जै जै करधारी ॥ पा० ॥ ले दिक्षा प्रभु केवल पायो, तिन लोक सुखकारी ॥ पा० ॥ जिन कल्याण सूरी कमलोंमें, आश्या पूरो हमारी ।

ठुमरी

चलो सजनी जिन वन्दनकुं मधुवनमें मेरा सांवरिया । चलो० ॥ एटेर ॥ आस पासमें जङ्गल झाडी पग पग मांहे जल भरिया ॥ च० १ ॥ षट ऋतुकौ सुन्दर तिहां सहिना जैसे सुरकी फुल वरिया ॥ च० २ ॥ खल हल गरजन गिरि नीझरना मांनू नभ नव वादरिया ॥च० ३॥ सङ्घ सकल मिल दरशन आवै देश देशके जातरिया ॥ च० ४ ॥ करजोडी प्रभुके गुण गावे थेई थेई नाचत अपछरिया ॥ च० ५ ॥ कहत अवीर मेरे पाश जिनन्दके चरण कमल पर चित धरिया ॥ च० ६ ॥ इति

पुनः

आज अजव छवि जिनवरकी भवि सव मिल निरखन जईयेरे ॥ आ० ॥ परव पजूसण आया मेरी सजनी जिण वरका गुण गईयेरे ॥ आ०१ ॥ चमकत अङ्गियाकी ज्योति झिगामिग लखदिन कर छवि छइयेरे ॥ आ०२ ॥ कल्प सूतरकी वाचना सुणके भवदुख दूर पुलइयेरे ॥ आ० ३ ॥ व्रत पचखाण करो जिण पूजा समकित जतन करइयेरे ॥ आ० ॥ श्री हेम चन्द सुरी सरभापे मन वंछित फल पईयेरे ॥ आ०४ ॥ इति

पुनः

रथ चडि जदुनन्दन आवत है, चलो सखी सव देखन कुं । मोर मुकट पीताम्बर सोहे गिरनारीकुं ध्यावत है ॥र० तीन छत्र और तीन सिंहासन चौपठ चमर ढोलावत है ॥ च० ॥ लाल चन्दकी एही अरज है, सव सखी मङ्गल गावत है ॥ च० ॥ इति

पुनः

जिनके हृदे भगवन्त नहीं जेनर अवतार लियो न लियो जान विना घरवाम वस्यो करि लोभ मलिन पीयो न पीयो जि०१ ॥ मदिरा पान पीयो घट अन्तरि जल छून शुद्ध पीयो न पीयो। आन मानकी घातज कीनो करुणा भाव हीये

न हीये ॥ जि०॥ रूपवान गुणपांन सबे एक शील विना नलिया नलिया । कीरतवन्त सदा जीवतहै अपजशवन्त जीया न जीया जि०३ ॥ धाम माहि कछु वनि नहीं आवत ओर व्यापार किया न किया । द्यानति एक विवेक विना नर दान अनेक दिया न दिया ॥ जि०४ ॥ इति

पुनः

सुनीये सबकी कहियेन, कछु एसे रहिये इस वागड़में । करिये व्रत सञ्जम नेम सदा तेसे तरीये भव सागरमें ॥सु० दान शीयल तप भावना करके जेसे सन्त ऊजागरमें ॥ सु० रसखान प्रभुजी कों ईथों भजले जैसा नागरका चित गागर में ॥ सु० ॥ इति

हिरामन तोताकी चाल

मेरे मनको वैरागी कर गया । समुद्र विजय शिवा देवीके नन्दन नेम कुमर मोहे तजगया ॥ १ ॥ छपन कोट जादव ले आये तोरनसे प्रभु फिर गया ॥ २ ॥ पसुवन जीव का करुणा कीणी मुजे अवगुण सिर धर गया ॥ ३ ॥ गड़ गिरनार पें जाय पहुंचे पांचु, ईन्द्री मन दम गया । तज संसार दीक्षालें रुचिमण तिन लोक जश भर गया ॥ ५ ॥ प्रभु वैरागी में वैरागीन काम क्रोध सब जल गया ॥ ६ ॥ चाहत चरण कमल की सेवा मधुकर हो मन रह गया ॥ ७

तुम प्रभु तारण पतित ऊधारण अष्ट करमको दहगया ॥ ८
सन्द फकीर वाणीधर गुरुकी जैन धरममे तरगया ॥ इति

दादरा

वदन परिवारी जांऊ नाभीके नन्दा । वदन० ॥ एटेक
नाभिके नन्दा वारि प्रथम जिनन्दा, वृषभ लञ्छन सुख
कन्दा ॥ वदन०१ ॥ भविवन कमल विकाश दिनन्दा, नमत
नरेंद्र सुर इन्दा ॥ वदन०२ ॥ भवदव ताप हरनकुं चन्दा,
धीरज गुण ज्यु गिरीन्दा ॥ वदन०३ ॥ असरण सरण चरण
सुख कन्दा, विनय नमत तुम वन्दा ॥ वदन०४ ॥ इति

रेखता

मुझे है चाय दरशनका, निहारोगे तो क्या होगा, गही
अवतो शरण तेरी । उवारोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥ सुनो
श्रीनाभिके नन्दा, परम सुख देन जगवन्दा मेरी विनती
अपावनकी, विचारोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥ फसामे कर्म्म
के फन्दा मुझे तुम विन छुडावे कौन, तुहि दातार है जगमें
चितारोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥ या भव सागर अथाहीमे
झकोरे दुखके निशदिन , मेरी है नाव अति झजरि, उता-
रोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥ अधम उद्धारन पूरणके, सुमति
की सेज टुक दीजे, कुमतिके कूपसे अवके निकारोग तो
क्या होगा ॥ ६ ॥ इति

पुनः

घरी धन आजकी एही, सऱ्या सब काज मोमनका, गये अघ दूरि सब भजिके, लख्या मुख आज जिनवरका । १ ॥ विपति नाशी सकल मेरी, भरा भण्डार सम्पतका, सुधाके मेघहू वरषे ॥ लख्या० २ ॥ भई परतीत हू मेरे सही हो देव देवनका, टुटी मिथ्यातकी डोरी ॥लख्या०३॥ विरुद ऐसी सुन्यो मैंतौ जगतके पार करनैका, नवल आनन्द हू पायो, लख्या मुख आज जिनवरका ॥ ४ ॥ इति

पुनः

जगत पति पाश जिनराया, दरससे चित्त उलसाया, कुमुद जिम देखके चन्दा, भयो परम आनन्दा ॥ १ ॥ देवन के देवजिन देखे, जनम तवही भयो लेखे । भवो भव एह मुझ देवा औरनकी मैं नाकरुं सेवा ॥ २ ॥ चिन्तामणि रत्न कुं पाई, काचकुं कौन ल्ये ध्याई, लालचन्द दास है तेरा, हरो मुझ भव तणा फेरा ॥ ३ ॥ इति

पुनः

जिनराज आज में तेरे दरशनकुं आया हुं ॥ महाराज० श्रीसीमन्धर सामीसे मेरा नेह लगाया हुं ॥ महा० ॥ चौरासी लाख जोनीका मैं अन्त लाया हुं ॥ महा० ॥ कोई पुन्य संयोगसे मानस कहाया हुं ॥ महा० ॥ भूला हुं मद मोहकी

छाये था न पायाई, इय वाल रुपमें मेरा योंहिं गमायाई ॥ महाराज० ॥ इति

खेमटा

कासे कहुं नेम विन वतिया, हांरे झुक आई अन्धेरी रतियां, छपन कोटि जादव सङ्ग लायो, व्याहनको आये सइया ॥ का० ॥ तोरणसे रथ फेर लीया है, हारे, चढ गये गिरकी वटीया ॥ का० ॥ नेम राजुल मिल मुक्ति सिद्धाये हारे मोहे तार, पकड लेहो वहियां ॥ का० ॥ हांरे कैसे पटाउं पतिया ॥ इति

पुनः

वीर प्रभु तेरी दोस्तीमे, मेरी सुमता सखी मेहरवान भईरे ॥ वीर० ॥ आप नही आवे वोधा पठावे तेरी सूरत पर कुरवान भईरे ॥ वी० ॥ शासन नायक एही अरजहै। दीजे दरश वडी वार भईरे ॥ वी० ॥ आसा दासकी पूरण कीजे, चरण शरण लपटाय रहीरे ॥ वी० ॥ इति

पुनः

मानो मानो वेदरदी सामरिया। व्याहन आये जादव सङ्ग लाये। रथको तुम पीछा फिराई ॥ वे०१ ॥ पशुवन दयाचित कीनी। मुझको तुम सर्दा छिटकाई ॥ वे०२॥

पुनः

देखो देखोरे यागीरकी डुगरीयानोंकी धनी ॥ दे० ॥ अति घन सघन विराज रहे वन शीतल छांह घनी निरमल नीर सम्पूरण सरिता देखत प्यास हनी ॥ देखो० १॥ एक ओर मोर झकोर करत हैं गावत गीत गुनी एक दिश रटत रहे पिक चातक बोलत मधुर धुनी ॥ देखो० २ ॥ बीस टुङ्क बने ता उपर सोधे जगत धनी ताते या गिरवरकी महिमा ठोर ठोर वरणी ॥ देखो० ३ ॥ ऊज्जल वरण विम्ब जिनजीके थापे भगति भनीं कहा कहुं छव याकि ऊजारि दीपत देव समानि ॥ दे० ४ ॥ दरशन करत टरे सब भव दुख सुखकी ठान ठनि हरख चन्द याकि सम सोभा देखि नांहि सुनि ॥ देखो० ५ ॥ इति

पुनः

आवो प्रिते आवो रुडा जिनगुण गावो । जिनगुण गावो भावे भावना सूभावो ॥ आ० ॥ भक्तवच्छल भवभय हारक ने, करि प्रणाम निज दोष क्षमावो ॥ आ० १ ॥ केईक पतित जन पावन कीधि, सम मन फरवी आस्या धरावो॥आ०२॥ नृत्य कलावली ज्ञान प्रभावो, लक्षपति समरति गति रति पावो ॥ आ० ३ ॥ अश्वसेन सुत नन्द वामाना, भजि ऋद्ध तुम सकल समावो ॥ आ० ४ ॥ पावन थावो ने भवि

शिव पर जावो। वीर वचन सुध हृदये समावो॥ आ०५॥ इति

धुरपद

पार-ब्रह्म परमेश्वर, पुरुषोत्तम परमानन्द नाभके नन्द आनन्द कन्द मोरा देवीके श्रीजिनन्द॥ पा०॥ मोरा देवी के जन्मे आय, ऋषभ देव नाम पाय, राज तिलक धारे प्रथम तो नरेश नन्द॥ पा०॥ प्रथम लीन ब्रह्मवार, इन्द्रादिक नमें पाय, केवल तो प्रगट आय बाजत है देव दुन्द। पा०॥ कञ्चन वरण, वृषभ लञ्छन सेवक तो तिहारे शरण दीजिये कृपा निधान दरशन प्रथम जिनन्द॥पा०३॥ इति

पुनः

छोडिये न सत और राखिये धरम दृढ, कीजिये न आसे निरलोभी कहाईये। विपत असाता पडे सहिये शरीर पे। काहुसे न दीन भाष भरम ना गमाईये॥ छो०१॥ सुत भ्रात हीतु मित्र,, सजन, कुटुम्ब सब। आपको न चाहे ताकु आपहु न चाहिये॥ छो०२॥ जादो राय महाराज, काहुसे न सन्यो काज। असे जीव जान एक प्रभु गुण गाईये॥ छोडी०३॥ इति

पुनः

सुनोजी त्रिलोक नाथ, सामने तुमारे हम, नाचत

पुनः

देखो देखोरे यागीरकी डुगरीयानींकी घनी ॥ दे० ॥ अति घन सघन विराज रहे वन शीतल छांह घनी निर-मल नीर सम्पूरण सरिता देखत प्यास हनी ॥ देखो०१॥ एक ओर मोर झकोर करत हैं गावत गीत गुनी एक दिश रटत रहे पिक चातक बोलत मधुर धुनी ॥ देखो०२ ॥ शीस टुङ्क वने ता ऊपर सीधे जगत धनी ताते या गिरवरकी महिमा ठोर ठोर वरणी ॥ देखो०३ ॥ ऊजल वरण विम्ब जिनजी के थापे भगति भनी कहा कहुं छव याकि ऊजरि दीपत देव समानि ॥ दे०४ ॥ दरशन करत टरे सव भव दुख सुख की ठान ठानि हरख चन्द याकि सम सोभा देखि नांहि सुनि ॥ देखो०५ ॥ इति

पुनः

आवो प्रिते आवो रुडा जिनगुण गावो । जिनगुण गावो भावे भावना सुभावो ॥ आ० ॥ भक्तवच्छल भवभय हारक ने, करि प्रणाम निज दोष क्षमावो ॥ आ०१ ॥ केईक पतित जन वावन कीधि, सम मन फरवी आस्या धरावो॥आ०२॥ नृत्य कलावली ज्ञान प्रभावो, लक्षपति समरति गति रति पावो ॥ आ०३ ॥ अश्वसेन सुत नन्द वामाना, भजि ऋद्ध तुम सकल समावो ॥ आ०४ ॥ पावन थावो ने भवि

शिव पूर जावो। वीर वचन सुध ह्रदये समावो॥ आ॰५॥ इति

धुरपद

पार ब्रह्म परमेश्वर, पुरुषोत्तम परमानन्द नाभके नन्द आनन्द कन्द मोरा देवीके श्रीजिनन्द॥ पा॰॥ मोरा देवी के जन्मे आय, ऋषभ देव नाम पाय, राज तिलक धारे प्रथम तो नरेश नन्द॥ पा॰॥ प्रथम लीन ब्रह्मचार, इन्द्रादिक नमें पाय, केवल तो प्रगट आय वाजत है देव दुन्द। पा॰॥ कञ्चन वरण, वृषभ लञ्छन सेवक तो तिहारे शरण दीजिये कृपा निधान दरशन प्रथम जिनन्द॥पा॰३॥ इति

पुनः

छोडिये न सत और रखिये धरम द्दढ, कीजिये न जासे निरदोषी कहाईये। विपत असाता पडे सहिये शरीर पे। काहुसे न दीन भाष भरम ना गमाईये॥ छो॰१॥ सुत भ्रात हीतु मित्र, सजन कुटुम्ब सब। आपको न चाहे ताकु आपहु न चाहिये॥ छो॰२॥ जादो राय महाराज, काहुसे न सर्यो काज। असे जीव जान एक प्रभु गुण गाईये॥ छोडी॰३॥ इति

पुनः

सुनोजी त्रिलोक नाथ, सामने तुमारे हम, नाचत

अनादि काल बीते देख लीजिये ॥ सु० १ ॥ सुरनर नारकी तिरजञ्च चार गत माहे, केते सवाङ्ग धरे नाथ कहांलों कही जीये ॥ सु० २ ॥ थाके को मिटायबेको सरधा रथ सिद्ध माहे, नेक बसबे को समकित बीड़े दीजिये ॥ सु० ३ सेवककी नृत्य देख कृपा रीझ भई होय तो, दीजे शिववास नृत्य पना दूर कीजिये ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

फटत भरम कट जात है करम गति पापन को नाश होत छिनक एक ध्यायेतें, शत्रु है सो मित्र होत अलिन समान तोय विपत सहुजाय और सांच गुण गायेतें ॥ फटत० १ ॥ उदै अस्तराज होत रथ गज वाजी होत मन चिन्तें कारज होत ज्ञाननिधि पाएतें ॥ फटत० २ ॥ जादो राय सब सुख भुगति मुकत सहत फल होत जिनराजके गुण गायेतें ॥ फटत० ३ ॥ इति

पुनः

मेरे मनके मनोरथ पूरण भएरी सब देखत दरश जब नैनन निरख ॥ मेरे० ॥ जाने मेरे भाग अब जनम सुफल भयो रोम२ सब उठेहै हरष ॥ मेरे० २ ॥ जब उर आंनी जिनवांणीकी परम रुचि भये मेरे सबसुख, गये दुखिनीको झाखौ। जादुराय प्रभु कोइना शरण मेरे तुमबिन नाथ जग देखाहे हरख ॥ इति

पुन.

शुभ घडी शुभ दिन दिन महुरत नाभि नन्दनके चरण परसें ॥ शुभ• ॥ अङ्ग अङ्ग हुलशे चित चेत पुलके आनन्द के अतिही झर वरसें ॥ शुभ०१ ॥ भव भव तुम दरशन विन साहिब मो नयनां अतिही तरसें, ज्ञान प्राण छवि लखि स्वामीकी उदय भाग अवही सरसें ॥ शुभ०२ ॥ इति

पुनः

हे-आ-ज आ-व-न-पी-नो सु-भ घरि सु-भ महु रत, लगन सघन-करना-जो-ग-है-जग-भा-व-न-दे मिर-द-ङ्गि । मिर-द-ङ्ग । उम-ग व-जा-व-त । कं-चतान ॥ लेईत थरर थु कु फु फु कु । थेङ्ग लाल ता ता थेई थेई आ-न ता-न ले-त तिया-ला-गी रि ला-ल रिझावन हे ॥ आ०१ ॥ इति

पुनः

लागन लगी रहे मेरे, जिनराज दरशन पावनेकी ॥ला• मेरो तो जीया अब पसीही उमगत जैसे घटाघर सावनकी ला०१ ॥ निश दिन सेवा तोहारी करत रहुं, रट लगी प्रभु चरणनकी ॥ ला•२ ॥ मैं तो, आनन्द घनकुं दरश दीजिये यानपरी तरसावनकी ॥ ला•३ ॥ इति

पुनः

परम भरम जग तिमिर हरण भग उरग न्याण पग

शिव मग दरसि ॥ क० ॥ निरखत नयन भविक जल बरषित हरखत अमित भविक जन सरसि, मदन कदन जित परम धरम हित सुमिरत भगत भगत सब डरसि, सजल जलद तर मुकट खपत्त फर कमठ दलन जिन नमत बणरसि ॥ कर०२ ॥ इति

चतरङ्ग कवाली

सप्तसुरण सुरसाधत गुनीजन । चतुरङ्ग जिनगुण गावै स० टेर ॥ तकू तकू तकू तकू धिरकट् तकू धिलाङ्ग धा ॥ घडनकू तिरकट् तका तका तक धुमकिद तिरकट् गिदधिन धा, धिलाङ्ग धा धा धिलाङ्ग धा ॥ च०१ ॥ ऊत्तम वाणी जो नर गावै, नाद भेदको करे विचार । तान लेत घन गरजित लरजित । सारिगमपधनिसो सानिधपमगरे । पद्मोदय मन भावै ॥ स०च०२ ॥ इति

चतरङ्ग श्यामकल्याण

चतरङ्ग जिनगुण मिल गाइए । गाइए बजाईए रिझाइए जिनवरके आगै लयकुं सम्पूरण कर दिखाइए ॥ च० टेर ॥ ममग ममग पपधा सारसा सगारिगा पमगारसा रेरेनिनि धपमप धपमगरि ॥ च०१ ॥ नादर दा दानि तुम दिर तुमदिर दानी तननन उदानी तदानी तन धीम तननू

धाकट तकू धुमकिट तिक धित्ता कडांन धा धा कित किती किती पमोदय मन भाइए ॥ च॰२ ॥ इति

चतरङ्ग खम्बाज

चतरङ्गको गाइए जिनरङ्गतसुं अरतीवरकों स्वर देख भाल करत रतीवर अति कोमल सुरकों न्यारी न्यारी सुर सङ्गतसुं ॥ च॰ टेर ॥ निग दिग तानाना दिग दिग ताना तानदेर तुमदिर दिर दिर दिर- दानी ॥ च॰१ ॥ उनचाश कोट तान तिनके कठिन रङ्गीले हे विवरे ॥ सारिगम पप पप मम मम मगरिसा सानि सानि सानि धप मगरिस सा घित्ति रकट तक तत्तिर किट् धित्ता धित्ता किरनातकू तक धुंम किट् तकू तकडां तकूधा पमोदय मनचङ्गतसु ॥ इति

सरगम कवाली

गगस गमप गमनी धमपधमग धानिसा सानि धपमग रिस ॥ ग॰टेर ॥ गमधानिसा सानिधप पधमग मधानिसा मगरिसा धानिसा सानिध पमगरिस ॥ ग॰ ॥ इति

जाजयन्ती

आजतो आनन्द भयो चित्तमे हमारे ॥ आज॰१ ॥ धरके आस आयो पाश आपके दुवारे ॥ आ॰२ ॥ सोहनी सुरत मोहनी सुरत देखके दीदारे ॥ आ॰३ ॥ वृषभ लञ्छन

कनक बरण नाभिके दुलारे ॥ आ० ४ ॥ दास जान हृदय बीच, आवो मेरे प्यारे, तुम बसो मेरे प्यारे ॥ आ० ५ ॥

राागिणी—पीलु (बारमा)

किसपर मान गुमान करिजें, एक प्रभुजीको ध्यान धरीजें ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोवन जोर मायाके नसेमें भुल गये तुम गुरु एक पलमें ॥ किस० १ ॥ क्रोध कूपमें पडके गमाया, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ किस० २ ॥ लोभ लुगाइसे मोह पायके, वहोत दुखी हुउ नरक जायके। कि० ३ ॥ पांच मित्रके फन्दमें पडके, वारंवार तुं लक्ष भमीके ॥ कि० ४ ॥ इनकुं छोड़ तुम ध्यान लगावो, अजर अमर सुख सहजमें पावो ॥ कि० ५ ॥ चन्द गोपालकी आश पूरीजें, जैन प्रकाशक गुण गाइजें ॥ कि० ६ ॥ इति

वरसाती

बेरी २ अरज करी हम तुमसे। तुम न सुनी एकवारजी। बेरी० १ ॥ क्या तकसीर कसूर हमारा सो फरमावो लिगार जी ॥ बेरी० १ ॥ दीनानाथ दयाल तुमारा विरुद है गरीब निवाजजी, भगत वत्सल भगवन्त कहावो तीन भुवन शिर-ताजजी ॥ बेरी० २ ॥ कीरत कांन सुणी प्रभु थांरी आये नाथ हजुरजी। कृपा करी अब दरशन दीजे पाप करो चकचूरजी ॥ बेरी० ३ ॥ भव भवमें प्रभु चाकरी चाहुं जैन धरम

अनुराग जी बोध को बीज प्रगट पट भीतर दुविधा गई सब भागजी ॥ मेरी०४ ॥ मेघ नृपतिके नन्दन स्वामी शमकितके दातारजी। कहत अबीर सुमति जिनवरका दिन दिन जय जयकार जी ॥ मेरी०५ ॥ इति

पुनः

सुमति जिणन्द जुहारीये मन धरि हरष अपार नर भव पायो दोहिलो सफल करो अवतार ॥ सु०१ ॥ श्रावक कुल मांहे जनमीयो जानी नहीं षटकाय नव तत कुची ना गहीं दीया जनम गमाय ॥ सु०२ ॥ ए संसार असारमें सार जिणेश्वर नाम भजन करे सोही तरे पावे अविचल धाम ॥ सु०३॥ करणी करता दोहिली चाहत माऊ तमाम घोनेरे पेड बंबुलका चाखण चाहत आम ॥ सु०४ ॥ मेघ महीपति सुत नमूं मात सुमङ्गला के जात, कहत अबीर ए प्रभुजीका गुण गावो दिन रात ॥ सु०५ ॥ इति

पुनः

श्रीपारस प्रभु साहेब मेरे। तुम हो जग जयकार निज सेवक परि करुणा करिके, कीजे कछु उपगारा ॥ श्री० ॥ श्री समेत शिखर पर शोहे प्रभु उत्तङ्ग विहारा। अति सुन्दर प्रभु बिम्ब विराजे छाजे अति मनुहारा ॥ श्री० भवमें चक्कर गमायो, पाया नहीं भव पारा ॥ श्री०

अब कछु शुभ सञ्जोग उपाया चाह्या नर अवतारा । प्रभु मुद्रा देखतही जीत्या वित्या दुख अवसारा ॥ श्री० ॥ राज ऋद्धी प्रभु मैं नही चाहुं, चाहुं नही धन दारा । श्रीजिन भक्ति सहित नित चाहुं, अमृत धर्म उदारा ॥ श्री० ॥ इति

पुनः

अचिरा नन्दन स्वामीनो, निरख्यो बिम्ब उदारजी । मेरी कामना भई अब सिद्धजी ॥ अ०१ ॥ परमातम सागी सही, अनुपम गुननो भण्डारजी ॥ अ०२ ॥ जिन दिन थी तुम चरणनो, शरणो लीधो सारजी । तिन दिन थी मेरे सही वड़ती मङ्गल मालजी ॥ मैं० ॥ जिम भुखो मोदक लहे, तिसीउ गङ्गनी पूरजी ॥ रङ्क भमे जिम निधि भतें, मुझको तिम प्रभु नुरजी ॥ मे०३ ॥ सोलमों जिनवर मैं लह्यो, नही सुरतरु नु कामजी ॥ अरी जन नो अब सैथयो बोध लह्यो अभिरामजी ॥ मैं०४॥ सिध लही अब तप विना जपतां सोलमां कन्तजी । हीर धरमके अशुभनो, नाश करे जिम शन्तजी ॥ मैं०५ ॥ इति

पुनः

नेम ब्रह्म सुजान अविचल सूजश रङ्ग सुहामनो । तारण कुशल प्रभु नाम राजै जोग जन मन भावना ॥ १ ॥ ललित वंछित ज्ञान अभिनव देत जनमन पावना ताप पाप विनाश

कर चर राजमति पीऊ ध्यावना ॥ २ ॥ जङ्गम सुर पद आप विराजै राजे रेवत गिरवरुं दास गुलाव तार दीया अब जय जय जय नेमी सरु ॥ ३ ॥ इति

इमन कल्याणका दूहा

सुख उपना दुख गल गए, निकलङ्क भये निरवाण।
घर घरमें आनन्द भए, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ १
रागको नाम कल्याणहै, मेरे प्रभुजीको नाम कल्याण।
सकल सभाकु कल्याणहै, तब होत कल्याण कल्याण ॥२
जीवडा जिनवर पूजिये, तासे सम्पत्ति होय।
राजा नमें प्रजा नमें, वालन वाको होय ॥ ३ ॥

राग कल्याण

माई मेरो मन तेरो नन्द हरे, कञ्चन वरण कमल दल लोचन निरखत नैन ठरे ॥ मा०१ ॥ पञ्च वरण मन हरण धरन पर ठम ठम पांव धरे, रतन जडित कञ्चन घुघरिया रुण झुणकार करे ॥ मा०२ ॥ हलत लसत मुगता फल माला पीत वसन उपरे, मानु चलिही मान शिखर तें गङ्ग प्रवाह खिरे ॥ मा०३ ॥ धन त्रिशलादे भाग तिहारो तू तिहु भुवन शिरे, तिन भुवनको नायक तेरे आङ्गनमें विचरे ॥ मा०४ ॥ श्रीवर्द्धमान जिनन्दकी मुरत चितु देखे न टरे, हरख चन्द प्रभु वदन विलोकत सबही काज सरे ॥

पुनः

मोहे कैसे तारोगे दीन दयाल, तारो तो प्रभु तुमहीं तारो विन तरवें कों लीजो सम्भार ॥ मो० १ ॥ कञ्चनको कहा कञ्चन करि वो मलिन कञ्चन परिजाल, मो पापिन कों पावन करि वो बहुत कठिन है कृपाल ॥ मो०२॥ काम क्रोध लपटि रह्यो नित हुं माया मोह जञ्जाल, मल्ली नाथ प्रभु नाथ निरञ्जन रूप चन्द गुण माल ॥ मो० ३ ॥ इति

पुनः

आज ऋषभ घर आवे, देखो माई ॥ आ०॥ रूप मनोहर जगदानन्दन सवही के मन भावे ॥ देखो०॥ केई मुकुता फल थाल विशाला केई मणि माणक ल्यावै हय गय रथ पायक वर कन्या प्रभुजीकुं वेग वधावे ॥ देखो०॥ श्रीश्रेयांस कुमर दानेश्वर इक्षुरस वहिरावे, उत्तम दान अधिक अमृत फल साधु कीरत गुण गावै ॥ देखो० ॥ इति

पुनः

सुनिजर कीजै प्रभु दीन दयाला । नाभिराय नन्दन जग वन्दन मरुदेवीजीके लाला ॥ सु० १॥ जनम पूरी अयोध्या नगरी वंश इक्षाकु उजाला, कुलमें परम प्रधान उद्योती गुण मकरन्द विशाला ॥ सु०२ ॥ वृषभ लञ्छन धनुष पांच सै मोहन रूप निराला, लख चौरासी पूरव आयु तारक

विरुद सम्भाला ॥ सु०३ ॥ तुम सम कवन उदार जगतमे जगनायक जगवाला, पूरण ब्रह्म परम परमेष्ठी खोलो मुगतका ताला ॥ सु०४ ॥ दीनवन्धु मै याचक तेरो साहिब कर प्रतिपाला, दास चुनीकुं सुख सम्पत्ति दीजे जिनसे होय निहाला ॥ सु०५ ॥ इति

पुनः

क्यों कर भक्ति करु प्रभु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम क्रोध मद मान विषय रस छाड़त गेलन मेरी ॥ प्र०॥ करम नचावत तिमही नाचत माया वश नट चेरी ॥ प्र०१॥ दृष्टि राग दृढ वन्धन वांध्यो निकशत न लहे सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रशंसा सब मिलँ अपनी परनिन्दा अधिकेरी ॥ प्र० ॥ कहत मान जिन भाव भगत विन शिवगत होवे न नेरी ॥ प्र० ॥

पुनः

सांझ समे जिन वन्दो भवि जिन ॥ सांझ०१ ॥ ऋषभादिक चौविश तीर्थ कर मेटत है भव फन्दो ॥ सांझ०२ ॥ ले कर दीपक आगल वारुं, छडत पापको फन्दो रतन जडित की करूं मै आरती ; वाजत ताल मृदङ्ग ॥ सांझ० ३ ॥ पुष्प माल धर ध्यान लगावो सेवत धूप सुगन्धो सांझ०४ ॥ कहे जिन दास समझ जिया अपना, वन्दत होत आनन्दो ॥ सांझ०५ ॥ इति

पुनः

समझि समझि जीया ज्ञान विचार। एक जिता तो पांचु जिता, पांचु लाख हजार। एक पलकमें सब जग जीतां उतर गया पेले पार॥ स०॥ ज्ञानके बान भर भर मारा; मन मतवाला नाहार॥ स०॥ रूप चन्दके नाथ निरञ्जन, आप होवे सिरदार॥ स०॥ इति

पुनः

मोतिनकी माला जिन गले शोहे॥ मोति०॥ मस्तक मुगट शोहे मन मोहन। कुण्डल लागत वाला॥ जि०१॥ भजोरी भजो तुम लोक सहरके। नहींय भजे सो काला। माणक पर प्रभु महिर करो तो। अपना विरुद सम्भालो॥ जि०२॥ इति

पुनः

नैना दरशनके आधीन। पूरण प्रभु मुख देखन कारण रहत सदा लय लीन॥ नै०॥ रसिया होए सो रस पहिचाने। क्या जाने मत हीन॥ नै०॥ परमानन्द लहे सोइ जाने। या जाने जल मीन॥ नै०॥ इति

पुनः

एसो ब्रह्म मोपै कैसे कहायरे। निरगुणी प्रभु सुगुण समस्या। ताकर कर कैसे बतायो जायरे॥ ए०१॥ जाकी

वरण भेप नांही, कछु नांही रूप मुद्रा आकाररे। थानक अगम अलख अकलङ्कित। निरलेपी निराकाररे ॥ ए०२ ॥ गोतन जाती भांति नही जाको नही माया काया छाया धामरे। कहिवाको वल चलत नही केसेके लीजे ताको नाम रे ॥ ए०३ ॥ शब्द रहित प्रभु ऐसी धूव मुखके नांहि हात उचाररे। गूङ्गाको सुपनो माहि फुनि समक्षित आपहि आप विचाररे ॥ ए०४ ॥ है आकार ज्युं वचन अक्षर आपुरे। ऐसो राज सुपाशही जान्यो जपत राज सोड अजपा जापरे ॥ ऐ०५ ॥ इति

पुनः

मैतो गिरनार गढ भेटण जाउंगी ॥ मै० ॥ जो अवसर प्रभु जोग विचार्यो, ए अवसर कव पांउगी ॥ मै० ॥ सव सखियन मिल सव रस पांउगी, मै जिन तेरा गुण गांउगी। कहत हठु प्रभु मुक्ति सिधाए, प्रभु चरण चित लाउंगी ॥ मै० ॥ इति

पुनः

औरनसे रङ्ग न्यारा न्यारा तुमसे रङ्ग करारा है तुम मन मोहन नाथ हमारा अवतो प्रीत तुमारा है ॥ औ०१ ॥ जोगी हुवा तो कान फडाया मोटी मुद्रा सारीहै गोरख कहे हसना नहीं मारी घर घर तुमची न्यारीहै ॥ औ०२॥जङ्गम

आय वाजा वजडावे आछे तान मिलावे है सबका राम सरीखा बुझै काहे कुं वेश लजावे है ॥ ओ०३ ॥ जङ्गम जावे भस्म चढ़ावे जटा बढ़ायके कैसा है पर भवकी आशा नहीं मारी फिर जैसे का तैसा है ॥ औ०४ ॥ जती हुवा इन्द्री नही जीती पञ्च भूत नहीं मारा है जीवाजीवकुं बुझा नाही वेसकुं लेकर हारा है ॥ ओ०५ ॥ वेद पढ़े से ब्राह्मण कहावे ब्रह्म दशा नहीं पाया है आतम तत्वका अर्थ न बुझा पुकार से जनम गमाया है ॥ औ०६ ॥ काजी किताव खोलके वैठा क्या कितावमें देखा है बकरीके गलै छुरी चलावत क्या देवेगा लेखा है ॥ औ०७ ॥ जिन कञ्चनका महल वनाया उनसे पीतल कैसा है डाला गलेमें हार हीरेका सब जुग काला कैसा है ॥ ओ०८ ॥ रूपचन्द रङ्गमें मगन भया है नाथ निरञ्जन प्याराहै जनम मरणका डर नही आनां चरण शरणमें तिहारा है ॥ औ०९ ॥ इति

पुनः

नट होई खेलो देखूं चातुरी ॥ न० ॥ जान प्रवीण गुणी गुण खोले देखन मनुवा आतुरी ॥ न०१ ॥ वाजत मृदङ्ग नाचत है नट गावत मधुरी तानरी ॥ प्रेम कछोटा वांधत मोटा ध्यान वंश चढ़ि जातुरी ॥ न०२ ॥ तन मन सूरति सम्भार लीजे रीझै निरञ्जन नाथरी ॥ न०४ ॥ इति

पुनः

अविनाशीके गुण गावना जाकी जोत अखण्ड विराजत करत पतितकुं पावना ॥ अ० १ ॥ जनम मरणका डर नहीं जाके फेर जगतमे न आवना ॥ अ० २ ॥ चउदे राज भासत है दरपन एक समय दिखलावनां ॥ अ० ३ ॥ भाव भगति मन हरपित होय नित परम अंसको रिझावनां॥प्पा०

पुनः

सो मेरा मन लगा जिनेश्वरसे, जिनेश्वरसे परमेश्वरसे सो० ॥ केतकी मधुकर चकोरको चन्दा, हां रे जैसे कमल को खगा ॥ सो० १ ॥ देव जगतमे है बहुतेरा, सब देवन बीच देवा ॥ सो० २ ॥ कहत खुशाल राय वेकर जोडी भव भव पातक भगा ॥ सो० ३ ॥ इति

रागिणी इमण वेहाग

आज जिन चरण पूजन मेरे मन आयो ॥ आ० ॥ पूजन्त करत रोम रोम हुलसायो ॥ आ०॥ तुम दरशन विन कलन पडत छिन दुजो नही तुम विन मोहे तारण हारो ॥ आ० ॥ तुम विन औरन मेरी सङ्कट हरण हारो, तारो नाथ अवतो तारो सेवग शरण आयो ॥ आ० ॥ इति

पुनः

अब लाग्यो तोसु रङ्ग, त्रागा नन्दन पाप निकन्दन

कुल इक्षाक दिनन्द ॥ अ०१॥ जनम कल्याणक नयरी बनारसी सेवै नित धरणीन्द ॥ अ०२ ॥ नील वरण नव हाथ प्रमाणै लञ्छन सोहे फणिन्द ॥ अ०३ ॥ आयु स्थिति सो वरस प्रमाणै अश्वसेन कुलचन्द ॥ अ०४ ॥ दास चुनीके पारश दाता, मनवञ्छित सुखकन्द ॥ अ०५ ॥ इति

रागिणी हमीर

अब चरणन चित लागे, नाथ अब चरणन चित लागे। अ० ॥ इह संसार असार है सारो ॥ अ०ना० ॥ काम क्रोध लोभ मोह न मानत रही रही जीव घवरावे॥ना०अ०॥ बाबुलाल अब शरण चाहत है मन वञ्छित फल पावे ॥ अ० ॥

रागिणी भूपाली रासधारीका चाल

चालो सखी बन्दन जइये नाभजुके नन्द ॥ चा०१ ॥ ममता कुटिलता मुंकी मन धरिये आनन्द ॥ चा०२ ॥ देश देशके जात्री आवे पूजे ऋषभ जिनन्द ॥ चा०३ ॥ देव दुन्दुभि तिहां वाजी गाजै गहिर समन्द ॥ चा०४ ॥ चेत २ सबल सुख हेते वन्दो विमल जिनन्द ॥ चा०५ ॥ इति

पुनः

अरजी मोरि सहीया मोहे तारलो धर वंहीया, इन कर मनके वस होयके मैं भटक्यो चोगति सहीया ॥ ए० ॥ तुम तारण तरण सुण्याछे मैं आते शरणै लहिया। में नहीं जानुं

सहीया। मो०२॥ प्रभु हित कर दास निहालो कर जोड पडद्दू पइया, सेवा देत कोन सहीया॥ मो०३॥ इति

गौरी

अजव जोत मेरे जिनकी, तुम देखो माई। कोट सूरज मिल एकठ कीजे होड न होय मेरे प्रभुकी॥ दे०१॥ झिग मिग जोत झिलामल झलके, काया नीलरतनकी, हीर कहे प्रभु पाश सङ्खेश्वर आशा पूरो मेरे मनकी॥ दे०२॥ इति

पुनः

रूप वन्यो अतिनीको प्रभु तेरो। पञ्च वरणके पाट पटम्बर, विच झावो कसवीको॥ प्रभु०१॥ समोसरण विच श्याम विराजै, नायक सकल दुनीको, मस्तक मुकट काने दोय कुण्डल, हार हिय शिर टीको॥ प्र०२॥ समकित निरमल होत सबनको, देख दरश जिनजीको। समय सुन्दर कहे जिन मुख देखे, सफल जनम ताहीको॥ दे०३॥ इति

पुनः

अभिनन्दन जिनराजसौ मेरो चित अटक्यो अति जोररी॥ सौं०॥ देव अनेक है जगतमे, मेरो दिल नही आवत टररी॥ अ०१॥ रोम रोम सुख उपजैरी जव देखूं मुख भोररी, ज्यौ घन सजल विलोकिके सखी नाचत वन के मोररी॥ अ०२॥ मेरो मन प्रभु वसि पर्योरी ज्यौ गुडी

वलिडोररी अतिताण्यौ तूटै नहीं भयौं निपटही कठिन कठोर री ॥ अ० ३ ॥ स्थकित भई छवि देखि केरी रीझों मुखकी मोर, प्रभु मुखचन्द आनन्द हैं मेरे लोचन भये चकोररी ॥ अ० ४ ॥ अन्तरजामी ऊपरेरी वारुं लाख करोर हरखचन्द के स्वांमीजी प्रभु प्रीति निवाहो उररी ॥ अ० ५ ॥ इति

रागिणी खम्बाज

मिल जारे चेतन ध्यानमें, लग जारे चेतन ध्यानमें ॥ टेर ॥ विवेक सालू तेरे सिर पर चीरा सुगुरु वचन मोती कानमें ॥ मिल० १ ॥ ज्यो कर रांवन तांत वजाई मगन भयो शुभ ध्यानमें ॥ मिल० २ ॥ तिन वेला तिरथङ्कर पदवी उपजाई एकतानमें ॥ मिल० ३ ॥ सेवग तुमारो करत वीनती है, शरण लीनो मैं ज्ञानमें ॥ मिल० ४ ॥ इति

पुनः

जिया जिनजीसे ध्यान लगानारे ॥ होजि० ॥ टेर ॥ प्रभु समरणसे अघ सब नाशे मन वञ्छित फल पानारे ॥ होजि० १ ॥ पद्म प्रभुजीसे प्रीत करे नर, शिवरमणी सुख चानारे ॥ होजि० २ ॥ पद्मोदयकी एही अरज है जन्म मरण मिट जानारे ॥ हो० ३ ॥ इति

(सइयां न पकरो मोरी मुरक कलाइरे) इस चालमें

निठुर नेम पिया गए गिरनारीरे । वर सिवरमणि मोय

निसारीरे ॥ नि० टेर ॥ अष्ट भवनकी प्रीत पुराणी, नवमे भव तुम मोकु निवारीरे ॥ नि०१ ॥ मै अवलाकुं दूर करी ने, पशुवन पर तुम करुणा विचारीरे ॥ नि०२ ॥ सहसावन जाय सञ्जम लीनो, पञ्च महाव्रत भये तपधारीरे ॥ नि०३ राजुल पीउसें सञ्जम लीनो, पहली नेम निज प्रियाकुं तारी रे ॥ नि०४ ॥ नेम जिनेश्वर मुक्ति महिलमे, पद्मोदयकु हर्ष हजारीरे ॥ नि०५ ॥ इति

रागिणी छायानट

कौन निध नाथ निकट तेरे आवुं । काम क्रोध मद लोभ मोहरय, निस दिन प्रीतलगाऊ ॥ धनदारा परीवार सघन वन, मन कुरङ्ग जीम ध्याउ । कर्म कुटिल कीने बहु- तेरे । सन्मुख होत लजाऊं ॥ को० ॥ धरम जिनेश्वर साहेव साचो और देव नहीं ध्यांउ । तुम सम दीनबन्धु नहीं दूजो चरण छोड़ कहा जांऊ । दया धरम प्रतिपदम् जयो परी, मन वञ्छित फल पांउ ॥ को० ॥ इति

वसन्त बाहार

अति घन टन बन फुली बनराई, सुरसम दल दल फलीयां, कलियां मिलीया अलीयां२ ॥अति०टेर॥ श्रीगार २ अलि गुन सरस कोकिल टहुंक भोर मिलिया शीतल मन्दार मृदु मन्द नन्द परिमल कपूर मन रलीया चालिया३ ॥ इति

राग कानेड़ा

मोरी दृगन वामें तोरी छवि छाइरे । आई अति सीरताइ प्रभु ताई दरशाइरे ॥ तो० ॥ अघ अधीक समाइ सुख दाई मन भाइरे ॥ मो०१ ॥ सुझ परी अनेकान्त डगया सगरीया सरल तर ताई दृढ़ताई भइरे । अपर सकल दुख दाइ बिसराइरे ॥ मो०२ ॥ दुरगइ दीश भुली भुलइयां पुलईया कुमतीयां विमल सुध पाइरे ॥ येधन ॥मो०३॥ इति

पुनः

आज हमारे आनन्दा ॥ माई० ॥ पार्श्व कुमार जिनन्द जीके आगे भक्ति करता धरनेन्दा ॥माई आज०१॥ताता थेई ताता थेई पदम उठावत, नाचत नव नव वंदा । शास्त्र सङ्गीत वेद परमारथ, नृत्य करत सुरइन्दा ॥ माई आज०२ ॥ सफल करत अपनीं सुर पदवी, प्रणमति पाय जिनन्दा । समय सुन्दर कहे प्रभु उपगारी जयर श्रीजिनचन्दा ॥ इति

पुनः

चञ्चल दृग धृति ना धरतरी॥ जिन विन दरशन तरशन छर कर नीत वरषत पल पल कलना परत ॥ च० टेर ॥ श्याम सजल घन बीमल निरकण वी अधीर चातकरि शशी विन चकोर कक विन सरोर तिम विरह घोर जल जल ना जलत ॥ च०१ ॥ काल सकल गति अन्ति अनन्त भच

भव अटन्त घातकरी अब निरख नूर इह मुनी कपूर कली-मल कसुर इह दलना दलत ॥ च० ॥ इति

रागिणी हमीर ताल तेताला

आदि जिन चरणन पूजो, प्रेमधर ॥ आ० ॥ बालपनेमे खेल गमायो, भर जुआनी कछु बनि नहि आयो। अबतो चेत मन प्रभुको समर ॥ आ०१ ॥ तरण तारण प्रभुके गुण गावो, सुध समकित धरि ध्यान लगावो। तवतो होय तेरी शिवपुर घर ॥ आ०३ ॥ झूठि काया झूठि माया, झूठहि झूठमें मन भरमाया, झूठो सब संसार नगर ॥ आ०४ ॥ बाबुलाल प्रभुके गुण गावे, प्रभु चरणे सीस नमावे। अब तो बता दो शिवपुरका डगर ॥ आ०५ ॥ इति



मल्हारका दोहा

सरस्वती मात अधर सहित आनन चन्द्र हराय।
बानी बीर सुधा भई भविजन भवि तरजाय ॥ १
नीकी मूरत पासकी मो मन रही समाय।
जैसे मेहदी पातकी लाली लखीयन जाय ॥ २ ॥

रागिणी मल्हार

कोयल टहुरु रही मधुवनमे पार्श्व प्रभुजी बसे मेरे दिलमे ॥ को०॥ बालपने प्रभु अदभुत ज्ञानी सुरपति नाग

कियो एक छिनमें ॥ को० ॥ दिक्षा ले प्रभु विचरण लागे, भिज गये सञ्जम एक रङ्गमें ॥ को० ॥ समेत शिखर प्रभु मुक्ति पधारे, प्रभुजीकी महिमा तीन भुवनमें ॥ को० ॥ सेवककी प्रभु एही अरज है, दिल अटक्यो तेरे चरण कमल में ॥ को० ॥ इति

पुनः

मोरवा पपैया बोले पिउ पिउ वनमें। नेम श्याम रहें सहसा वनमें ॥ मो०॥ निस अन्धीयारी कारी विजली डरावे दूजो विरह आकुल भई तनमें ॥ मो०॥ झिर मिर वरषित गरजित दादुर, सोर करत है नदीया रणमें ॥ मो०॥ आनन्द ए समें देखन चाहे राजुल भइ है वैरागिन छिनमें ॥इति

पुनः

देखो माइ उमड़ घुमड़ी दोऊ आये। उत जलधर इत नेम कुमर वर, दोऊँ तन श्याम सुहाए ॥ दो० ॥ छप्पन कोटि जादव इनके सङ्ग, चढ़ै वरात वनाए ॥ दे० ॥ छप्पन कोटि मेघकी माला, उत उनके सङ्ग धाए। उतघन सजल गहिर ध्वनि गरजत इत निशान वजाए ॥ दे० ॥ उत चमकत चपला इत भूषण, द्युति दामनि दमकाए ॥ दे० ॥ उत सुर चाप सुरङ्ग वन्यो इत, ध्वज पताका फहराए। उतवग पन्ति वनो कुञ्जल इत, मोतियन माल सुहाए ॥ दे० ॥ चिहु

दिशि चातक रटत है उत, इत याचक गुण गाए। उत बुन्दन वरसत इत मणो गण, कनक रजत झरी लाए॥ दे॰ कहत सखी सुनि राजुल तेरे, भए सकल मन भाए। हरख चन्द प्रभु वरषिद यारस, भव आताप बुझाए॥ दे॰॥ इति

पुनः

अनुभव मीत मिला दे मुझकुं। शील सञ्जम दोनुं सावन भादो ध्यान घटा घन छादे मोकुं॥ अ॰१॥ शासा पवन चलत अति मधुरी अनहद गरज सुना दे। भावन बिजुरी चमकत छिन छिन ज्ञान झरी वरसा दे॥ मो॰२॥ चेतन राय कहत निज चितसु आतम बोध जगा दे। दास चुनीके अन्तर भीजे वञ्छित बेल वढा दे॥ मो॰३॥ इति

पुनः

देख्या मे दरश सरस सुखकारा, अधम उधारण तारण हारा॥ दे॰१॥ निरखत नयन सुधारस वरपत, मुख छवि जैसा चंद उजियारा॥ दे॰२॥ मिथ्या मति भ्रम दूर करनकु, दीपत तेज उदे दिनकारा॥ दे॰३॥ सुरपति नरपति भावे पूजित कुमति कदा ग्रह मोह निवारा॥ दे॰४॥ श्रीजिन सौभाग्य सूर सुविध जिन सङ्कट कोट मिटावन हारा॥ इति

पुनः

श्याम हमारो नमझावो॥ श्या॰१॥ चमकत बिजुरी

बरसत मेहुला पिउ पिउ रटत पपिहरा घनन घनन सखी घन गरजत हैं तड़फत जिवड़ा हमारारे ॥ स०१ ॥ दादुर मोर चकोर चिहुं दिश भ्रमर करत झङ्कारा कोयल शब्द सुनावत सुन्दर विकश रहे वन सारारे ॥ स०२ ॥ हय गय रथ पायक सह्व सज्ञ कर आये श्याम हमारा, पशुवन पुकार सुनतही फिर गये कोटि छपन नर सारारे ॥ स०३ ॥ नव भव प्रीत तजी नेमीश्वर, लाज नही यदुकुलकी, दान सम्व-छरि दे भवि जननें सञ्जम सू चित धारारे ॥ स०४ ॥ प्रीतम पहले राजुल नारी शिवपुरमें दिया डेरा, यादव कुल पति नाथ प्रतापी वन्दो भवि हितकारारे ॥ स०५ ॥ इति

पुनः

वीर सुजश मन भायो, सो अब मेरे । काम ध्वेन सुर तरु चिन्तामणि परश परम सुख पायो ॥ सो०वी०१ ॥ सकल कलागुन अतिशय धारी, अलख ज्ञान चित लायो ॥ सो०वी० ॥ वानी घन अव अमृत वरषत ; आतम सगती जगायो ॥ सो०वी०२॥ धन धन सही साहस जिन नायक, तुम विन कोऊ नही आयो । चेत गुलाव सकल सिव पूरण ; लाल अमृत फल लायो ॥ सो०वी०३ ॥ इति

पुनः

जांउ जांउरे सामलिया थांरे वारणारे। पोष वदि दशमी

दिन जायों, दिश कुमरी मिल मङ्गल गायो इन्द्रादिक सव हर्ष वधायो, गावै गीत सुहामनारे ॥ जा०१ ॥ अश्वसेन राजा कुलनन्दन, नगर वनारसी शोभा सुन्दर। वामाराणी के घर झूले पालनारे ॥ जा०२॥ दिक्षा ले प्रभु केवल पाये, अष्ट करमकुं दूर गमाये। समेत शिखर पर सुगति सीधाए आवा गमन निवारणारे ॥ जा०३ ॥ श्रीजिनचन्द सूरि सुपसाए श्रीजिनहरप हीये हुलसाए। सेवक प्रभुजीके शरणे आए भव सागर निस्तारणारे ॥ जा०४ ॥ इति

रागिणी भीम मल्हार

अरथ करो कोई पण्डित ज्ञानी रविके अन्त दधि सुत आगे पट दो चार अधिक छीव जानी ॥ अ०टेर॥ नही सुर सुन्दरी नही व्रज वनिता नही राधे उर युवती समानी नही नर नार ब्रह्मा जो भुले ब्रह्म सृष्टिमे नाही नपानी ॥ अ०१॥ सारङ्ग लोचन सारङ्ग सुत साजै सारङ्ग सुता देख विलखानी कञ्चन कलस दोउँ वश कर लीने सुर गुंद निज दास ही जानी ॥ अ०२ ॥ इति

पुनः

आज तुमसुरतरु सरसे दरसे। महाराजराज श्रीअश्वसेन नृप नन्दन वन्दन जग तारण जिनराज ॥ आ०१ ॥ कृपा-

सिन्धु भगवान सुमति निधान एसे शरणागत रखवारे । एहिं वेर अब शरण गहेकी । अमृत शीखर की लाज ॥ आ० २॥

सोरठका दोहा

धनवेसांइ पङ्खिया, जे वसे गिरनार ।
चूञ्च भरे फल फुलसे चाढ़े नेम कुमार ॥ १
राजमति गिरवर चढ़ी जोवा नेम कुमार ।
स्वामी अजहुन वाहुड्यों मोमण प्राण आधार॥ २
जगमें तीरथ दो वड़ा शत्रुंजो गिरनार ।
ज्यांगीर ऋषभ समोसरे त्यांगिर नेम कुमार ॥ ३
जे हुंती चम्पो विरख वा गिरनार पहाड़ ।
फुलहार गुँथांवती चढ़ती नेम कुमार ॥ ४
सोरठ सोवान सञ्चरेया चढ्यान गढ़ गिरनार ।
गङ्गा नहाया गोमती गयो जमारो हार ॥ ५
सोरठ राग सुहामणी सुखे न मेली जाय ।
ज्युं ज्युं रात गलन्तड़ी त्युं त्युं मिठी थाय ॥ ६
सोरठ थारे देशमें वड़ोज गढ़ गिरनार ।
नित उठीनें वन्दिये यादु नेम कुमार ॥ ७

सोरठ

दरशन बिन जोया तरसत री । मोहे कलना पड़त मोरी आली पल छिन मन धृति ना धरत दृग जल वरसत

द०१ ॥ श्यामसुन्दर छवि अति विशाल अनुपम दयाल सब कोरी। पशुवनको सोर सुन चितको चोर भयो अति निठोर चरहत करसत ॥ द०२ ॥ उन विसारदई मै ना विसरु उन कीना सो मे करहुं। कपूर प्रभुजीके चरण शरणमे धन धन जो जिन फरसत ॥ द० ॥ इति

पुनः

प्रभुजी मोरा बहुगुण भरियाजी। तुम तीन भुवन शिरताज ॥ टेर ॥ सुमत जिनन्द जग अन्तरजामी, शमता के दातार ॥ प्र०१ ॥ माता सुमङ्गलाके नन्दन प्रभुजी, मेघ नृपति हे तात ॥ प्र०२ ॥ क्रौञ्च लञ्छन पग प्रभुके विराजै करुणाके भण्डार ॥ प्र०३ ॥ अजर अमर पद दायक स्वामी मङ्गल सुख अब तार ॥ प्र०४ ॥ इति

पुनः

थारे मुखडारी हुं वारी राज, प्यारी छब वरणी न जाय ॥ था०१ ॥ सीस मुगट सोहे सिरटोको, काने थारे कुण्डल सोहाय ॥ था० ॥ मोहन गारी सूरत थारी, देख्या म्हारो मन लोभाय ॥ था० ॥ उरझत नयना भए निरखत ही, प्रभु थांसु पीत लगाय ॥ था० ॥ भव भव पाश जिनन्द जीकी सेवा, अैसी म्हारे दिलडेमे चाय ॥ था० ॥ बाल कहे तुमही जिन मेरे म्हारे प्रभु तुमही सहाय ॥ था० ॥ इति

पुनः

नेमि जिन सामरो, प्रभु प्यारो छे जी, समुद्र विजय शिवादेवी को नन्दन सङ्कके लञ्छन धारोछेजी ॥ ने०१ ॥ आ भव ऋद्धि रमणीकुं त्यागि भव भवको दुख हारोछेजी ॥ ने०२ ॥ जीव दया तुम जननें पाली पञ्च महाव्रत धारोछे जी ॥ ते०३ ॥ रेवत गिरपर सहसा वनमें, सञ्जम ग्रही मोह टारोछेजी ॥ ने०४ ॥ राजुल राणी नेमिश्वर हाथे, ग्रह सञ्जम मनवालोछेजी ॥ ने०५ ॥ तप जप करि प्रभु कर्म हनके राजुल वर मुक्ति धारोछेजी ॥ ने०६ ॥ कहे मोहन रुच नेम प्रभु संभारे भव २ शरण तुम्हारोछेजी ॥ ने०७ ॥ इति

पुनः

चहुं दिश वरसन लागी वदरीया नेम श्याम नहीं आयारे ॥ टेर ॥ कौन सखी वैरण भई मेरी नेम नवल भर मायारे ॥ चि०१ ॥ दादुर मोर पपइया वोले कोयल शब्द सुनायारे ॥ चि०२ ॥ रैंण अन्धेरी दामणी दमके ऊँमड़ घुमड़ जल आयारे ॥ चि०३ ॥ विरह निवारण चली सहसा वन सुगुरु वचन मन भायारे ॥ चि०४ ॥ इति

पुनः

कांई हट मांड्योछेजी राज । नेंमजी थे कांई हठ माड्यो राज । राजुल ऊभी अरज करे छै कांई अरज सुनो महा-

राज ॥ ने०१ ॥ समुद्र विजैजीके लाडले जी कांई यादवकुल सिणगार ॥ ने०२ ॥ नायक छो तिहुं लोक ना जी गुणनिधि गरीब निवाज ॥ ने०३ ॥ खूब बरात बनायके जी आये व्याहन काज तोरणसे रथ फेरीयोजी कांई फिरता न आई थाने लाज ॥ ने०४ ॥ आवो जी उठो घर आपने जी हठ छोडी नणदरा वीर, तुम विन इन ससारमे कौन मिटावै भव पीर ॥ ने०५ ॥ पशुवन पर करुणा करि जी मोपै आन्यो रोस, दीन दयाल कहायके जी निपट न लागे थांने दोस ॥ ने०६॥ प्रीत पुराणी जानके जी राजुल राखो पास, हरखचन्द प्रभु राजुल विनवे जी थांने हो ज्यों मुगति नो वास ॥ ने०७ ॥ इति

पुनः

तार तार भव सिन्धु पार सङ्कट मझार तुमही आधार, टुक देहि सहार, वेग तारो मोरी नइया ॥ प्रभु० १ ॥ तर्ज मन विकार, अनुभवकुं धार, परमाद चोर, कीयो हम पर जोर पग पोत तोड दियो मझमे वोर, तुम सम नहि तारण तरवीया ॥ प्र०२ ॥ दियो दण्ड दण्ड, मोहे दुख प्रचण्ड, कियो खण्ड खण्ड चहु गतमे, भण्ड तुम हो तरण्ड तारण तरवीया ॥ प्र०३ ॥ हे हग दास तेरोहे हैदास मेरो काट

फांस अब वनको वास, मैं आया शरण तूम जग उधरीया प्रभु०४ ॥ इति

(थियेटरका चाल)

तारो तारो जिनन्दा मोहे तारोरे। प्रभु थांरो पतियारो प्यारो साज म्हारा राज, होरे जिनन्दा मोहे०१॥ सारी नदीयारो नाथ चढ़ि जोररे, लहरारो मतवालो खारो गाज म्हारा राज, होरे ॥जि०२॥ म्हारी पुरानी जहाज भरि डोलरे, नही सारो नहि यारो वारो आज म्हारा राज, होरे ॥जि०३॥ थांरी शरणमें कपुर मुनि विनवेरे, अब धारो सब सारो म्हारा काज म्हारा राज होरे ॥ जि०४ ॥ इति

रागिणी माढ़

म्हानुं प्यारा लागोछोजी सुमति जिनन्द। अदभुत रूप अनोपम छाजै, लाजै कोटि दिनन्द। जग बांधवो जगनाथ छो जी तुम मेघ नरेश्वर नन्द ॥ म्हा०१॥ चौविश दण्डक माहे भमता बहुत सह्या दुख दन्द। भटकत भटकत तुम मिलैजी जगजीवन जिनचन्द ॥ म्हा०२॥ जनम सफल मुझ छै सही जी, आज छै परमानन्द, इन अवसर मुझ वीनती जी जगत उजागर चन्द ॥ म्हा०३ ॥ सेवक जाणी आपनोजी दीजै शिव सुख कन्द ॥ म्हा०४ ॥ इति

पुनः

म्हारारे साहेव नीरे सेवा मे जास्याजी साहेवनी से वांमा जास्या करस्या सुख दुख बात आन लहीने शिवसुख लेस्या हनस्या दूरित मिथ्यातरे हो ॥ म्हारारे० ॥ सिद्धारथ राजाना नन्दन तृसला देवी मात चौवीसमा जिनराज ना गुण गाता निरमल थासी गातः रेहो ॥ म्हा० ॥ चार पाच सात आठ हनीने नवसु धरसु नेह दश पोताना दोस्त करीने एकने देस्या छेहरे हो ॥ म्हा० ॥ वेने छण्डि छयने मण्डी बोला वीसुं वार, पनरे जनाने पाय न पडस्या तेरेने देस्या माररे हो ॥ म्हा० ॥ सतर पाली अठार अजुवाली जीपी सु बावीस तेवीसो ने दूर करीने चित धरसुं चौविसरे हो ॥ म्हा० ॥ पांच पचीश सतावीश धरस्या अलगा वेतालीश, तेतीस्या चौरासी टाली करस्यां आतम सुद्धरे हो ॥ म्हा० ॥ अङ्ग नानो सङ्ग ना करिये तरिये भवजल तीर। उदय रतन कहे तृशला नन्दन जय जय श्रीमहावीररे हो ॥म्हारा०॥इति

पुनः

हो जी थाने आईछे अनादि निन्द, जीरा टुक जोवो तो सही ॥ टेक ॥ मोह मद छाक रही निन्द अनादि सोवो तो सही। जिरा ज्ञान नदी जल छांट, हगन पट धोवो तो सही ॥ १ ॥ थाने काल अनन्त-दुख देख पाया मोह चेतो

तो सही। इन कुमत सखी सङ्ग वैठ, पेटकीम खोवोतो सही था० ॥ काम क्रोध मद लोभ विषय वस हुवो तो सही। चतुर गतीको वीज पीया काम सव खोवोतो सही॥ था०३ ॥ सतमत मुगता मालम प्रेम धर पीयो तो सही। आनन्द गुणसेज उजान गढनेर सोवो तो सही ॥ था०४ ॥

पुनः

म्हारी राजुल राणी विनवे, हां जी थानें कांई नेमजी मिले ॥ म्हारी० ॥ व्याहन कारन आविया, कांई ले जादु दललार। तोरणसे रथ फेरीयो, कांई जाय चल्या गिरनार॥ हां म्हारी०१॥ दम्पाति दोनुं वीनवे, कांई आवागमन निवार चन्द कपुरा विनवे कांई चरण शरण आधार॥हां म्हारी०२॥

पुनः

जिनराज जगतका नाथ साथ अब साचो तो येही, भव अटवीके मायने हूं भम्यो तो सही, एता दिवस यों में अबुज जिनन्द मैंने जान्यो तो नही ॥ जि०१ ॥ वांमानन्दन देखके मैं हरष्यो तो सही एतो अव लीनो प्रभुकुं पहचान शरण अव छोडुं तो नही ॥ जि०२॥ प्रभुको शरणों मैं लियो भय कांहूं को नही, दीप कहै करजोड़ मरण दुख मेंटो तो सही ॥ जि०२ ॥ इति



रागिणी वेहाग

नेमजीकुं पूज आई में, दिलडा लगाय आई मे ॥ ने०॥ केशर चन्दन और अरगजा, प्रभुजीके अङ्ग रचाइ आई मे॥ ने० ॥ (दूहा)-भाव दरव पूजा सीरे एहिज दो प्रकार। करो जिव चित लायके, ज्यु उतरो भव संसार ॥ प्रभुजी० ॥ अङ्गीया रची गुलावकी गल मोतीयनकी माल। गजरा लागत सुहामना। ज्यु गेदक वीच गुलाव ॥ प्यारे कुं पूज आई मे ॥ ने० ॥ चम्पा चमेली और केवडा। प्रभुजीकुं सैहरा चढाइ आई में॥ रतन विमल राजुल ईम विनवै, चरणन चित्त चढाय आई मे। भला मै चढाय आई मै॥ ने०॥

पुनः

पीया पीया पीया, वोल मत पीया पीया पीया ॥ पी० ए आंकणी ॥ रे चातक तुम शब्द सुनत मेरा, व्याकुल होत है जीया। फूटत नांही कठिन अति घन सम, निटुर भया ए हीया ॥ वो०१ ॥ एक शोक्य दुखदायी कन्तजीने, कर कामण वश कीया। दूजे वोल वोल खग पापी, तुं अधिका दुख दीया ॥ वो०२॥ कर्ण प्रवेश टठी होइ व्याकुल, विरहानल जलतिया। चिदानन्द प्रभु इन अवसर मिल, अधिक जगत जश लीया ॥ वो०३ ॥ इति

पुनः

धर्म विना नही कोई, उमर सारी विषयोंमें खोई। सुख दुख होते जीवके लारे पाप पुन्य ए दोई ॥ ऊम०१ ॥ मात पिता सब सुखके साथी विपत पड़े नही कोई ॥ ऊम० २ ॥ याते श्रीजिन भक्ति करो तुम जाते शिवसुख होई ॥

पुनः

दरशन प्राण जीवन मोहे दीजै। विन दरशन मोहि कलन पड़त है तरफ तरफ तनु छीजै ॥ द०१ ॥ कहा कहुं कहत न आवत विन सइयां किम जीजै, समझायो सखी जाय मनायो आपही आप पतीजै ॥ द०२ ॥ देवर देवराणी सास जेठानी युं सबही मिल खीजै, आनन्द घन विन प्राण न रहे छिन, कोट जतन कर लीजै ॥ द०३ ॥ इति

पुनः

कवन गत होगी आतम राम। क्यूं भूले निज धाम। क० ॥ काल अनादि तैं लख चौरासी भटके ठाम कुठाम ॥ स्वगुण परगुण पहिचान किए विन मिले नही विसराम। चेतन चित्त विचारके देखो निज गुण अपना धाम ॥ क० ॥ दास चुन्नी आतम विचार में पावे पद अभिराम, श्री वीर जिणन्द प्रभु की सेवा से सुधरे सब ही काम ॥ कवन० ॥ इति

पुनः

सो जोगी चित लाउरे वाला ॥ सो० ॥ सञ्जम झोरी शील कछोटी, घुल घुल गांठि दिलाउं। ज्ञान गुदरी गल विच डारुं, सिंहासन वइठाउं ॥ रेः अलख गुरूका चेला होके, मोहके कान फडाऊं। धरम सुकल दोऊं मुद्रा सोहे, कहतन उपमा पाउरे ॥ वाला०२ ॥ व्यापक सींङ्गी गल विचडारु, करुणा नाद सुनाउं। ज्ञान गुफामे दीपक जोउं, चेतन रतन जगाउं ॥ रे०३ ॥ अष्ट करम कण्डोकी धूनी, ध्यान अग्नि जलाउं। उपशम छन्ना भसम छानिके, मलि २ अङ्ग लगाउं ॥ रे वाला०४ ॥ इह विधि जोग सिंहासन वेठी मुकति पुरीकुं जाउं। विश्व भूषण ऐसे गुरुसेवी, बहुरिन कालमें आउं ॥ रे वाला०५ ॥ इति

पुनः

सखि मोहे नीको लागेजिनन्द। माता शिवा देवी उदरे जायो समुद्र विजयजीके नन्द ॥ सखी० ॥ प्रभुजीकी तनु छवी घंटा लग वरणु एसे नही जिनन्द ॥ सखी० ॥ समोसरण जाको इन्द्र रचोहे सेवत इन्द्र नरेन्द्र ॥ सखी०॥ वाल चन्द प्रभु नेम नवलसे, राजुल हदे समन्द ॥ सखी० ॥ इति

पुनः

काहे जीन टरे दुखसु। पहली पाप करत नहि सोच्यो

अव क्यों सांस भरेरे ॥ दु० ॥ करम भोग भोग ताहि झूठे शिथल हुवा नसरे ॥ रे० ॥ करत दीनता जन जन आगे कोई न सहाय करेरे ॥ धरम पाल प्रभु वदन विलोकत जुं सव काज सरे ॥ रे० ॥ इति

पुनः

अव प्रभु सुं इतनी कहूं, दुष अपनी मनकी वात हो। प्रभुजी दुशमन करम लग रहे मेरी गयलन छोड़े आठ हो। प्र०१ ॥ आठके जो दमते मोहे घेर रहे जड़ काठ हो ॥ प्र० २ ॥ प्रभुजी तुमसे मिलने न देत है मेरे पुरव करम विपाक हो ॥ प्र०३ ॥ दुनिया सव लगे फिका इयाते जिवडो रहत उदास हो ॥ प्र०३ ॥ तुमही सुं सुख पाइये तुम समरथ शीतल नाथ हो आनन्दसे कर अव आय मिले तुम साथ हो ॥ प्र०४ ॥ इति

पुनः

झूलत सव जिनराय, हिण्डोला। ज्ञान दरशन दोय खम्भा लगे हैं, डण्ड ध्यान सुख दाय ॥ झू०१ ॥ दानशील तप भावना डोरी, पाटी समझ सुभाय ॥ हि०२ ॥ शीत सुन्दरी सङ्ग हिल मिल वैठे, आगम धुन गुण गाय ॥ हि०३ शमता सुमति पेङ्ग देत है, पञ्चम गत पहुचाय ॥ हि०४॥ चेतनता सुध होय जगतमें, आवा गमन मिटाय ॥ हि०५ ॥

पुनः

चन्दा प्रभुजीके नाल, मेरी लागी लगन हो। लागी लगन कहो कैसे छुटै, जब लग घटमे प्राण॥ मेरी०१॥ क्रोध मान माया लोभ छोडके, भजले श्री भगवान॥ मे०२ दानशील तप भावना भावो जैन धरम प्रतिपाल॥ मे०३॥ कर जोडी कर विनती करतुहे, वन्दत सेठ खुश्याल॥मे०४॥

पुनः

भजले श्रीभगवान अवर सव थोथी वाते। प्रभु विन पालक कोई न मेरे, सोहर मीत जहान॥ अ०१॥ पर रमणी जननी सम गनना; पर धन जान पाखान। औ अमले परमेश्वर भाषे, भापे आगमे ज्ञान॥ अ०२॥ जिस उर अन्तर वसत निरन्तर नारी अव गुण खाने॥ अ०॥ ताहा कहा साहेबको वासो दो खांडो एक म्यान॥ अ०३॥ मन सुध करणा, सतगुरुके शरणा करणा कहा गुमान। सेवक शरणमे पाक विसरणा मरणा मीत निदान॥ अ०४॥

पुनः

नेमि जिनन्द जयो सो प्रभु मेरे॥ ने०॥ समुद्र विजै शिवादेवीके नन्दन। देखत हरषो हियो॥ सो०१॥ जादव कुल वर कुमुद विकाशक। अभिनव चन्द जयो॥ सो०२॥ वञ्छित दायक अन्तरजामी। सुरतरु सम लह्यो॥ सो०३॥

पाप तिमिर भये दूर निवारण । अरुण उदय भयो॥ सो०४
पुन्य उदय प्रभु दरशन दीठो। दौहग दूर भयो॥ सो०५॥
उगनीसे विडोत्तर माघे वद सात्तम दरश लह्यो ॥ सो०६॥
विनय लाभ सदा सुखदायी। प्रगट प्रताप भयो॥ सो०७॥

पुनः

तेरे दरशके देखेसे मुझे आराम होता है दरश मोहे दिजीये प्रभुजी दरशको दिल हमारा है॥ अन्धेरी रैनमें जैसे चांदणीका पसारा है॥ ते०१॥ कहुं कछु और करूं कछु और यही जञ्जाल होताहै। यही सच वात साधनकी सरासर काम होता है॥ ते०२॥ मेरा महाराज दिल ज्ञानी मन्दिरके वीच वसताहै॥ उसीके ध्यानमें मोती झलाझल सा झलकता है॥ ते०२॥ इति

पुनः

जिन आपकुं जोया नही तन मनकुं खोजा नहीं मन मैलकुं धोया नहीं, अंघोल कियेसै क्या भया॥ १॥ लालच करे दिल दामका वासद करे वदनाम का हिरदे नहीं सुध रामका हरी हर कहा तो क्या भया॥ २॥ कुंती हुवा धंन मालका धंधा करे जञ्जालका हिरदा हुवा चण्डालका काशी गया तो क्या भया॥ ३॥ गोगा करे संसारका जानै कुञ्जडा बाजारका आयो तीर्थ करि द्वारिका, छापा लिया तो क्या

भया ॥ ४ ॥ जीवते पित्र कुं सुख नही उनको जक आशक नही चण्डालमे कुछ सक नही तर्पण किया तो क्या भया ॥ ५॥ इस सांसमे कुछ वासहै जिरा रामका परकाश है सोही भला जिनखास है ब्राह्मण भया तो क्या भया ॥ ६ ॥ इति

पुनः

जिनराज चरणकी मै शरण गही महाराज चरणकी मै श० ॥ अरजी सुनिये नाथ हमारी भव नाटक मेटो बांह गही म०१ ॥ नव नव भात वनायके नाचो लख चौरासी फिरत रही म०२ ॥ जग पालक महिमा गुण सुनके मै तो तोरे रङ्ग राच रही म०३ ॥ समकित सार पदारथ पायो प्रसन्न भई जिनराज सही म०४ ॥ अहनिशि ध्यान धरै नित सुखी मनकी वाञ्छा सफल लही म०५ ॥ इति

पुनः

सो प्रभु मेरे वीर जिनन्द जयो ॥ सो०१ ॥ क्षत्री कुंड नगर अति सुन्दर जिहां प्रभु जनम लियो ॥ सो० ॥ जनम समे त्रिभुवन मे तत खिन, परम उद्योत भयो ॥ सो० ॥ खिन एक नरक निवासी जीवने, परमानन्द चायो ॥ सो०॥ मेरु शिखर पर स्नात्र महोच्छव, देवेन्द्रे रचयो ॥ सो० ॥ श्रीसिद्धारथ मन्दिर प्रगट्यो, उछव नयो नयो ॥ सो० ॥ मिथ्यातम भर दूर करन कुं, अभिनव रवि उदयो ॥ सो० ॥

अनुक्रम सञ्जम केवल आदर, लही प्रभु मुगत गयो ॥ सो०
शासन पतिके चरण कमलमै मन मेरो अटक रह्यो ॥ सो०
अमृत सम प्रभु धरम प्रसादे, प्रगट कल्याण भयो ॥ सो० ॥

रागिणी इमण ताल तेलाना

मनुवा भजले श्रीभगवान । वहत गई अब थोड़ी जान म० ॥ काल अनादि भमतो फिरीयो, पुन्य सञ्जोगे मानव भव वरीयो, एसो जन्म कठिनही जान ॥ म०१ ॥ ए अवसर वेर वेर नही आवे, मानव भव और जिनधर्म पावे इतनो तो सोच हिये धर ज्ञान ॥ म०२॥ मात पिता वनिता सुत भाई, ए सब तेरे सङ्ग न जाई, सब मतलवको साथी जान ॥ म०३ ॥ सुध भावसे प्रभु गुण गावो, इतनी भव पर भवमें सुख पावो, वालु लालकी विनती मान ॥ म०४॥

रागिणी वेहाग

मैं वलिहारी जांउरे, मुरति मोहन गारी ॥ मैं० ॥ प्रभु सुरत थारी सारि देखी वारी जांउरे ॥ मैं०१ ॥ वीत राग मुद्रा अति सुन्दर, उपमान घटे कोई । शोभा सदन मदन मद मोचक, वदन कमल छवि जोय ॥ मैं०२ ॥ कञ्ज दल नयन प्रवाल अधर जुग, अर्द्ध चन्द्र सम भाल । नासा चम्प कलि अति सुन्दर, हृदय कमल जु थाल ॥ मैं० ३ ॥ अङ्ग उपाङ्ग सब लक्षण करि दीपैं हैं गुण गेह । तीन भुवन

की सकल मण्डीता, छाय रही तुम देह ॥ मै०४ ॥ मस्तक मुगट कान जुग कुण्डल, कण्ठे मोती दाम। मणीमय हार वाहे वाजुवन्द, अलक तिलक अभिराम ॥ मै०५ ॥ सिंहासन बैठा प्रभु सोहे, मोहे त्रिभुवन लोक। सन्मुख भव्यासुतकु आपे, सुध अनुभव धन रोक ॥ मै०६ ॥ जो धन पामे करे दीनता, होवे आतम भुप। सुरतरु सुख तुछ करि लेखे, चिदानन्द निजरूप ॥ मै०७॥ परम क्षमा सागर गुण लायक सुन कीरत जगसार। दास आश करि आयो सेवक भवसागर निस्तार ॥ मै०८ ॥ इति

रागिणी जाज

सुमति जिनन्द स्वामी जपो मन प्यारे। सुन्दर छवि अति रुप उदारे। जगवछल जगनायक प्रभुजी, तिन भुवन को है सिरदारे। हस्तिनापूर प्रभु जन्म लियो है, मात सुमङ्गलाके नन्दन प्यारे। देख दरश सवको मर्न हरख्यो, सेवकके प्रभु काज सुधारे ॥ सु० ॥ इति

कालेगडा

तुमे रहोरे यादव दोय घडिया दोय चार घडिया ॥तु० भोज महिराण शिवा देवी जाया तुमे आधार छो अड वडिया ॥ तु०१॥ नाह विवाह चाह करि आए। क्युं जावत फिर रथ चडिया ॥तु०२॥ पशुव पुकार सुनी किय करुणा छोड

दिये जन्तु चिड़िया ॥ तु०२ ॥ गोद विछाय अमे वलिजाउ विनती करुं चरणे पडिया ॥ तु०३ ॥ विरह दिवानी विल पति योवन वाढ वढै जिम सेलडियां ॥ तु०४ ॥ पिउ विन खिन मुझ वरस समोवड न गमें सैनल सेझरियां ॥ तु०५ ॥ यादव वंश विभूषण नेमजी राजुल गुण नी वेलडियां ॥ तु० ६ ॥ सहसा वनमाहें स्वामी सुनके राजुल रेवत गिर चढिया ॥ तु०७ ॥ अष्ट भवान्तर नेह निभावन नवमें भवते वीछड़िया ॥ तु०८ ॥ नयन विमल प्रभु निरखत जपतां हरषित हुये मेरी आखडियां ॥ तु०९ ॥ इति

पुनः

मै तो रही छुं मनाय मनाय नेम पिया ना माने म्हारा राज ॥ मैं०॥ थे तो आया व्याहन काज तोरण रथ फेरीयो म्हारा राज ॥ मैं०१ ॥ थे तो सुनी पशुवन की पुकार कि गिरिवर जा चढ्या म्हारा राज ॥ मैं०२ ॥ मैंतो अरज करुं करजोड़ सेवककी विनती म्हारा राज ॥ मैं०३ ॥ इति

पुनः

मैं तेरी वलि जांउ वारी जिन प्यारे ॥ मैं० ॥ जिन तुम चरणन शरणो पकड्यो, तिन निज काज सुधारे ॥ मैं०१ ए संसार विकट भव निधिते आप तिरे पर तारे ॥ वा०२॥ उदय कमल प्रभु सेवक विनवै कर्मन ते कर न्यारे ॥ इति

पुनः

भजन विन नाही गरज सरे, कोड उपाय करी कर हारो सुर नर मुनिसगरे ॥ भ०१ ॥ सेठ सुदरशन अभया राणी छल छिद्र वहोत करे, शील अभुषण तनमे पहरो सवहि विपद टलै ॥ भ०२ ॥ लङ्काधिप रावण अतुलीवल वीना हाथ धरे, तूटि तांत तुरत निज नससुं सान्धी नृत्य करै ॥ भ०३ ॥ श्रेणिक वीर जिनेश्वरजीको हितसे भक्ति करे, तीर्थ कर पदवी तिन लीनी शिव रमणीकु वरे ॥ भ०४ ॥ ऐसे जीव केतेही तारे कहिता नाही सरे, दास गुलाव कहे कर जोडी प्रभुको भजे सो तरे ॥ भ०५ ॥ इति

पुनः

अरचुङ्गी आज ऋषभ चरणं। नवन प्रमार्जन पूजा करिके, विमल सीस धर आभरण ॥ अ० ॥ फल दल फूले भरी वहु भेदे, कर भरी थाल कनक वरणं ॥ अ० ॥ द्रव्य और भाव भजन जिनवरकी, करण कहे शिव सुख करण भ० ॥ इति

पुनः

मिल जाज्योरे साहिव ध्याननमें। अजव अनुभव रङ्ग मीठो, रीझ रह्यो तेरे नैननमे ॥ मिं०१ ॥ एकही ध्यानें प्यारो न्यारो, करत भरमके फैननमे। तत्व रूप सुधारस

के है मगन भयो तेरे वैननमें ॥ मि० ॥ तुं आलम्बन सूरज उग्यो मो मनडाके घेननमें, एक रूप इक तानें होज्यों पार थी जान्यो एननमें ॥ मि०॥ ज्ञान विमल जिन ध्याने होवे एही अक्षय सुख चैननमें ॥ मि० ॥ इति

पुनः

निश दिन जोउँ थारी वाटडी घर आवोरे ढोला। मुझ सरिखा तुझ लाख हे मेरे तुंही अमोला ॥ नि०१ ॥ जोहरी मोल करे लालन का मेरा लाल अमोला, जिसके पटन्तर को नहीं उसका क्या मोला ॥ नि०२ ॥ पन्थ निहारत लोयणे द्दग लागी अडोला, जोगी सूरति समाधि में मुनि ध्यान झकोला ॥ नि०३ ॥ कौंन सुनें किससे कहूं किम मांडु खोला, तेरे मुख दीठें टले मेरे मनका झोला ॥नि०४॥ मीत विवेक कहे हितु समता सुनि बोला, आनन्द घन प्रभु आवस्यै सेझमें रङ्ग रोला ॥ इति

पुनः

रङ्ग रेवत देख सुमती फुली। भूल गई कुमति डोल देखके, चेतना समकित संरजूली ॥ रङ्ग०१ ॥ जदु कुल कानन परम पञ्चानन, मदन विदारण अतुल वली ॥ र० चवन जनम दोय सोरी पूरमें ; चरण सहसा वन कुञ्ज गली २ ॥ छांड़ चले नव भवकी लाड़ली, राजुल रूप जिसी

विजली ॥ रङ्ग० ॥ अनन्त चतुष्टय प्रगट भई जब कट गई कठिन करम पटली ॥ ३ ॥ पञ्चम टूङ्क पञ्चम गत पाया साधु सिधाया अनन्त वली ॥ रङ्ग० ॥ श्याम सुन्दरके शरणै आयो कान सुनी कीरत उजली ॥ ४ ॥ ऊगनीश बीस माहसुद पूनम मांनुं फुलेलकी शीशी ढूली ॥ रङ्ग० ॥ माया वगली दूर टले जब शान्ति रतन शोभा सगली ॥

पुनः

मन रम रह्यो मेरो रमा करमे । अजित जिनेश्वर अंतर ज्ञामी, आप विराजे आगरमे ॥ मन० ॥ चतुर सनेही माफ करोगे, चुक भरी है चाकरमे ॥ म०१ ॥ कल्प लता करुणा कर करणा, एकता सा कर ठाकरमे ॥ म०२ ॥ नन्दन वन की मोज मेलके, खेल करे कुन खाखरमे ॥ म०३॥ उगनीसे तीसे मास मधूमे, रथजात्रा धुर वारसमे ॥ म०४ ॥ महोच्छव का में पारण पाया, वारस पाया पारसमे ॥ म०५ ॥ पार सागरसे प्यार नही है पन्त करि क्षीर सागरमे ॥ म०६ क्षीर सागरका क्षीर अपारा, क्युकर मांवे गागरमे ॥ म०७॥ सम्पूरण उत्तर पद धरणा, पूरण सिद्ध उजागरमे ॥ म०८ ॥ शांति राजका राज मान कर एक तांन रत्नाकरमे ॥ म०९ ॥

ताल खेमटा

हारे चित्तमे धरो प्यारे चित्तमे धरो, एती शीख हमारी

प्यारे अब चित्तमें धरो ॥ ए आंकणी ॥ थोडासा जीवनके काज अरे नर, काहेकुं छल परपञ्च करो ॥ प्रती०१ ॥ हांरे कूड कपट परद्रोह करत तुम, अरे नर परभव थी नाहि डरौ ॥ प्रती०२ ॥ चिदानन्द जो ए नही मानो तो, जनम मरण भव दुखमें परो ॥ प्रती०३ ॥ इति

पुनः

निर्मल नेह जिनचरण हमारा, जिम चकोर चित्त चंद पीयारा । सुनत कुरङ्ग नाद अब मन लाई, प्राण तजे पण प्रेम निभाई ॥ घन तज आनन जावत जोई, ए खग चातुक केरी बड़ाइ ॥ ला०१ ॥ जलत निःशङ्क दीपके मांहि, पीर पतङ्गकूं होतहे नांही । पींडा हे तदपण तिहां जाहि, शङ्का प्रीति वश आनत नांहि ॥ ला०२॥ मीन मगन नवि जलथी न्यारा, मान सरोवर हंस आधारा । चोर निरख निशि अति अन्धियारा, केकी मगन फुन सुन गरजारा ॥ ला०३॥ प्रणव ध्यान जिम योगी आराधै, रस रीति रस साधक साधै । अधिक सुगन्ध केतकीसें लाधै, मधुकर तस सङ्कट नवि बाधै ॥ ला०४ ॥ जाका चित्त जिहां थिरता मानें, ताका मरम तेंहिज जाने । जिन भक्ति हृदयमें ठाने, चिदानन्द मन आनन्द आने ॥ ला०५॥ इति

राग वेलावल

सांवरो सलूणो सखी मेरे मन भावनो। रूप देखाय मेरो मन ललचावनो ॥ सां० १ ॥ तोरणसुं रथ फेर चले पीया। ना जानु ए काहिको रुसावनो ॥ सां०२ ॥ नव भव नेह निभाहो नेम तुम। याहीतें कहा वदन दुरावनो॥ सा०३ आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी। भयो पीया मुगत सखीको पावनो ॥ सा०४ ॥ इति

गजल

घडी घडी पल पल छिन छिन निश दिन। प्रभुको समरण करलेरे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत है। अशुभ करम सब हरलेरे ॥ घ०१ ॥ मन वच काय लगा चरणन नित, ज्ञान हियेमे धरलेरे ॥ घ०२ ॥ दौलत राम प्रभु गुण गावे। मनवञ्छित फल वरलेरे ॥घ०३॥ इति

टुमरि काफी

शिवपद को दातार, वतादे मोहे ॥ शि०१॥ काल अनन्त निगोदे गमायो अकामे पायो विवहार ॥ वता०१ ॥ अशिव दाता वहत मिला मोहे। ताते भम्यो हु संसार ॥ वता०२ ॥ कहे जिनदास अनन्त जिन आगे। मांगु मङ्गल परसाद ॥ वता०३ ॥ इति

जिलेकी चाल देशी

सहीयांए नेमीश्वर वनड़ेनें गिरनारी जाता राख लिजोए समुद्र विजैं जीरा लाड़ला हेमा, हलदल दोनुं लार, पिता जीने जाय के जौ है माय ॥ ने०१ ॥ नेमीश्वर वनड़ो वनो-एमा सहीयाए खूब वनी है वरात उन्ची चड़ झांक लीजो एमा ॥ नें० ॥ नेमीश्वर तोरण आयो एमा सहीयाए पशुवन करिछै पूकार उलट रथ फेर चला एमा ॥ने० २॥ तोड़ा छै काकन डोरला हेमा सहीयाए तोड़ा छै नोसर हार; दीक्षा उन आदरी हेमा ॥ ने० ३॥ हमहि प्रगट त्यागस्यां हेमा सहीयाए जाय मिलुं गिरनार करम फन्द तोड़सां हेमा ॥ ने०४॥ सेवक अति सुख पायके हेमा सहीयाए मांगेछै शिव पूर वास दया म्हारी लिजीए ॥ ने०५॥ इति

देशीकी चाल

जगत परमेश्वर तुम खरा, नही कोई तांहरि जोड़ । नाभिराय कुलचन्दलो, मरुदेवी तांहरि माय ॥ ज० ॥ क्रोध मान मांया तजी, लोभने काम्योछै दूर । राग द्वेष दोनुं क्षय किया, पाम्या सुख भरपूर ॥ ज०१॥ प्रथम जिनेश्वर साहिवा महेर करोने महाराज । सेवक जानज्यो आपनो, दीजो शिवपूर राज ॥ ज०२ ॥ वरस दिवस भमतां थका, नवि मिल्यो सुझतो अहार । सेलड़ी रस वहिरावियो, श्रीश्रेयांस

कुमार ॥ज०३॥ भव भवमे भमतां थका, अव मिल्यो ऋषभ देव नाथ। तेहने हु छोडुं नही, रतन चिन्तामण आयो हाथ ज०४ ॥ देव अनेक दीठा घना, नहीं कोई तांहरि जोड। रतन चिन्तामण आगलै, किङ्कर किम करसी होड ॥ ज०५॥ लख चौरासी पूरव आउखो, जन्म्या जगत आधार। युगला धरम निवारणो, प्रभु म्हारा दीन दयाल ॥ ज०६ ॥ राज ऋद्ध छोडी करि, लीनो सञ्जम भार। करम खपाय केवल पामीया, पहोंचे मुगति मझार ॥ ज०७ ॥ सम्वत् अठारे पचावने, फागुण मास उदार। तवन जोड्यो प्रभुजी तणों, कुण्डल सहर मझार ॥ज०८॥ साङ्गानेरे साथमें, गुण माधव जीरे गाय। रात दिवस दिलमें वसो, हियडे हरप नमाय ॥

देशीकी चाल

श्रीसीमन्धर साहिवा वीनतडी अवधार लालरे, परम पुरुष परमेसरु आतम परम आधार लालरे ॥ श्री०॥ केवल ज्ञान दिवा कर भाङ्गे सादि अनन्त लालरे, भासक लोका लोकके ज्ञायक ज्ञेय अनन्त लालरे ॥ श्री०॥ इन्द्र चन्द्र चक्री सरु, सुरनर रहे करजोड लालरे ॥ श्री०२ ॥ चरण कमल पिञ्जर वसे मुझमन हंस नित भव लालरे। चरण शरण मोहि आसरो भव भव देवाधि देव लालरे ॥ श्री०३॥ अधम

उधारण छो तुम्हे दूर हरो भव दुख लालरे ॥ श्री०४॥ कहे जिन हरष मया करी देज्यो अविचल सुख लालरे ॥ इति

पुनः

श्रीसङ्केश्वर पास जिनेश्वर भेटिये, भवना सञ्चित पाप परा सहु मेटिये। मन धर भाव अनन्त चरण युग सेवता अणहुंते इक कोड़ चतुर विध देवता। ध्यान धरुं प्रभु दूर थकी हूं ताहरो, जल जिमलीनो मीन सदा मन माहरो। भव भव तुहीज देव चरण नित सिर धरुं, भव सागर थी तार अरज आहिज करुं। भूख तृषा तप शीत आतम ए नासहे तप जप सञ्जम भार तनी नवि निर वहे। पिण जिनवरजी ना नाम तणी आसत घनी, एहीज छै आधार जगत गुरु अमभणी। तुम दरशन विन स्वामी भवोदधि हुं फिरो सहिया दुख अनेक न कोई कारज सर्यो। मिलियो हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजीये, चौगत सङ्कट चूर जगत जश लीजिये जादव पति, श्रीकृष्ण तणी आरत हरी, सैन्याकीधी सचेत जरा दूरें करी। परचा पूरण पाश रयन जिम दीपतो, जय वन्तो जिनचन्द सयल ऋपु जिपतो ॥ इति

पुनः

सिद्धाचल गिर भेंट्यारे, धनभाग हमारा। विमलाचल० एह गिरिवरणी महिमा मोटी कहेता न आवे पारा, रायण

इस समो सरेया स्वामी, पूरव नवानुं वारारे ॥ ध० ॥ दुर देशथी हूं इहां आयो, श्रवने सुनि गुण तोरा, पतित उधारण विरुद तुमारो, एह तीरथ जग सारारे ॥ ध० ॥ भाव भक्तिसे प्रभु गुण गावे अपना जनम सुधारा । जाता करि भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यञ्च गति वारारे ॥ ध० ॥ सम्वत् अठारे अशी मास आसाढ वद आठम सोमवारा, प्रभुके चरण प्रताप सिह मे, क्षिमा रतन प्रभु प्यारावे॥इति

नदी जमुनाकी चाल देशी

श्रीचिन्तामण पास अरज अव धारिये। तुमहो दीन दयाल दयाकर तारिये, साहिब चतुर सुजान दान मोहि दीजिए, भव सागर थी पार-आज प्रभु कीजिए ॥ १॥ लख चौरासी जीव चतुर गत आवत, ज्ञान विना शिव धाम कहो किम पावता । पुण्य उदे भई आज मनुषमे अवतरे । श्रीजिन दरशन पाय काज मेरे सरे ॥ २ ॥ धन धन तुम जिनराज परम पदके धनी । चरण कमलकी आश मुझे है तुम तनी। तुम हो तारण हार सुगत तुम नामसे चेतनता सुध होय चले शिवधाम मे ॥ ३ ॥ इति

पुनः

मन मधुकर मोही रह्यो। ऋषभ चरण अरविन्दरे ऊडायो ऊडे नही लीनो गुण मकरन्दरे ॥ म०१ ॥ रूपे

रूड़ा फूलड़े अलि विन उड़ी न जायरे ॥ म०२ ॥ तीखां ॥ केतकी तन। कण्टक आवे दायरे ॥ म०३ ॥ जैहनी रङ्गन पालटै, तिनसुं मिलिये धायरे सङ्ग न कीजे जेहनां जो काम पड़्यां कुमलायरे ॥ म०४ ॥ जे परवस वन्धन पऱ्यां लोंका हाथ विकायरे जो घर घर नाहो पाहुना तिनसुं मिले वलाय रे ॥ म०५ ॥ चौविह सुर मधुकर सदा अणहूते इक कोड़िरे चरण कमल जिनराजना प्रणमे वे कर जोड़िरे ॥म०६॥इति

पुनः

मन सुमरिये चौविश जिनको पञ्च पद गुण गायरे। असिआउसा नाम मन धरि। पूजिये जिनरायरे ॥ म०१ ॥ प्रथम ऋषभ जिन आद देवा, अजित दुजे नामरे। तीजे सम्भव अभिनन्द चौथे, सुमत पांचे धामरे ॥ म०२ ॥ पदम प्रभु छठ्ठे जिनेश्वर, सातम सुपारस वन्दरे। अष्ट कर्म को नास कीन्हे, आठमो जिनचन्दरे ॥ म०३ ॥ सुविधि नव मे, दशम शीतल, इह नाम चित्तमें धाररे। इगारमें श्रेयांस देवा. वास पूज्य जिन वारमें ॥ म०४ ॥ विमल तेरे ज्ञान निरमल, मुक्तिके गुण ठाणरे। भजन कीजै अनन्त जिनको चौदमो जिन भाणरे ॥ म०५॥ धरम जिन पंदरे तिर्थं कर सोलमों प्रभु शान्तिरे। सत्तरमो श्री कुंथ स्वामी जोति निर मल कान्तिरे ॥ म०६ ॥ अठारमें अरनाथ ज्ञानी, मल्ली

उगनीसमी कन्तरे । मुनि सुव्रत जिन वीस धारो नमि इक वीस सन्तरे ॥ म०७ ॥ नेमि जिन ब्रह्म व्रतधारी वावीस मो जिनदवरे, पार्श्व जिन तेवीस सुमरो वीर चौविस सेवरे ॥ म०८ ॥ चौविश जिन मन ध्यान करके, तरण तारण नामरे भाव भगति जिन भजन कीजे, मिले शिव निजधामरे ॥ म०८ ॥ जप तप सञ्जम करे, चेतन चन्दना त्रिकालरे । पढे गुणै सुने मनस्युं, तसघर मङ्गल मालरे ॥ म०१० ॥ इति

पुनः

सकल मङ्गल कला गुण निलो, महसेन वंश अव तंशरे, जननी सोभागणी लखमणा, टरवर शरोवर हंसरे ॥ १ ॥ अष्टमो जिनवर जग जयो प्रणमता पूरवै आसरे, चंदा प्रभु चन्दन सीयलो, अम्र मन अधिक उल्लासरे ॥ अष्ट०२ ॥ चवीय विजयन्त विमाणथी, चन्द्रपूरी अवताररे, वंश इण्या गये दीपतो, जय श्री रमण उर हाररे ॥ अ०३॥ रूप अनुराधाये जनमीयां, प्रभु तणी बृश्चिक रासरे, दश लाख पूरव आउखो, लाछ वशे सदा वासरे ॥ अ०४ ॥ जिसोरे आशो जीए पूर्णिमा चन्द्रमा निरमलो होइरे, मांहरी चित्त चकोर ज्युं, हरष लहे जोई जोयरे ॥ अ०५ ॥ चन्द लञ्छन धनु एकसो, उपर अधिक पचासरे, एतलो मानछे देहनो चन्द जिम उजलो जाशरे ॥ अ०६ ॥ राज्य छडीरे सञ्जम लीयो

स्वामिजी छठ तप कीधरे, कनक धारा घन वरसतां, दाम सम्वच्छरी दीधरे ॥ अ०७ ॥ सोम दत्ता घरे पारणो, प्रथम परमोद परमाणरे, सुर मिली उच्छव तिहां करे, सहूयभणे धन धन्यरे ॥ अ०८ ॥ नाग तरुणी तले उपनो, छठ तप केवल नाणरे, असीयने तेरहे गणधरा, चवदह पूरव जांणरे अ०९ ॥ साहु साहुणी गण परवऱ्या शिखर समेत गिरताम रे, पोहतला मांस तप सहससुं उत्तम शिवपूर ठामरे ॥ अ० १० ॥ (कलस) इम जिनवर नायक शिवसुख दायक चन्द्र प्रभु तिभुवन धनीय, आज अमीय घन वूठा जे प्रभु तूठा श्रीपूज पांश चन्द सुरी संथुनीय, अहनिश सेवा लागी हेवा, करवा इकचित्त हर्ष भरे, मन वञ्छित लहिये जिनगुण गहिये आवै नव निधि तासु घरे ॥ अ०११ ॥ इति

पुनः

सखीरे गौड़ी पाशका दरशन पायारे, मेरा रोम रोम हुलसाया ॥ सखीरे गौ० ॥ अति उत्तम गांम वीठोरारे वसै चन्दन मल लोढ़ा सोरारे, वाकुं सुपना दिया प्रभु मोरा ॥ स०१गौ० ॥ दूजा सावन मास वखांणीरे, सुदि इग्यारस दिन मांनोरे, प्रभु प्रगटै आधी रात जांनी ॥ स०२ गौ० ॥ वदि चौदश भादोकी छाजैरे, गज उपर प्रभुजी विराजैरे, भया उछव चढ़त दिवाजै ॥ स०३ गौ० ॥ देश देश के

जाती आयारे, प्रभु पूजाका ठाट बनायारे तव आनन्द घन घरसाया॥ स०४ गौ० ॥ भादो सुदि तृतीया मङ्गरातेरे ; सब खलक मुलक गुण गातेरे, प्रभु अन्तरध्यान होय जाते। स०५ गौ० ॥ दोय हीरा प्रभुजीके चल केरे मानुं सूरज चन्द्र मा झलकेरे, लाखू रुपिया आयके ढलके॥ स०६ गौ० ॥ नन्द पावक निधि महीसालेरे, प्रभु महिमा जगत विचालेरे कहे अबीर चन्द गुण माल॥ स०७ गौ०॥ इति

पुनः

दरशन दुरगत टाली, जिनन्द पद ॥ द० ॥ मकसुदाबादमें पनरै प्रासादे, वन्द्या सूरत सभाली ॥ जि० ॥ नमी नाथ तारे काशिमबजारे, आकृति अनुपम माली॥ जि०१॥ जिनमन्दिर जिन जिन पद देवे, जीवन जाने झकाली ॥ जि० ॥ सुमत अजित जिन महिमापूरमें, पारश सुवधि निहाली ॥ जि०२ ॥ बालुचरमें सम्भव प्रतिमा, दोय वन्दी लटकाली ॥ जि० ॥ आदिश्वररी अनुमति धारी, दुग्गतां कुमति निकाली ॥ जि०३ ॥ महावीर वसु पुज्य कीरति कानन, भात पारश प्रभु पाली ॥ जि० ॥ अजिमगञ्जमें सम्भव नमतां, नित नित होत देवाली॥ जि०४॥ पाश चिन्तामण पदम प्रभु जिन, सिद्ध गये देई ताली ॥ जि० ॥ अमिग्न सुमति गौडी मीठा, दीठा फोटिक गाली ॥ जि०५

नेम नाथ विरमचारी साहेब, चरण वन्दन रुचि चाली ॥ जि० ॥ जिन पूजा विन समकित नाही, जप तप सञ्जम ठाली ॥ जि०६॥ तीरथ प्रकाशी परताप सङ्घमें लछमीपती मति भाली ॥ जि० ॥ समता साली चेतन वाली, माल गूंथी टक शाली ॥ जि०७ ॥ उगनीसे सतरे सुदि मधु चोथे पाप सन्तती पर जाली ॥ जि० ॥ शान्ति सुधारस अङ्ग पखाली; रतन भई उजवाली ॥ जि०८ ॥ इति

पुनः

तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमैं, ध्यान धरुं पल पलमें ॥ पास जिनेश्वर अन्तरजामी, सेवा करुं दिन दिनमें। काहूको मन तरुणी सु रातो, काहूको चित धनमें; मेरो मन प्रभु तुमही सुं राच्यो, ज्युं चातक चित घनमें। जोगीश्वर तेरी गति जाने, अलख निरञ्जन छिनमें। कनक कीर्त्ति सुखसागर तुंही, साहिव तीन भुवनमें ॥ तु० ॥ इति

पुनः

नेमजी वन्दन गिरनार चली उग्रसेनकी लली (सती राज मति) ने० ॥ मारग जातां वूठा मेह, भिने साड़ी नव रङ्ग देह ॥ उ०१ ॥ देख गुफा वेठी तिनवार, चीर निचोवे राजुल नार ॥ उ०२ ॥ नवल रुप देखी रह नेम, सञ्जम छोड़ धरे मन प्रेम ॥ उ०३ ॥ यादव कुलमें साहस धीर, सीके

रतन मति खण्डो वीर ॥ उ०४ ॥ वमियो आहार वंछे नही कोय, अधमाधम नर कहिये सोय ॥ उ०५ ॥ विविध वचन कर राख्यो ठांय, देवर ने राजुल समझाय ॥ उ०६ ॥ नेम शरण परणम्या पाय, मुक्ति महलमे मिलिया जाय ॥उ०७॥ हीर धरम जंपे कर जोड़, भव भवना मुझ विघन पलाय उ०८ ॥ इति

पुनः

हांरे लाला श्री गौडी प्रभु पाशजी मे भेट्या धन दिन आजरे लाला-मरु धर देश देशां सिरे जोधांणो जस वन्तरे लाला ॥ श्री०१ ॥ हांरे लाला गाम विठोडो दीपतो जिहा पाली सहरने पासरे लाला चन्दणमल लोढो वसे तिन सुपन लह्यो पुण्य जोगरे लाला ॥ श्री० ॥ हांरे लाला सुपन फल्यो कारज सन्या तिहा वरत्या जय जय काररे लाला ॥ श्री०३॥ हांरे लाला भूमिथी परगट भया श्रीवांमा नन्दन पासरे लाला, श्याम पनग मस्तक रह्यो चोतो गयो निज पायालरे लाला ॥ श्री०४ ॥ हांरे लाला देश देशनां वहु मिल्या जिहां सहु चतुर विध थाटरे लाला ॥ श्री०५॥ हांरे लाला अष्ट द्रव्य पूजा करि जिहां पहरी नव नव वेसरे लाला। आभूषण अङ्ग धरी तिहां लेई प्रभु निज हाथरे लाला श्री०६ ॥ मकसुदावाद पूरव दिशे जिहां अजिमगञ्ज पूर

वासिरे लाला। गुलाल चन्द्र नाहार तिहां शितावचन्द्र बुध वानरे लाला ॥ श्री०७॥ हांरे लाला गजपर प्रभु थापन तिहां भेट करि बहु द्रव्यरे लाला। पुण्य कारज मोटी करी तिहां पायो सुजश सवायरे लाला॥ श्री०८॥ हांरे लाला सङ्घ सकल आनन्द लह्यो पायो दरश श्रीकाररे लाला। भादो वदि तृतीयां दिने अधरात सहु गुण गातरे लाला॥ श्री०९॥ हांरे लाला यक्षराज अवधी परे तिहां आवी बिंब ले जायरे लाला। देख सहु विस्मै रह्या जाती गया निज थान रे लाला॥ श्री०१०॥ हांरे लाला निधिमही सम्वच्छरु तिहां वरस नन्दवन्नी जाणरे लाला। कार्तिक कृष्णत्रयोदशी तिहां वन्दे प्रभु पद साररे लाला॥ श्री०११॥ हांरे लाला लुंपक गच्छमें दीपता श्री अजयराज सूरी महाराजरे लाला। तास चरण कजमें रही चन्द फते गुण गायरे॥ श्री०१२॥ इति

पुनः

मनड़ो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निश दिश जी चत्वारि अठदश दोय वन्दिया जी चिहुं दिश जिन चौविश जी॥ म०१॥ योजन योजन अन्तरे जी पावड़ साला आठजी आठ योजन उँचो देहरो जी दुख दोहग जावे नाठ जी॥ म०२॥ भरत भराया भला देहराजी। सौ भायांरा थुम्भजी आप मूरत सेवा करै जी, जाने जोई जै ऊभजी॥

म०३ ॥ गौतम स्वामी तिहां चढ्याजी वली भागीरथ गङ्ग जी। गोत्र तीर्थङ्कर बांधिया जी रावण नाटक रङ्गजी॥ म०४॥ देवन दिधि मुझने पांखडीजी। आबु केम हजुर जी समय सुन्दर कहे वन्दनाजी प्रह उगमते सूरजी ॥ म०५॥

पुनः

चिन्तामण पाशजी थांरो दरशन प्यारो जी ॥ चि० ॥ घाती अघाती खपायके प्रभु कीधा भवदुख दूर, आप सरूपी आपहो प्रभु सुख सागर भरपूर ॥ चिं०१ ॥ तुम आगे करु वीनति प्रभु बोलु वीतक वात, कांन देइने सांभलो प्रभु सेवकना अवदात ॥ चि०२ ॥ सुरनर तिरीयो नारकी प्रभु भमियो ए गति चार, पाप कमाया आपका प्रभु किसकुं करुं पूकार ॥ चि०३ ॥ दुनियां धन्धे वावली प्रभु न करे धर्म लिगार, लोभ लहरकी लालची प्रभु क्रोधी कपट भण्डार ॥ चि०४ ॥ आया तुम दरबारमे प्रभु मन धर आस अपार, कहत अबीर जिनन्दजी अब दीजै समकित सार ॥चि०५॥

पुनः

जय जय श्रीजिनराज जग जन अन्तरजामी तारण तरण जिहाज परमातम परिणामी ॥ १ ॥ परम पुरुष परमेश परमानन्द प्रधान परम प्रकास विशेष निरमल ज्ञाननिधान २ ॥ जगपत्ति पाश जिनन्द प्रभु तुमहो उपगारी सुनिये

सेवक जान ऐसी अरज हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद भूली मैं वहुकाल गमायो निज परभाव विवेक सुद्ध स्वभाव न पायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन भाव करम कलङ्कित कीनो ता कारन गुण छोड़ि पर औगुण चित दिनो ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुनि कान दिलमें रोस भराउँ अछता निज गुण ज्ञान सुनिवेकुं ऊमाऊँ ॥ ६ ॥ आश्रव पांच अशुद्ध दिलसे दूर न जावे कुमति कदाग्रह जोग समता सुद्ध न आवे ॥ ७ अव कुछ पुण्य सञ्जोग प्रभु तुझ मुद्रा पेषी सुद्ध अध्यातम लीन भाव अशुद्ध उवेषी ॥ ८ ॥ निरखि निरखि प्रभु विम्व मनमें आनन्द पाऊं गाउं तुझ गुणग्राम देव अवर नवि ध्याउं ॥ ९ ॥ करुणा करि प्रभु मुझ आतम निरमल कीजे ज्युं सुद्ध दशा प्रगटाय मोह विकलता छीजे ॥ १० ॥ भव भव निज पद सेव प्रभु सेवक कुन्दीजे श्री जिन भक्ति पसाय सुमति विलास वरिजे ॥ ११ ॥ इति

पुनः

गिरु आरे गुण तुम तणा श्रीवर्द्धमान जिन रायारे। सुणतां श्रवणे अमीझरे, म्हारी निरमल थाये कायारे ॥ गि० १ ॥ तुम गुण गण गङ्गाजले हुं झीलीनें निरमल थाउंरे अवरण धन्धो आदरुं निशि दिन तोरा गुण गांउरे ॥ गि० २ ॥ झीलया जे गङ्गाजले ते झिलर जल नवि पैसैरे मालति

फूले मोहियो ते वाउल जइ नवि वैसैरे ॥ गि०३ ॥ तुम गुण अमगुण गोठिसुं रङ्गइ राच्याने वलि माच्यारे ते किम रसरे आदरे जे पर नारी वसि राच्यारे ॥गि०४॥ तुं मति आसरुं आलम्बन मुझ प्यारीरे वाचक जश कहै मांहरे तुं जीव जीवन आधारीरे ॥ गि०५ ॥ इति

पुनः

सखिरी जागति जोत केशरीयारे मरुदेवी उदर अवतरिया ॥ सखि० ॥ पाप राशी पङ्क पखालीरे दूरगतिने दूर मती टालीरे। छवि नाथनी नयन निहाली ॥ सखि०१ ॥ वहुकाल थी दूरे टलियारे। प्रभु पुण्य योगे अटकलियारे॥ हिवे रूम रूम मांहे मलीया ॥ सखि०२ ॥ कु जीव कु देव मनावेरे। धुलेवा नाथ न ध्यावेरे एक पलकमे मुक्त पहुचावे सखि०३ ॥ सुभ सज्जन नाम धरावेरे। लख वातां कोई लल चावेरे पण निज गुण भेद न थावे ॥ सखि०४ ॥ देव दीठा दूजा तमामरे पिण अङ्के लक्ष्म्या कामरे एक ऋषभ जीवन विश्राम ॥ सखि०५ ॥ दिल झूठा मांनवी भेलूरे तुमे सुण ज्यो तैल न वेलूरे मारे एक घणो मन मेलू ॥ सखि०६ ॥ जो मनमें एह विचारुरे। किण कारण अवरने धारुरे। मुज हाथमे भव जल तारु ॥ सखि०७ ॥ उगनीसे चउदे चलियारे सुद पौपमें पातिक गलियारे एकम ने मनोरथ

फलिया ॥ सखि०८॥ तेज उपमा दिन कर कीधीरे। शान्ति सुरत चन्द्रमां दीधीरे। मुनि रत्न हिये धरि लिधी ॥ इति

पुनः

ऋषभ जिनेश्वर त्रिभुवन दिन कर वीनतड़ी अव धारो रे। जगना तारु, मुझ तारोरे कृपानिध स्वांमी। जग जश षास प्रगट छे ताहरो अविचल सुख दातारोरे ॥ ज०१ ॥ निजगुण भोक्ता परगुण लोप्ता आतम सकति जमायोरे ॥ ज०२ ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुनी हुं तुम शरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुझ रिझावन हेते ततखिन नाटिक खेल मचायोरे ॥ ज०३ ॥ काल अनन्त रह्यो एकेंद्री तरु साधारण पांमीरे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलिविगलेंद्री भेप धन्यां दुखधामीरे ॥ ज०४ ॥ सुरनर तिरिवली नरक तणी गति पञ्चेंद्रि पणो धान्योंरे ॥ चौविशे डण्डकमें हुं भमतो अव तो हुं पिण हान्योरे ॥ ज०५ ॥ भव नाटिक नित प्रतिकर नव नव हुं तुम आगल नान्योरे ॥ ज० ॥ समरथ साहिव सुर तरु सरिखो निरखि तुझने जान्योरे ॥ ज०६ ॥ जो मुझ नाटिक देखी रीझ्या तोमन वञ्छित दोजेरे ॥ज०॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भाखो वलि नाटिक नवि कीजैरे ॥ ज०७ ॥ लालच धरहुं सेवा सारुं तूं दुखड़ा नवि कांपेरे ॥ ज० ॥ दाता सेती सूम भलेरो वहिलो उत्तर आपेरे ॥ ज०८ ॥

तुम सरिखा साहिब पिण माहरे जो नवि कारज सारोरे ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अवली दोस न कोई तुमारो रे ॥ ज०९॥ दीन दयाल दया कर दीजे सुध समकित सहि नाणीरे ॥ ज० ॥ निगुण सेवक ना वञ्छित पूरो तेहिज गुण मणि खाणीरे ॥ ज०१० ॥ वरस अठारे गुणतालीसे जेठ शुक्ल सोमवारोरे ॥ ज० ॥ लालचन्द प्रतिपद दिन भेट्या विकानेर मझारोरे ॥ ज०११ ॥ इति

पुनः

फलोधी पासरे जिन पूजो, ऐसो देव नही कोई दूजो फ० ॥ वञ्छित फल दायक स्वामी, अन्तरगत अन्तरजामी श्रीपारश जिन जशनामी ॥ फ० ॥ सेवै नर नर भव धारी मूरत मन मोहन गारी तुझ मूरतकी वलिहारी ॥ फ० ॥ नर पाण काया छे पदपङ्कज नाग रहे छे इम आगम ॥ दरशन सुध चित्त ने आणो आयु सते विन जगपति जानो ॥ फ० ॥ अश्वसेन था वामादेवी मात, पोष दशमी दिने धरणेन्द्र प्रभुजीने दीसे, पद्मावती पूरणे मंद टहासे॥फ०॥जे नर दिलसे जश गावे ट ने ध्यावे, ते उत्तम शिवसुख पावे, फलो० न पजो ॥ फ० ॥ इति

पुनः

तीरथनी आसातना नवि करिये नवि करियेरे नवि करिये॥ धूप ध्यान घटा अनुसरिये, तरिये संसार॥ ती०१॥ आशातना करता थका धनहानी भूख्यां न मले अन्नपाणी कायावली रोगे भराणी, आभव मां एम॥ ती०२॥ परभव परमाधामी नै वस्य पड़से, वैतरणी नदीमां भलस्ये अगनीनें कुण्डे वलस्यै, नही शरणुं कोय॥ ती०३॥ पूरव नवानुं नाथजी इहां आया साधु केइ मोक्ष सिधाया, श्रावक पण सिद्ध सुहाया, जपतां गिरि नाम॥ ती०४॥ अष्टोत्तर शत कुट एण गिरि ठांमे, सौदर्य ९२ यशो धर९३ नांमें, प्रीति मंडण ९४ कांमुक कांमें ९५ वली सेंहजानन्द ९६॥ ती०५॥ महेन्द्रध्वज ९७ सरवारथ सिद्ध ९८ कहियें, प्रीयङ्कर नांम ९९ ए कहि ए, ए गिरि शीतलछांहे रहिए।नित्य करिए ध्यान ती०६॥ पूजा नवांणु प्रकारनी इम कीजे, नरभवनो लाहो लीजै, वलि दान सुपात्रे दीजें, चड़ते परणाम॥ ती०७॥ सेवन फल संसारमा करे लीला रमणी धन सुन्दर वाला शुभ वीर विनोद विशाला, मङ्गल शिवमाल॥ ती०८॥ इति

पुनः

आज गिरराजके शिखर सुन्दर सखी, होत हैं अतुल कौतुक महा मन हरण। नांभिके नन्दकुं जगतके वन्दकुं, ले

चले इन्द्र मिल जनम मङ्गल करण ॥ १ ॥ हाथ हाथन धरे सुरन कञ्चन घरे खीर सागर भरे नीर निरमल वरण ॥२॥ नाचत सुर सुन्दरी रहस रसस्सु भरी गीत भावे अरी देत तालो करण, देव दुंन्दुभी बजे वेन वांशी वजे एकसी पडत आनन्द घनकी भरन ॥ ३ ॥ इन्द्र हरषित हीये नेत्र अजरी कीये तृप्ति न होत पीय रूप अमृत झरण, दास भूधर भने सु दान देखे बने कहत के लोक लख जीभ न सके वरण ॥

पुनः

अपने घर वैठा लील करो निज पुत्र कलत्र सुं प्रेम धरो तुम देश देशान्तर कांइ दोडो नित नाम जपो श्रीनाकोडो १ ॥ मनवञ्छित सगली आस फले शिर ऊपर चामर छत्र ढले आगल चाले झिलमिल घोडो ॥ नि०२ ॥ भूत प्रेत पिशाच वली, डाकणने साकण जाय टली, छल छिद्र न लागे कांई झोडो ॥ नि०३ ॥ एकन्तर ताप सीयो दाह औपद धिन जाय थई माह दूखै नही माथो ने पग गोडो ॥ नि०४ कण्ठमाला गड गूवड सवला व्रण वेदन रोग टले सगला पीडान करे पशुवन फोडो ॥ नि०५ ॥ न पडे दुर्भिक्ष दुकाल कदा सुभ वृष्टि शुभिक्ष सुकाल सदा ततखिण अशुभ करम तोडो ॥ नि०६ ॥ जागतो तीरथ पाश पहु जाणे ए वात जगत सहु मुझने भव दुखथी छोडो ॥ नि०७ ॥ श्रीपाश

महेवापूर नगरी, में भेट्या जिनवर हरप धरी समय सुन्दर कहे गुण जोड़ी ॥ नि०८ ॥ इति

पुनः

आज गई थी में समोव शरणमे जिनवचनामृत पीवारे आ० ॥ श्रीपरमेश्वर वदन कमल छवि निरख निरख हरषे वारे ॥ आ०१ ॥ तीन भुवन नायक सुध्यातम तत्व अमृत रस वूंठारे ॥ आ०२॥ सकल भविक वसुधा ना नाली म्हारो मन तिण तूठोरे ॥ आ०३ ॥ मन मोहन जिनवर जी मुझने अनुभव प्यालो दीधोरे ॥ आ०४ ॥ सम्यग ज्ञान हिये भज रस अनुपम, भक्ति पवित थई पीधोरे ॥ आ० ५ ॥ पूर्णानन्द अक्षय अविचल रस सुच निध वोध समापोरे ॥ आ०६॥ भोली सखियां किम जोवो मोहे मगन मतीमें राच्यो रे ॥ आ०७ ॥ देव चन्द्र प्रभु एक ताने, मिलवो ते सुख साचोरे ॥ आ०८ ॥ इति

पुनः

आज म्हारा नयनां सफल थया, विमलाचल निरखि गिरीनें वधावुं मोतीड़े, म्हारा हियडामें हरखी ॥ आ० ॥ धन धन सोरठ देशमें जिहां तीरथ जोड़ी, सेत्रुंजा गिरवरनें वन्दु वेकर जोड़ी ॥ आ०१॥ साधु अनन्ता इन गिरि सीधा अनशन लेई राम भरत नारद ऋषि बीजा मुनिवर केई ॥

आ०२ ॥ मानव भव पामी करि, नवि तीरथ भेटे। पाप करम करि आकरा कहो केम करि मेटे ॥ आ०३ ॥ तीरथ राज समरु सदा सारे वञ्छित काज, दुख दोहग दूरे करि आपे अविचल राज ॥ आ०४ ॥ सुख विलासी प्राणीया माङ्गे अविचल सुखडा, मानिक चुनी नामथी भागे भवोभव दुखडा ॥ आ०५ ॥ इति

पुनः

श्रीसम्भव जिनरायां, जगजीवन ज्योति सवायारे। सुगणा। श्रीजिनराज जुहारो। तुम आतम काज सुधारीरे। सु० श्री० ॥ सेना राणीनन्द जितारी राजा कुलचन्द रे ॥ सु० श्री० ॥ सावथ्थीपूरि स्वामी। हयलञ्छन जग हितकामीरे ॥ सु०२ ॥ धनुष च्यारसे मान, तनु सोहे सोवनवानरे सु० श्री० ॥ आठ थिति सुविचार, पाठ लाख पूरव मन धाररे ॥ सु० श्री०३ ॥ ग्रैवेयक सूर धांम, सप्तम थी आव्या सांमरे। एक सहस नर साथ व्रत लीधो श्रीजगनाथरे ॥ सु०श्री०४॥ शाल तले वरणान, उपज्यो तप छठ सुजानरे॥ साधु हजार समेत शिवपहुता शिखर समेतरे ॥सु०श्री०५॥ वरस अठार चोमाले माधव पञ्चमी उजवालेरे ॥सु०श्री०॥ अभिनव चैत्य मझार, पध राव्या हरष अपाररे ॥ सु० श्री०६॥ प्रभु भरत मन हारी। निरखतां शिवसुख कारिरे।

प्रीति सागर गणि सीस कहै अमृत धर्म गणीसरे॥ प्र॰ श्री॰७॥ इति पुनः

आज हमारे हर्ष वधाइ उछव आज सवाइरे लो। प्रभु जी पधार्या चैत्य मझारे, प्रगटी पूरव पुण्याइरे लो॥आ॰१ पाश जिनेश्वर पुरसा दांनी वामासुत वरदाइरे लो। श्रीअश्व सेन नरेश्वर नन्दन। अहि लञ्छन सुखदाइरे लो॥ आ॰२॥ महाजन टोलि पूरवर छाजे, मन्दिर अधिक उछाइरे लो। फिटक रयण मय मुरति प्रभुनी देखत दुरित पलाइरे लो॥ आ॰३॥ वरस अठारे सैताले माधव, सुदि पञ्चमी सुखदाइरे लो। शुभ महुरत शुभ वार शुभ लग्न विधि सेति पधराइरे लो॥ आ॰४॥ श्रीजिनचन्द महागुण अमृत धर्म सुगुरु सुप साइरेलो। सीस क्षमा कल्याण उल्लासे कीर्त्ति प्रभुजीनि गाइ रैलो॥ आ॰५॥ इति पुनः

जगपति नेमि जिनन्द प्रभु म्हारा। जगपति नेमि जिनन्द। बाविसम शासन धणी। गिरुवा गणपति राज॥ समुद्र विजय शिवानन्द प्रभु म्हारा॥ स॰ श्यामल वरण सुहामणो॥ गि॰॥ यादव कुल सिनगार॥ प्र॰ शङ्ख लंछन पद शोभतो॥ गि॰ शोरीपूर अवतार॥ प्र॰ अपराजित सूर लोक थी॥ गि॰२॥ देह धनुष दशमान॥ प्र॰ रूप अनुप विराजतो॥ गि॰ आंऊ थिति परमाण॥ प्र॰ वरस

संहस इक भति भलो ॥ गि०३ ॥ नव यौवन वरनार । उग्र सेन नृप नन्दिनी ॥ गि० नव भव नेह निवार ॥ प्र० राजुल राणी परिहरि ॥ गि०४ ॥ पशुवां तणीय पुकार ॥ प्र० सांभल करूणा रस भन्या ॥ गि० रथ फेरी तिनवार प्र० फिर आया निज मन्दिर ॥ गि०५ ॥ देई सम्वच्छरी दान ॥ प्र० गिरनारे सञ्जम ग्रह्यो ॥ गि० पामी केवल ज्ञान ॥ प्र० सङ्घ चतुर्विध थापियो ॥ गि०६ ॥ पञ्च सयां छत्तीस ॥ प्र० मुनिवर साथे मुनीपति ॥ गि० शिष पुहता सुजगीस ॥ प्र० पद मासन बैठा प्रभु ॥ गि०७ ॥ मास खमण तप मान ॥ प्र० कर अनशण आराधना ॥ गि० गढ गिरनार प्रधान ॥ प्र० तीन कल्पाणक तिहां थया ॥ गि०८ ॥ योगीश्वर सिरदार ॥ प्र० निरुपाधिक गुण आगरू ॥ गि० अविचल आतम राज ॥ प्र० पाम्यो परमानन्द में ॥ गि०९॥ सकरण वीर्यनो अन्त ॥ प्र० अकरण वीर्य अनन्तता ॥ गि० अव्या बाध अनन्त ॥ प्र० सुख अमृत रूपी सदा ॥ गि०१० ॥ नगर अजिमगञ्ज भाण प्र० ॥ नेमि जिनेश्वर साहिबा ॥ गि० शुद्ध क्षमा कल्याण प्र० आतम गुण मुझ दिजोए ॥ गि०११ ॥ इति

राग आशावरी

अवधू सो योगी गुरु मेरा, इन पदका करोरे निवेडा॥

अवधू० ए आंकणी ।। तरुवर एक मूल विन छाया, विन फूलें फल लागा । शाखा पत्र नहीं कछु उनकुं, अमृत गगनें लागा ।। अ० १ ।। तरुवर एक पंखी दोउ बैठे, एक गुरु एक चेला । चेलेने जुग चुन चुन खाया, गुरु निरन्तर खेला ॥ अ० २ ॥ गगन मण्डलके अधविच कुवा, उहां है अमीका वासा । सुगुरा होवे सो भर भर पीवे, नगुरा जावे प्यासा । अ० ३॥ गगन मण्डलमें गउआं विहानी, धरती दूध जमाया माखन था सो विरला पाया, छाछे जगत भरमाया ॥ अ० ४ थड विनुं पत्त पत्र विनुं तुम्बा, विन जीभ्या गुण गाया । गावन वालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही वताया ।। अ० ५ ॥ आतम अनुभव विन नही जानें, अन्तर ज्योति जगावें । घट अन्तर परखे सोही मुरति, आनन्दघन पद पावे ॥ इति

रागिणी कानड़ा

करे जारे जारे जारे जा ॥ करे० ॥ सजि सणगार वनाये भुखन, गई तव सूनी सेजा ।। करे० १ ॥ विरह व्यथा कछु ऐसी व्यापति, मानुं कोई मारति नेजा ॥ अन्तक अन्त कहां लुं लेगो प्यारे, चाहे जीव तुं लेजा ।। करे० २ ॥ कोकिल काम चन्द्र चूतादिक, चेतन मत है जेजा ॥ नवल नागर आनन्दघन प्यारे, आइ अमित सुख देजा ॥ करे० ॥ इति

तेलाना

दानी दीम् ताना दिरना दानी, तुं सुन लेरे महाज्ञानी ऐसो तु क्या मनमें सेट भयो तेने भजनन कीनो क्या कर ते नादानी ॥ता०१॥ सासो सासमे आता हे, ए दो दिनका नाता हे पीछें कोई माता न भ्राता काम क्रोध मद मोह लोभ मायामें फिरत भुलाना अज्ञानी ॥ दा०२ ॥ करणा हो सो अवही करले अवसर होय भवसागर तिर ले प्रभु नांम हिरदामे धरले, लाल चरणकुं दृढ धरले जाको ध्यान धरत सुरनर मुनि ज्ञानी ॥ दा०३ ॥ इति

स्तवन

ज्ञान जोवे मन होवे सुरपती क्रोधे सन न न न न। रे रें कमण्ठनीं दुर अन्याई अधम आ ज्ञानी सुर, मछराला हुवा काला, वीकराला असराला, नही धर्मने पाया क्रोध अन्यग्या, आही अन न न न न ॥ ज्ञान०१ ॥ शब्द सुणी सुरपतीनां साचा राच्या धर्म प्रमाण। थरें राया तीहा आया मिटी माया मन भाया करजोड क्षमाया शीश नमाया चेते चन न न न न ॥ ज्ञान०३ ॥ स्तवना कीधी श्रीजिनवरनी पाम्यों समकितपर। जयदेवा करु सेवा पावु मेवा सुख लेवा तो पेर वारी जगसुखकारी जिते जन जन जन ॥ इति

पुनः

अै०० पाणी पड़े असराल, प्यारा श्रीजिनवरने सीसे संभाल ॥ अै०॥ जयाने विजया नाचनारी शपत् सुरनी जाम नारी, रङ्गे नाटकनी ताल प्यारा॥ अै०॥ कींचुक कसीया तेज वसिया हरखे हैजेने विकसीया, देह घनी सुकुमार, प्यारा भाव भक्ति अति सुयुक्ति, हाव भावे शोभे शक्ती उदय भणे एक ताल प्यारा ॥ ये० ॥ इति

पुनः

भवी धरो जिन ध्यान, कीर्त्तवाग वीच जायरे ॥ ए आंकणी ॥ कीर्त्तवागना देवल मांही, मुर्त्ति दोय दील लायरे भ०१ ॥ वासु पूज्यने पार्श्व प्रभु तिहां, कसवटी मय छायरे भ०२ ॥ श्यामली मुर्त्ति अमी वहु झरती, देखत मन हुलसायरे ॥ भ०३ ॥ धर्म धुरन्धर धर्म तुमारो, धर्मी दिलडे धरायरे ॥ भ०४ ॥ कर्म अनल शीतल तुमें कीनो, सम रस जल छटकायरे ॥ भ०५ ॥ त्रिभुवन पूज्य वासु पूज्य मेरा ज्ञानावर्ण मिटायरे ॥ भ०६॥ पार्श्व श्यामला श्यामता फेड़ी उज्वल हंस घनायरे ॥ भ०७ ॥ इति

होरी

लाल तेरी नयनोंकी गति न्यारी, एतो उपशम रसकी क्यारी ॥ लाल० टेर॥ काम क्रोधादि दोष रहितहैं, नेनभये

अविकारी, निद्रासुपन दशा नही यामे, दरशना वरण निवारी ॥ लाल०१ ॥ उर नैनमे काम क्रोध है, वहत भरिए खुमारि। परधन देख हरणकी इच्छा, या माहे हुसियारी ॥ लाल०२ ॥ एसा लछन है नयनोंमें क्यु पामे भवपारी। योंही विचार करो दिल अपने, होत कर्मसे भारी ॥ लाल० ३ ॥ धरम विना कोई शरणा नही है, एसो निश्चय धारी। विनय कहे प्रभु भजन करो नित, उही तारण हारी ॥ इति

जोगियाकी चाल

जिनजीसुं मोरी अरज लगी अव मोहे दरशनकी चाव जी। केशर कटोरी खूब भरी है जिनजीकी अङ्गिया रचाव जी०१ ॥ फूल चङ्गेरी एसी भरी है जिनजीका वङ्गला छवाव जी०२ ॥ हरखचन्दकी एही अरजहे छुल छुल सीस नमाव। जी० ३ ॥ इति

रागिणी खम्बाज

शीतल जिनवर तार हो, तोरी शरण गही है। आंकणी वदन कमल सुभ जग मन मोहे, भाजत सकल विकार हो तोरी ॥ तोरी०१॥ कल्प तरु तूं वञ्छित पूरे चूरे कर्म करार हो ॥ तोरी०२॥ तुमरे चरणकी शरणा लेई है कर भवदधिसे पार हो ॥ तोरी०३ ॥ आतम आनन्द चिद घन मूरति कामित फल दातार हो ॥ तोरी०४ ॥ इति

स्तवन

विषय वासना छुटत न मनसे नाहक नर वैराग धरे हो ॥ वि० ॥ जलमैं मीन वझै वंशीमे जिभ्याके कारण प्राण हरे हो, सो रसना वश किया नही जोगी नाहक जोगकुं साध मरे हो ॥ विष०१ ॥ वनमें रहे मृगा निशि वासर काहूको नही दोष करे हो सो मुरली धुन सुणै इन कांने व्याधा वाण सें प्राण हरे हो ॥ विष०२ ॥ नयनन कारण मरत पतङ्गवा फरस फांस गजराज परे हो नासा भ्रमरवा नाश भए हैं पांचुंही रससें पांच मरे हो ॥विष०३॥ कर जप दान तीरथ व्रत पूजा मौनी हो कर ध्यान धरे हो लखमीपति तव लग सब झूठा जब लग मन नही हाथ करे हो ॥विषय०४॥ इति

(निर्वानका स्तवन)

वीर जिन सिद्ध थया सङ्घ सकल आधारोरे, हिव इन भरत मां कुण करिस्यै ऊपगारोरे ॥ वी०१ ॥ मारग देशके मोक्ष नोरे केवल ज्ञान निधानरे। भाव दया सागर प्रभुरे पर उप- गारी प्रधानोरे ॥ वी०२ ॥ नाथ विहूणा सेण ज्युंरे वीर विहूणोरे सङ्घ। साधे कुण आधार थीरे परमानन्द अभङ्गोरे वी०३ ॥ निर्झामिक भव समुद्र नीरे भव अड़वी सत्य वाह ते परमेश्वर विन मिल्यारे किम वाधै उच्छाहोरे ॥ वि०४ ॥ मात विहुणा वालुं आरे उरह परह अथड़ाय। वीर विहूणा

भविजनारे आकुल व्याकुल थायरे ॥ वि०५ ॥ सशय छेदके वीरनीरे विरह ते केम समाय। जे देखि चित्त उल्लसेरे ते विन किम रही वायौरे ॥ वी०६ ॥ वीर थका पिण सूतनीरे हूं तो परम आधार। हिव इंहां श्रुत आधार छैरे अथवा जिन मुद्रा सारोरे ॥ वी०७ ॥ ईण काल सर्व जीवनीरे आगम थी आनन्द। ध्यावो सेवो भवि जनारे जिण पडि मा सुख कन्दोरे ॥ वी०८ ॥ गण धर आचार्य्य मुनीरे सहूने इन विधि सिद्धि। भव भष आगम सङ्गथीरे देव चन्द्र पद लीधिरे ॥ वी०९ ॥ इति

चाल नाटक का

प्यारे मेरे प्रभुजीपे वारी वारी जाउं। छन न न नांचुं दे छुम छुम छुम ॥ प्या० ॥ एकतो अलवेली सोहे अङ्गीपे अङ्गी, दुजे मुकट मोतिनका विशाल। तीजे फुलनकी बैठक वणी है, खुस खुस थांट तोरा मुखडा निहाल ॥ प्या० ॥ वेग वधावे प्रभु देखनकु जावे, जैरी जुगतकी छोडी जञ्जाल मङ्गल रङ्ग एही अङ्गमां छाजे शान्ति सङ्घ मां स्थापे विशाल प्या० ॥ इति

पुनः

पञ्चम जिन जस आपो दयालु धनी ॥ प० ॥ देश शिरोमणि वङ्ग विराजै अजिमगञ्ज अति उत्तम छाजै तिहां

भविजननें आप निवाजै, दयालु धनी ॥ प०१ ॥ पञ्चम गतिना दायक तुमही, सेवासारे सुरपति सवही, तथी पामे सुन्दर सिवही दयालु धनी॥प०२॥ शान्तिक पूजा सह्रसुख-कारी भक्ति वछल भगवन्त तिहांरि । सुरनर मुनिनें लागै प्यारी कारी पारी प्यारी दयालु धनी ॥ प०३ ॥ औस वंश नख नाहार सुधारी, राय वाहादुर पद विस्तारी शितावचंद सुखलहे अपारी, धारी तारी अपारी दयालु धनी ॥प०४॥ खरतर वीरुद भटारक भावे, श्रीजिनकीर्त्ति नाम धरावै पाठक उदै गणी तुमें ध्यावे, भाव धरावे ध्यावे दयालु धनी प०५ ॥ इति

लावणी

सुण सुण सखियां हमारी, मुझे नेम पियाने विसारी । टेर ॥ प्रभु तोरणकुं जव आए तव शोर पशुने सुनाए जव जाय चढ़े गिरनारी ॥ मु०१ ॥ सखी राजुल जाय सुनावे तोहे नेम प्रभु छटकावे वे परणी मुक्ति नारी ॥ मु०२॥ एतो शोक कहांसे आई, मेरे प्यारे कुं भरमाई, में भई हुं निरा धारी ॥ मु०३ ॥ तुम्ह मात पिता सुणो भाई, में सञ्जम लुंगी जाई, प्रभु पहली गई शिव प्यारी ॥ मु०४ ॥ जैन प्रकास अमृत फल पावे, गुण जिन दास ज्युं गावे, चरण कमल चितधारी ॥ मु०५ ॥ इति

पुनः

श्रीवासुपूज्य महाराज, सकल सुख काज, सुधारो आज, सुधारो आज। जयवन्ता छो जगमांहि, तुमे महाराज ॥ ए आंकणी ॥ देवोमां जेहवो इन्द्र, तारामां चंद न्यायीमा राम, न्यायिमां राम। तेम सुरूपवन्तमां रूडो दीसे काम ॥ रूपवन्तीमाहे नार, खरेखर सार, विराजै रम्भा, विराजै रम्भा। तिम वादित्रोमां वागे रूडी भम्भा ॥ साहासिमा रावण आप खपावी पाप, कऱ्यो निज काज, कऱ्यो निज काज ॥ज०१॥ ऐरावत हस्तिमांहि, वडो छे तांहि, वीजो कोई नाहि, वीजो कोई नाहि। तिम अभय विराजै बुद्धिवन्तनी मांहि ॥ तीर्थोमां मोटू तेह, शत्रुञ्जय जेह, नथी कोई वीजुं, नथी कोई वीजुं ॥ जिम पुण्य पापथी वली नही कोई त्रिजु। नवकार समो नहि मन्त्र, नहि कोई तन्त्र, नहि कोई साज, नहि कोई साज ॥ ज०२ ॥ सहकार तरुमां सार, वरावर यार, कहू छुं साचुं, कहू छुं साचुं। तिम वासुपूज्य जिनदेव जोई हुं राचुं ॥ नही देव जगतमां थाय, विद्रुम सम काय, वीजो कोई तेवो, वीजो कोई तेवो ॥ श्रीवासुपूज्य महाराज जिनेश्वर जेवो ॥ तसगुण गणसरनी पाल, रमे छे मराल, सुखके काज सुखके काज ॥ जय०३ ॥ इति



पुनः

सखि जिन-मुखचन्दा दरसन बिन तरसे नैन चकोर जी ॥ ॥ द० ॥ गज रथ सुख आसन प्या दल करि ज्युं घन अम्बर छाय । सेल नीसान कीसान करण हरि दामनि ज्युं चमकाय, वसु जल वरसन मेघ आलि मिलि जादु दल सबल बनाय । जलधर धीरे सोर-सम सजानि दुन्दभी ताल वजाय ॥ (दूहा) दादुर जीम हरषित भए जाचक रटना रटंत, गीत मिसी लियो है सखी मन मोर झींगार करंत कन्त पूरण सुख कन्दा॥द० १॥जव तोरण लेई व्याहन कारण प्रभुजी आवन कीन, तव पशवन मिल दिल दुख धर कर वतलावन कर लीन, हमकु विन तकसीर चोर ज्युं कारागार कर दीन, वन्ध छुड़ाय फीराय चले रथ चीन रतन वर तीन॥ (दूहा)कांकन डोरी कर नही सीर धान्यो नही मोड मैं अवला बिलखत मुखी खड़िरही करुं जोड़, तोड़ गए नेम जिनन्दा॥२॥ राजुल विरह विजोग निरोधिन भई मनु चेतन हीन मात पिता हरी राम श्याम विन जैसे जलचर मीन गजगति गामनि शशी मुख राजुल काजल दृग जल छिन कहे सखी ऋषभादिक तीरथ करियो जग एक नविन ॥ (दूहा) मन मोहन प्रीतम भए समुद्र विजै कुलख्यात गिरनारी छल कर गए जादुनी-सठ जात, मात शिवा देवीके

नन्दा ॥८•३॥ धर धीरज राजुल सखीयन सह प्रणम्यो जिन गिर जाय, कर-युग जोड मोड शिर अपनों अरज करे चित ल्याय तुम था लीनों अजयराज सो हमकु धीन धराय। अमृत परसउता तमरारी अरती दुरगति विसराय ॥ (दूहा) प्यारी पहली पिउमें करम भरम चक चूर, चढ शिवपुर सजनी भई जय नय चन्द कपुर, दूर गए भव दुखफन्दा ॥

पुनः

सुन्दर शोहे मरुधर मांही मन्दिर मोटा पालिका, सिन्धु मन्धुना तारक नौका बन्धु सुन शिर आलीका ॥ सु० १ ॥ मूल धरमी सचा सिक्का देखाजो टकशालीका, तमाम तस्कर चम्पत हुवा कुमति नाम विकरालीका ॥ सु० २ ॥ शान्ति नाथ प्रभु गोडी पारश नव लख पारश हालीका, अचिरानन्द सुपारश स्वामी अन्तरयामी मालीका ॥ सु० ३ ॥ मन्दिर पञ्च सहरके अन्दर एक भापरी भालीका, भवि चमन्दा कर निकादा कारक प्रकाम अरची मालीका ॥ सु० ४ ॥ उगणीस धीमें मास असाढ दशमी दिन उजवालीका। पूरणसिद्ध सम्पूरण परसी शान्तिरतन परनालीका ॥ सु० ५ ॥ इति

पुनः

अखण्ड इन्द्रा मालवा खण्डमें महिमा त्रिभुवनमें भारी सुरपतिकी छिब दिलसे उतरी देखी मगसी छिब प्यारी ॥

अख०१॥ संग्रामसोनी वारुण पोणी सुन्दर मन्दिर करवाया माण भद्र भैरू के वढ़कर परचा पृथिवी पद पाया ॥ अ०२॥ पन्नालाल गुजराती पारख सिरदार जितमल्ल जयकारी, उग नीसे एक मिल सहुं सौंपी मन्दिर सुखत्यारी ॥ अख०३ ॥ कोट उचुनीं आक पद उठाया बाग लगाया गुलजारी, रतपुर से राज बुलाया काम चलाया हद भारी ॥ अ०४ ॥ पञ्च प्रचण्डा दण्ड चढ़ाया अङ्ग भूषणकी माला, काम कुम्भका काम उठाया सार कराया सत्तू शाला ॥ अ०५॥ कनक कलस जिन शिखर चढ़ाया मुलक मुलकका भक्त मिला, उगनीसै सोले तेर काती चढ़ती तेरस चन्द्र कला ॥अख०६ ॥ मोटा मोदक मोटा मनका भोग चढ़ावै थाल भरी, छप्पन भोगकी शोभा करके विषय भोगकी भूख हरी॥अ०७॥ अंबद लेवा नि-षेद सेवा देवा दरशनकी त्यारी,इसदरवार सदा दिवाली पूजा पारशकी प्यारी ॥अ०८॥ कात्तिकपूणिम वैशाख मेला डाक-णीया डरवा लागी, माण भद्रकी ज्योति जोई ने भूतणीयां सब पड़ भागी ॥ अ०९ ॥ फूल किनारी केशर क्यारी अङ्गि या अँखियामें अटकी, कुटिल कला सब कुमति नटकी छिन भरमै बोसय छटकी॥अ०१०॥पारशदेवका दरशन पाया दिल हुलसाया भविजनका, अचरिज आया देवल देखा ताप बुझाया निज मनका ॥ अ०११॥ गौड़ी पारश दरशन दीना

सुपरीश्वरका हुकम चढा, देश देश परवाना भेजा मुलक मुल्क का सङ्घ जुडा ॥ अ० १२ ॥ शुभ उगणीसै पांडग वर्ष यदि आठम आषाढ वडी, श्य. अचम्भा क्यि नीचै गौडी म व्या सकल घडी ॥ अ० १३ ॥ अनन्द मेथा सिरदार मल्लजी नन्दन धनपति वनदाऊ, तीन लाख जन मेला करके जैन धरमकु उजवाला ॥ अ० १४॥ उगणीसै चौविशे माधव पूगम दिन पूगम जाता, सङ्घ उदय करी लेपकी पूजा शान्ति रतन पद रङ्ग राता ॥ अ० १५ ॥ इति

पुनः

बनारसीमे वन्दन कीया सोले कल्याणक श्रीजिनका भेलपुरमे पाश भेटके मयल मिटाया निज मनका, भदियाने में नाथ सुपारश आप दिवी आतम धनका, दुरगत कुमती डर गई सुनके बजे वीर घण्टा रणका ॥ वना० सोले ० ॥ श्रेयास जिन सिंहपूरिमे बाग बना बन नन्दनका, चन्दपूरीमें चंद नरेश्वर जैसे शीतल चन्दनका॥ बना० सोले०॥ रामघाटमें घाट बना हे कुशल चन्द मुनी सन्तनका। अचिरज आया देवल देखी तार कुराया सङ्घनका ॥ बना० सोले० ३ ॥ उगनीस विस माघ सुद पूगम महर निजर धरके ऊनका, बना० सोले० ४ ॥ पूरन पाना कीया सव सङ्घने सन्त रतन माना गुणका ॥ बना० सोले० ५ ॥ इति

पुनः

सजन तेरे दिलकुं समझाना। सातवारकी करनी सुन कर तनमन हुलसाना ॥ स० आ० १ ॥ आदीत वारकुं अति आदरसे सुगुरु पास जाना। जिन आगम अमृत रस पीके समता घर आना ॥ स० २॥ सोमवार कहे सुध क्रिया कर समकित धन लाना। विकथा च्यार अठग परिहरके जिन पद गुण गाना ॥ स० ३ ॥ मङ्गलवारकुं ममत तजो तुम धरो धरम ध्याना। जगत्‌जालमें मत कोई उलझो सुनो बात स्याना ॥ स० ४॥ कहे बुधवार विमल बुध करकै छोड़ो अभिमाना। सुकरित दान दया दरशनसें करिलो पहिचाना ॥ स० ५ ॥ गुरुवार कहे सुनरे प्राणी दुरलभ नरभव पाना। करना होय सो करो पियारे काल फिर छाना ॥ स० ६ ॥ शुकरवार कहे सीयल धरो तुम आतम हरषाना। परनारि जननी सम जानी पामो शिवथाना ॥ स० ७ ॥ थावरवारमें थिर चित्त करकै पढ़ो अचल ज्ञाना। अवसर बीते फिर क्या होगा पीछे पछताना ॥ स० ८ ॥ सातवारकी करनी ऐसी करियो सब सजना। कहत अबीर धरम चित राखो मिथ्या मति तजना ॥ स० ९ ॥ इति

पुनः

मेरे तो दिलका महरम तुंही तुंही, नाभिनन्दन भगवान, तुंरे

दरशनसे कलशा माणजी । मेरुशिखर परवत पर मन्दिर जिहां प्रभुजी राजे नभमें देव दुन्दभी बाजे जी । शुद्ध सेत्र शत्रुजे स्वामी, आप अधिक राजे जोतसे चन्द सूरज लाजे जी, तुम जगमें जिनराज प्रगट भये, दो दरशन भगवान॥ ते०१ ॥ अष्टापद पर आद जिनेश्वर, सिध रमणी पाए दरश को इन्द्र लोक आए । सुर नरनारी तेरे दरशनमे, कवल उप जाए, मुनीजन ज्ञान उदै आए जी । जहा चारण तेरे दरशनसे गए, गए निरवान ॥ ते०२ ॥ मात भोग देवी कुल अवतारी, वृक्ष रतन धारी । चकेश्वरी करती जयकारीजी, धुलेवा नगरमें प्रगट प्रभुजी, मोह संसारी, गले विच मुक्ता फल डालीजी । ब्राह्मी सुन्दर बाहु बलने उपजी केवल ज्ञान ते०३ ॥ तेरी धाम इस जगतमें है, महातेज गुणवन्त प्रभु जी तुम अरिगञ्जन अरिहन्त जी, काम क्रोध माया तज प्रभुजी किये दुर सब खेद, प्रभुजी तुम भज चित इकमन, जीवन दास तेरे शरणे आए दो दरशन भगवान ॥ ते०४॥

पुनः

नेमकी जान बनी भारी देखनकुं आए नरनारी अनन्ता घोडा अरु हाथी जिनकी गिनती नही आती । ठेट पर ध्वजा जो फरराती धमक सुण धरती थरराती । (दूहा)- समुद्र विजेजीको लाडलो नेम कुमरजो नाम राजुलने परणी

जब आया उग्रसेनके पोल, हरष भई नगरी सब सारी ॥ नेम०१ ॥ कसूंबल बागा अति भारी कोर गोटनकी छिब न्यारी माल मोतियनकी गलधारी किलङ्गी मांहे सुखकारी (दूहा) कानों कुण्डल झिगमिगे शीश सेहरो जान। कहां लग कहुं उपमा ताकी शोभा इन्द्र समान, बाज रहे बाजा एक तारी ॥ नेम०२ ॥ छाट रहे छुला छरगाई वांणसे तारे होशकाई सखीयें राजुल दे आई जाल देखत अति सुखपाई॥ (दूहा) उग्रसेन अब देखके मनमें कियो विचार पशु जीवाने कन्या एकठा वाड़ा भर्या अपार, करी इन भोजनकी त्यारी नेम०३ ॥ निकट जब तोरणे के आए पशु जीव देखत विल लाए नेमजी वचन जो फुरमाए रखा पुन काहेकुं ल्याए ॥ (दूहा) इनको भोजन होयगी जान वासते जोय इतना वचन जो सुणा नेमजी थरहो कांप मांय फिरकर चले गये गिरनारी ॥ नेम०४ ॥ पीछेसे राजुल दे धाई हाथ जब पकड्यो है माई काहां जावत हो मेरा जाई और वर हेरुं सुकलाई ॥ (दूहा) मेरे तो वर एक है होय गया नेम कुमार दूजो वरमें कदे नही परणुं कोठिक करो विचार दीक्षा जब राजुल दे धारी ॥ ने०५ ॥ सखियां सबही समझावे दाय राजुलके नही आवे मेरे मन नेम कुमर भावे जगत सब झूठो दरसावे ॥ (दूहा) कङ्कण डोरा खोलके दीक्षा लव

सर हार काजल टीकी पान सुपारी छोड्या सब शिनगार सहेल्यां विलसत है मारी ॥ ने०६ ॥ तज्या है सोले शिनगार आभूषन रतन जडित भारा सरव सुग लागा है खारा छोड वन चाली निरधारा ॥ (दूहा) मात पिता परिवारकुं तज तन लागी वार वेगी दौड मिली जाय पीवसु जाय चढे गिरनार अूरतां मन्नी महतारी ॥ ने०७॥ नेम राजुल है जग माई दीक्षा जिन जैसी विध पाई दया दिल पशुवनकी आई त्याग किया उ छिन माई ॥ (दूहा) नेम राजुल गिरनार पे धरियां निरमल ध्यान जेन दास या लावणी गाई उपज्यो केवल ज्ञान सुगति का हुवा जब अधिकारी ॥ नेम०८॥ इति

पुनः

नेमनाथ मेरी अरज सुनीजे मै हु दासी सरणाकी तोरण आय फिरे मत जावो तमकु सोगन जादवशी ॥ ने० १ ॥ जान लेई तम न्य [illegible] आए लारे सेन्या माधवकी [illegible] जात [illegible] आगर नहीं फिरनकी ॥ नेम० २ ॥ रथ फेर [illegible] धाल समर छंडी नवभवकी। मेरे सांवर श्याम [illegible] नहीकु रतनकी ॥ नेम ३ ॥ सुण जननी मै [illegible] सोभा गिरवरकी मात [illegible] नाटरकी ॥ नेम०४ ॥ राजुल सुन्दर [illegible] नदी [illegible] नेम

श्यामकुं देखी आनन्द ततखण पामी परणेकी। हाथ जोड़ कर विनवे राजुल बात सुनों पिउ मुझ घरकी हमकुं छोड़ चले गिरधारी अबहूं प्रीतम शरणे की ॥ नेम०६ ॥ नेम कहे तुम सुनहो राजुल विषया रसहै विषधरकी। ए संसार असार निरन्तर कर करणी ए तरणेकी ॥ नेम०७ ॥ पिउजी पासे सञ्जम लीनों जासुं कारज शरणेकी तपस्या करणी उत्तम कीनों ए सब पार उतरणे की ॥ नेम०८ ॥ पिउजीसे पहले राजुल नारी पौती छै परमा पदकी केवल पाए नेम सिवाए रहवी शोभा ए जिनकी ॥ नेम०९ ॥ चतुर कुशलनें कही लावणी जिनसे काया उधरनेंकी अरिहन्त ध्यान धरो दिल माहे फिर फेरा नहीं फिरनेंकी ॥ नेम०१० ॥ इति

पुनः

सब परब माँहि परब अलबेला, भादोमें भवि मिल करे पजुसन मेला ॥ १ ॥ कोई पासा पड़िकमणादिक करता रागी, कोई धरता निरमल ध्यान परम रस पागी, कोई पूजा कर कर रचता नव नव आङ्गी, कोई सुनता सूत्र सिद्धान्त आलकस त्यागी, कोई नेम बरत ले करता वेला तेला ॥ भा०२ ॥ कोई पूरण अठाइ करके भवजल तिरता, कोई जिनवाणी धारण कर पार उतरता, कोई परभावल कर स्वामी वच्छल करता, कोई तपसी तप कर ध्यान विमल

गुण धरता; अब मेरे तो एक जिणगुण गावनेसु हेला ॥ भा० ३ ॥ नही तप सञ्जमकी भार सहनकी काया, नही पलता व्रत पच्चखान सुनो जिनराया, एक जगमे जिनका नाम, अमोलक पाया; प्रभु पार लहनका दाव हाथ अब आया, अब सेवक करले निज घट ज्ञान उजेला ॥ भ० ४ ॥ इति.

पुनः

वीर जिनन्दके समवसरणमे वाजा वाजे देवनका, सुरनर किन्नर असुर विद्याधर पूजा करे प्रभु चरणनका॥ टेर॥ पावा पुरमे इन्द्र पधाऱ्या, चौसठ मिलकर भाव किया, अबीर अरगजा सुन्दर भाती फूल विछाय गढ तिन किया। मणि सिंहासन छत्र भा मण्डल धजा पताका तीन किया। वीर जिनन्द प्रभु मुक्तिनाथ छवि, तीर्थङ्कर पद प्रगट किया। तलफ लगी देवनका मनमे भाव धराहै दस दिनका ॥सु० वी० १॥ चोविश चामर प्रभुजीके उपर फूल पचरंगा वरसावे जयजय नन्दा जय जय भद्रा देव दुन्दभी वजावे, पूरव मुख प्रभु वैठे सिंहासन चन्द्र सुरज मुख गुण गावे चौसठ मिलकर क्रोड़ देवता पूजा करे प्रभु मन ध्यावे, तारण तरण अक्षय सुखदाता गुण गावो सब मिल इनका ॥ सु० वी० २ ॥ विद्वं चतुर प्रभु यु कर वाणी धुन सुनकर भवि सुख पावे देविधर सुरनर धरणि धर साधु साध वी के मन भावे तज ममता वैराग दिया जिहा क्ष्माय चोकड़ी।

कुं विसरावे भजो भगवन्त समता मन लायके परमातम कुं दरशावे शब्द सुनी रस वीर जिनन्द का भजन करो केवल पदका ॥ सु० वी०३ ॥ हरिहर ब्रह्मा सहस नाग ऋषि गणधर मुनिवर गुण गावे अनन्त ज्ञान केवल दरशन अनन्त तेज पुं दरशावे सुकल ध्यान समता हितकारी चउदे राज जीव सुख पावे ममता मिथ्याती पाषण्ड तपठ प्रभुजीकुं देख सिरनावे समकित दरशन धर्म चक्रका वड़ा तेज हे जिनवरका ॥ सु० वी०४ ॥ इन्द्राणी अप छरा स्वरूपा रूप सरूपा नृत्य करे या निंदाती मयगंल मन मोहन प्रभु ध्यान धरे तन्त ताल मृदङ्ग वीणा वर घुङ्घरड़ी झरणाट करे मनुख इंद जिन सज प्रभुजी ले हात जोड़ अरदास करे मेहर करो जिनवरजी मोपे सुख दीजो मुक्तिपुरका ॥ सु० वी०५ ॥ इति

पुनः

बंधे हैं अपनी भूलसे इयारो बंधे बंधे मर जावेंगे, दया जीवकी करेंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥ टेर ॥ दयासे प्रजा कहेगी राजा दयासे सत कहावेंगे दयाके कारण सेठ और साहु कार बतावेंगे जो दुखीयाकी दया करेंगे तो जगमें जश पावेंगे बीपत कालमे वेही फेर मदत हमे पुहचावेंगे धन योवनके मदमे हम तुम जो उनका जीव दुखावेंगे पुण्य गिरेगा वेही फेर छाती पर चढ़ जावेंगे छेदे और भेदेगे तनको काट-

कलेजा खावेंगे ॥ दया० १ ॥ झूठ वचनसे मान घटेगा और जिसके ढिग जावेंगे सत्य वचनकी कहेंगे तो सब झूट बतावेंगे वसु राजाके तरां झूठसे नरक कुण्ट में जावेंगे सत्य घोसरगे तरा फिर राजदण्डभी पावेंगे, चोरीके कारणसे प्राणी कुल कलङ्क लगावेंगे राजन कीजो बेल और वशका नाश करावेंगे नरकों मे उनसे उनके मुखसेती कुचा वाल जलावेंगे॥ दया० २॥ मैथुन विसन बुरा है प्राणी जो इसमें फस जावेंगे उन जीवो के बीज दर वज नष्ट हो जावेंगे फेर उनसे सन्तान न होगी जो होगे ता मर जावेंगे जो न मरेंगे तो उनके तनसे रोग नें जावेंगे नरकोंमे उनको लोहेके खम्भोंसे लटकावेंगे लोहेकी पुतली गरम कर छातीसे चिपटावेंगे हाहाकार करेंगें जब उनके मुखमें बांस चलावेंगे ॥ दया० ३ ॥ जिनके नही परिग्रह संख्या तृसनावन्त कहावेंगे लोभके कारण झूठ और चोरीमे मन लावेंगे गुरुको मार देवको वेचे सभामें धर्म उठावेंगे बाल वृद्धके कण्ठमे फांसी दुष्ट लगावेंगे राजा पकड़ धरे शूलीमे फेर नरकमे जावेंगे वचन अगोचर नरकके बहुकाल दुख पावेंगे कहे नैन सुखदास दयासे सब सङ्कट कट जावेंगे ॥ ४ ॥ इति

चेतावरकी चाल

मनुवा जिनन्द गुण गायरे ॥ म० ॥ या जिनजीके चरन सरसते, दुख दोहग मिट जायरे ॥ म ॥ शुभरु पवन पर..

तीत मानलै, आतम सुख लव दायरे ॥ म० ॥ भवभवमे तीर्थ सुखदाई, आनन्द वञ्छित दायरे ॥ म० ॥ इति

स्तवावा

प्रह उठी गौतम प्रणमीजे, मन वञ्छित फल नो दातार लब्धि निधान सकल गुण सागर, श्रीवर्द्धमान प्रथम गण धार ॥ प्रहउठी० १ ॥ गौतम गोत्र चवदह विद्या निधि ; पृथिवी मात पिता वसु भूत, जिनवर वाणी सुनी मन हरख्यो बोलायो नामे इन्द्र भूत ॥ प्रहउठी० २ ॥ पञ्च महा व्रत ले प्रभु पासै, दै जिनवर त्रिपदी मन रङ्ग, गौतम गण धरजी तिहां गुंथ्या, पूरव चउदश दुवालस अङ्ग ॥ प्र० ३ ॥ लबधे अष्टापद गिरि चढ़ियो, चैत्य वन्दन जिनवर चौविश पनरै से तिडोत्तर तापस, प्रतिबोधी किधा निज सीस ॥ प्र० ४ ॥ अदभुत एह सुगुरुनी अतिशय, जसुदीक्षे तसु केवल ज्ञान जावज्जीव छठ छठ तप धारण, आपनपै गोचरिय सध्यान ॥ प्रहउठी० ५ ॥ कामधेनु सुरतरु चिन्तामणि, नाम माहे जसुकरे निवास तेह सुगुरुनी ध्यान धरन्ता, पामे लखमी लील विलास ॥ प्रहउठी० ६ ॥ लाभ घनो विनजै व्या-पारै, आवै प्रवहन कुशले क्षेम, श्रीगौतम गुरु नाम जपन्ता पामे पुत्र कलत्र बहु प्रेम ॥ प्रहउठी० ७ ॥ गौतम स्वामी तना गुण गाता अष्ट महानिधि नव निधान सनय सुन्दर कहे

सुगुरू पसाये पुण्य उदय प्रगट्यो परधान ॥ महउठी०८ ॥

परज

सावरोरे आज मनासो म्हारो ॥ सा० ॥ आप रङ्गीला साभे सेज रङ्गीली । और रङ्गीलो साको सांवरो ॥ आ० १ ॥ आप न आवे यारी न लिख भेजे। प्रीत करनकुं उंतावरोरे ॥ आ०२ ॥ आनन्द घन पिया निज घर आवे । मिट गयो मोह सन्तावरोरे ॥ आ०३ ॥ इति

नवपदजीका स्तवन

सुरमणी सम सहु मन्त्रमा, नवपद अभी रामीरे लो ॥ अहो नवपद० ॥ करुणा सागर गुणनिधि जग अन्तरजामी रे लो ॥ अहो जग०१ ॥ त्रिभुवन जन पूजित सदा लोकालोक प्रकाशीरे लो ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहन्तजी नमूं चित्त उल्लासीरे लो ॥ अहो नमूं०२ ॥ अष्ट करम दल क्षय करी थया सिद्ध स्वरूपीरे लो ॥ अ०थ० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे अगम अरूपीरे लो ॥ अ०जे०३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता सुन्दर सुखकारीरे लो ॥ अ० सु० ॥ आचार्य तीजे पदे वन्दो अविकारीरे लो ॥ अ०२०४ ॥ आगम धारी उपसर्मी तप द्विविध आगारीरे लो ॥ अ०त० ॥ चौथे पद पाठक नमो, संवेग समाधीरे लो ॥ अ० स०५ ॥ पच्चखाण पालन [illegible] परभावथ त्यागीरे लो । गुण रागी मुनि

पांचमें प्रणमु पद्द भागोरे लो ॥ अ० म० ॥ निज परगुणने ओलखे। श्रत श्रद्धा आवेरे लो ॥ अ० श्रु० ॥ छट्ठे गुण दर शान नमो आतम शुभ भावेरे लो ॥ अ०आ०७ ॥ ज्ञान नमो पद सातमे जेपांच प्रकाररे लो ॥ अ०जै० ॥ स्वपर प्रकाशक दिनमणी अज्ञान निवारेरे लो ॥ अ०अ०८॥ आठमे चारित्र पद नमो परभाव निवाररे लो ॥ अ०प० ॥ क्षन्त्यादिक दश धर्मनो जेह छे अधिकाररे ॥ लो० अ०.जे० १० ॥ नवमे कांळ तप पद नमो बाह्याभ्यन्तर भेदरे लो ॥ अ०बा० ॥ घणा काल अनन्तनां जे कर्म उच्छेदरे लो ॥ अ०अ०१०॥ ए नवपद बहु मान थी ध्यावे शुभ भावेरे लो ॥ अ०ध्या० ॥ नृप श्रीपाळ तनी परे मन वञ्छित पावेरे लो ॥ अ० म० ॥ आसू चैत्रक मासमा नव आंबिल करियेरे लो ॥ अ० न० ॥ नवइली विध युत करी शिव कमला वरियेरे लो ॥ अ०शि० १२ ॥ सिद्ध चक्रनी बहु परे। वर महिमा कीजेरे लो ॥ अ० ध० ॥ श्रीजिन लाभ कहे सदा अनुपम जश लीजेरे लो ॥ अ० अ० १३ ॥ इति

पुनः

नवपदका ध्यान धरकेरे। करमनको तूं खपा ॥ अरिहन्त सिद्धजीसेरे हरदम तूं लव लगा॥न०१॥गणधर उपाध्यायजी साधु को कर सुहाय। दरशन ज्ञान चारीत्र हैं तप जप तु

फर सदा ॥न०२॥ तेरे दिलमें कुछ और है। करता है कुछि और। इसमे तेरे निश्चै नहीं जाहिर किया तो क्या। सच्चै दिल सदा हरदम। एहि है तेरे सङ्ग। इसीसे पार पावैगा। इसमे नही दगा ॥ न०३ ॥ सेवककी एहि विनती सुनिए प्रभु मुदा। चरणकी शरण दीजिए एहि तुझसे मगा ॥ न०४ ॥

पुनः

जिया चतुर सुजान। नवपदके गुण गायरे। जो अपने आतम सुख चहिये, एक चित्त ध्यान लगायरे ॥ जि० १ ॥ करम निकाचित दूर करणकु, सुन्दर एह उपायरे ॥ जि०२ ॥ इनको पुष्ट आलम्बन करतां, अजय अमर पद पायरे ॥ जि० ए जिन भये आगामी हो गये। नवपद सङ्ग पसायरे ॥ इति

पुनः (कालेगड़ा)

म्हैंतो नवपदका गुण गास्यांजी, अवसर पाय चङ्गो मेरे मनवा ॥ नव० ॥ अरिहन्त सिद्ध आचारिज पाठक साधु चरण चित्त लास्यांजी ॥म्है०॥ दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम, याहिसे ध्यान लगास्यांजी ॥ न० ॥ देव वन्दन पड़िकमणो करस्यां, जिनजीके मन्दिर जास्यांजी ॥ म्है० ॥ क्रोध मान सब दूर करिने; चारे भावना भास्यांजी ॥ न० ॥ पाल कहे शिर धारग माथो, मन वन्छित फल पास्यांजी ॥ म० ॥ इति

पुनः

नवपद ध्यान धरोरे भविका ॥ न० ॥ मन वच काया करि एकान्ते, विकथा दूर हरोरे ॥ न०॥ मन्त्र जड़ी अरु तंत्र घनेरा, इन सबकुं विसरोरे, अरिहन्तादिक नवपद जपतां ; पुण्यभण्डार भरोरे ॥ न०॥ अठ सिद्ध नव निद्ध मङ्गल माला सम्पत्ति सहज वरोरे, लालचन्द याकी बलिहारी ; शिव तरु बीज खरोरे ॥ न० ॥ इति

पुनः (भैरवीमें)

सदा करो नित ध्यान, नवपद महिमाको जान। कमठ मान भञ्जन प्रभु ततक्षणरे सुनावो धरनेन्द्र कान ॥ न०१ ॥ सर्प्प माल ठव्यो श्रीमति कण्ठरे हुवो फूलनकी माल ॥ न० परम मन्त्र कहे गुरु ज्ञानीरे कौन करे परमाण ॥ न०३ ॥ तीन लोक सुमरे इन मन्त्र कोरे अजय अमर पद पान ॥

पुनः

सो अब हम नवपद नेह सने पातिक पङ्क छने ॥ सो०॥ इन सम तारक जग नहीं कोउ खनि खनि सार खने ॥सो०॥ अरिहन्त सिद्ध आचारज पाठक साधु सूत्र भणें दंशन नाण चरण तप उत्तम ए नव नाम गिणे ॥ सो० ॥ गगण नेत्र शिव अङ्क कृपाकर सब मिल वरस बने प्रथम मधु सित वेद इन्दु तिथि अघ हर गुण वरणे ॥ सो०२ ॥ ऐसी सरस सुधा नवि मासी

जो भले मद अपने कहत गुलाव मिले नही ताको शिव रमणी सुपने ॥ सो० ४ ॥ इति

पुनः

अवि भगति धरी नवपद नव निध दायक नित आराधिये । तन सुद्ध करी इन नर जनमे आतम कारज साधिये ॥ नवपद सम अवर न जगमें । आराधक दुह गति नाहि भमें । जो उपजे तोही नर सुरमे ॥ २ ॥ नवपद आराध्या श्रीपाले तनु रोग गयो तसु तत काले । फिर ऋद्ध रमणी लही सरवाले ॥ ३ ॥ अनुक्रमे नर सुर भव आठ करी आगल तिनरी भव भ्रमण हरी भव नवमे तिन सिद्ध सपद वरी ॥ ४ ॥ नपमी इक जन पदही साजे समरो कोई प्रभु पद सुख ताजे सेठ कातिक हुवो सुर राजे ॥ ५ ॥ मित्र पदने श्रीगणधर ध्याया, पुण्डरिक प्रमुख बहु गुण पाया, सुर पद थी पाम्यो प्रदेशी राया ॥ ६ ॥ इन इम सुमरण मतु करम थाव्या आनन्द विमल होय कष्ट मेव्या, वलि तेज प्रताप महत्व प्रगट्या ॥ ७ ॥ सम्वत् अठोरसे नवासी आसोज महल पुरणमासी भयो नवपद उछव सुखिलासी ॥

पुनः वेहाग

नवपद सुमरण सार और सब अठेर मागा । अरिहन्त सिद्ध सुरी पाठक मुनी, दशन आदिक च्यार । इनरा ध्यान

धरे जो भविजन ते पायो भव पार ॥ २ ॥ एक एक पद जे नर ध्यायौ। ते नर लहियो सुख-श्रीकार ॥ ३ ॥ मात पिता सुत मितर सहोदर। कोई यन आवे तेरे काज ॥ ४ साधू सकल मांहि जिनवर भाषे। दे उपदेश उदार ॥ ५ ॥

पुनः पीलु

नवपद की सेवा क्यों न करेरे ॥ न० ॥ नवपद पूजा शिवसुख पावे; ध्यान धरयो दुख सब टलेरे ॥ न०१ ॥ आंबिलकी किरीया तुम करके, विधि गुरु मुखसे चित लहेरे ॥ न०२ ॥ नवपद महिमा उत्तम दाखी, श्रीपाल चरित मे महिमा वड़ीरे ॥ न०३ ॥ साढ़े च्यार वरस तप कीरीया, उद्यापन मन रङ्ग रलीरे ॥ न०४ ॥ श्रीअक्षयराज सूरीके कृपासे, अजय अमर पद सुख वरेरे ॥ न०५ ॥ इति

पुनः सिद्धाचल गिर भेट्यारे ए चाल।

सिध चक्र पद वन्दोरे भवियण हितकारा ॥ सि० ॥ पहिला श्रीअरिहन्त विराजत, सिद्ध गुणे सुविचारा। आचारिज पद अतिशय धारी, ऊवझाया अणगारारे ॥ भवियण हि० ॥ सिध चक्र ॥ १ ॥ ऊज्वल दरशन है अति सुन्दर ज्ञान भले विस्तारा, चारित तप कीधा सुख पामें, ए नवपद निस्तारारे ॥ भ० सि०२ ॥ इन नवपद ना ध्यान थी

पाम्यो श्रीश्रीपाल कुमारा । रोग शोक सङ्कट भय नाशे समकित बीज उदारारे ॥ भ० सि०३ ॥ कर्म निकाचित पूरव कीधा तूटे सब ततकाला । अध्यातमगुण प्रगटे चेतन मुगत पुरी सुखकारारे ॥ भ० सि०४॥ उगनीशे नव अधिके सम्वत आसु पूणम बुधवारा । कहे जिन महेन्द्र सदा मेरे होज्यो दिन दिन हर्ष अपारारे ॥ भ० सि०५ ॥ इति

रागिणी भैरवीमे गजल

जपो मंत्र नवकार और मन्त्रको सुमरना ना चहिए । जो विद्या धन मिले और धन सञ्चय करना ना चहिए । मित्र मिले दिलदार औरसे दिलको फसाना ना चहिए ॥ १ जो गङ्गाजल मिले कूपेका पानी पिना ना चहिए । मिले एक सन्तोष रतन औरोंको रखना ना चहिए ॥ २ ॥ करे सत्यका सङ्ग असत्यकी सङ्गत करना ना चहिए । निज मालिकको छोड़ औरको सेवन करना ना चहिए ॥ ३ ॥ कहे भलेका बात किसीकी खोटी कहना ना चहिए । फिर सब जग एक पन पट पर फिरना ना चहिए ॥ ४ ॥ पर दुखदेख लिये ध्यान जो घर घर फिरना ना चहिए ॥ कुल जानियो यह गत्त व भूरत गमाना ना चहिए ॥ इति

पुनः होरी

श्री जिन प्रभु प्यारा । और [illegible] भाव भी ऐसा नर

मारी पिचकारी, मै भीज गई सारी सुधि नहीं आई ॥ श्री० श्रीजिन धूम १ ॥ ज्ञान गुलाल शील जल भर कर तपकी ताक लगाई। प्रवचन रूपकी पिचकारी लेके सुमतीके और चलाई। कुमतीको दूर भगाई ॥ श्री०२ ॥ सत्य शीतल जल स्नान कराके दर्शन वस्त्र पहनाई। चारित्र चतुर चौगान में ल्याके धर्म की राग सुनाई, संसय सब दीए मिटाइ ॥ श्री०३ ॥ कृष्ण यती विनती यों करत हे प्रभु सो लगन लगाई। तुम चरणारविन्दमें मधुकर मुझ मन रहो लुभाई। ए अचरीज होली बनाइ ॥ श्री०४ ॥ इति

रागिणी सिंधु–ताल धमाल

चलो भवी वन्दन जिनवर वीर धीर सिद्धारथजी के नन्द ॥ च० ॥ क्षत्रि कुण्डमें जन्म महोत्सव जन्म्या श्रीजिन चन्द ॥ च० ॥ इन्द्राणी मिल मङ्गल गावे नाचत है सूरचंद च० ॥ बे करजोडी विनवे साहेब चाकर माणकचंद ॥ इति

रागिणी जहाज–ताल तवड़ा

तारो मोहे अबतो शीतल। शीतल जिनराज ॥ ता० ॥ यह संसार अथाह जलदसे, तारण तरण जहाज ॥ शी०॥ भ्रमत फिरत हुं अनन्त कालसे, अबतो सारो मारो काज ॥ शी० ॥ सेवककी अरजी पर मरजी, बेग करो महाराज ॥ शी० ॥ इति

क्या छवि लागत प्यारी मरुदेवा नन्दनकी। रतन जड़ित को मुगट मनोहर, कुण्डल झलकत भारी ॥ क्या० ॥ मोती यन हार बांहे बाजुबन्द, छिटक केश काली काली ॥ क्या० समव सरणमें चौमुख मुरत सुरत प्रभुजीकी सारी ॥ क्या० देख दरश सबको मन हरख्यो, चित जात सुरनारी ॥ क्या० बालचन्द प्रभु अधम उधारण, चरण शरण बलिहारी ॥ क्या० ॥ इति

॥ नवकार स्तवन ॥

श्रीनवकार जपो मन रङ्गे श्रीजिन शासन साररी माई सर्व मङ्गल माहे पहलो मङ्गल जपता जयजय काररी माई ॥ श्री० १ ॥ पहिलो पद त्रिभुवन जन पूजित, प्रणमु श्रीअरिहन्तरी माई। अष्ट करम वरजित बीजै पद ध्यांउ मैं सिद्ध अनन्तरी माई ॥ श्री० २ ॥ आचारिज तीजै पद समरू गुण छत्तीस निधानरी माई। चौथे पद उवज्झाय जपीजे सूत्र सिद्धान्त सुजानरी माई ॥ श्री० ३ ॥ सर्व साधु पञ्चम पद प्रणमु पञ्च महाव्रत धाररी माई, नवपद अष्ट यहां छे सम्पद अड़सठ वरण सम्भाररी माई ॥ श्री० ४ ॥ सात इहा गुरू अक्षर एहमे एक अक्षर उचाररी माई, सात सागरना पातिक जावे पद पञ्चास विचाररी माई ॥ श्री० ५ ॥ सम्पूर्ण पणमे य सागरना पाप पलावे दूररी माई। इह भव क्षेम कुशल

सुखसम्पदा पर भव ऋद्धि भरपूररी माई ॥श्री०६॥ ईरति सो वन पुरसो सिद्धो शिव कुमर इन ध्यानरी माई, सरप फीटी हुइ फूलनी माला श्रीमतिनें परधानरी माई ॥ श्री०७ ॥ जक्ष उपद्रव करतो निवारचो पर चौ गृह परसिद्धरी माई चोर चण्ड पिंगलनै हुंडक पांमी सुरनर ऋद्धरी माई ॥ श्री०८॥ पञ्च परमेष्टि मंत जग उत्तम चौवदे पुरव साररी माई । गुण बोले श्रीपदमराज गुरु महिमा जास अपार री माई ॥ श्री०९ ॥' इति

श्रीऋषभजिनेन्द्र स्तुति ।

अनया गत्या विभास रागेण गीयते ।

भाव धरि धन्य दिन आज सफली गिणुं ए राह ।

ऋषभ योगीश्वरं भजत जगदीश्वरं । जन्तुगण शङ्करं गत विकारं ॥ सकल भव भय हरं वृषभ लांछनधरं, प्रथम तीर्थङ्करं विजयकारम् ॥ऋ० १॥ विमलगिरि पूर्व गिरि राज बासर करं । सुमरु देवोदराकरज हीरं ॥ जगति गति वितत तर कुमति मत घन घना,घन घटा विघटनोत्कट समीरम् ॥ऋ० २ ॥ मदन मद कंद निःकंदना मंदतर धार तरवारि अमर गिरिधीरं ॥ कुशल हरि चन्दन प्रकर नन्दन वनं, कुणय घन रेणु संहरण नीरम् ॥ऋ०३॥ प्रणत विबुधेंद्र दनुजेंद्र मनुजेंद्र गण विहित वन्दन मिनं जैन चन्द्रं । त्रिजगदा नन्दनं नाभि

नृप नन्दन । पाप सन्ताप चन्दन मनिद्रम् ॥ ऋ०४॥ दिगत सकला पद सम्पदा कारण, कठिन ममता मही भेदसीरं । अखिल मकराकर, मकर वर रुचिर तर गरिम धर चरम सागर गभीरम् ॥ ऋ० ५ ॥ भक्त गोवदन चक्रेश्वरी विहित पद, कज युगो पासन समिति शातिम् । सु विमलेक्षाकु वर वश भूषण मणि तप्त तपनीय कमनीय कांतिम् ॥ ऋ०६॥ निहत कुमतांधका कारि मद वदन रवि । मोदित क्रम विनत भव्य कोकम् । विशद गगणेन्द्र शिवचन्द्र पर चन्द्रिका मल यश सन्धवलित त्रिलोकम् ॥ ऋ०७ ॥ कलसकाव्यं ॥ लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो । मन्दा नन्द घन द्रु-मौघ जलदो य श्री युगादीश्वरः । इत्थं वाचक पुण्यशील गणिना भक्त्या मुदाभिष्टुतो । भूयाद् भरि विभुत एच भवता भव्यात्मनां प्राणिनाम् ॥ऋ०८ ॥ इति

॥ कानड़ा रागेण गीयते ॥

धीर समीरे यमुना तीरे । वसती वने वनमाली

अनया गत्या गानं ।

शाति जिनेश चरण कज शरण तव सुख करण मुदारं, विश्वसेन कुल कमल दिवाकर । मृग लक्षण हितकारं । करण घाति जित गैरिक गिरिवर । सकल मङ्गला धारं ॥ शांति० १॥ गतपारा सुग जलनिधि निपतित, तरणि समाना-

कारं। अनुभव रसवर पद्माभरणं। भय हरणं गुणधारं॥ शांति० २॥ अपुनर्भव सुर सद्मा मन्दा, नन्दथु ललनागारं भ्रमरी भूत सुरासुर नरपति यति तति गीताचारम्॥ शा० ३॥ धवलित जगति मण्डल कीर्त्ति, विताना हरण म पारं। विगलित सकल जन्तु वांछित हित, सम गल माला दारं॥ शांति०४॥अचिरां बात्मज कृत भूमण्डल, शांति विधेनंतधारं अद्भूत निरुपम शांति सुधारस नदवर सुगतिद्वारं॥ शां० ५॥ कलस॥ कल सकल लोका लोक लोकन विमल केलि लोचन। आनन्द घन पद कंद जल दोय महित वन विरो-चन॥ श्रीशांति रित्थं मुदा वाचक पुण्यशील गणिस्तुत। संभवतु भरि भिमतये भवता मनंत महोद्युतः॥ इति श्री शांतिनाथ जिन स्तुति॥

श्रीसुमतिनाथजीनुं स्तवन।

सुमति जिनेश्वर तारो भवाब्धि थी सुमति जिनेश्वर तारो। नयरी कोशल्या धन तुज धरणी, जन्म्यो सुमति जिन प्यारो॥ भवा०१॥ कुल दीपक मेघरथ राजानो, त्रण जगतने तारो॥ भवा०२॥ मङ्गला माता मङ्गल उदरी, प्रसवे सुमति जिन सारो॥ भवा०३॥ शशी सम सोहे वदन प्रभुनुं, क्रोंच लञ्छन हितकारो॥ भवा०४॥ सुमति दाता समकित आपो कुमती दूर निवारो॥ भवा०५॥ आप हजूर

लेजो अमने, छुटे आ जन मारो ॥ भवा०६ ॥ वाळमितनां प्यारा प्रभुजी मनसुख दास तुमारो ॥ भवा०७ ॥ इति

गजल। चाहे बोलो या न बोलो—इस चालमे।

चाहे तारो या न तारो सरना तो ले चुका हु। जिंदगीसे अब मे हारा, जब तुमको जा पुकारा, अरजि तो दे चुका हु ॥ चाहे०१ ॥ पांचों इंद्रि आ सतावे, मन मैलको चढ़ावे, भवजलमे यों डुवा हु ॥ चाहे०२ ॥ क्या हाल कहुं मै सारा, दिलमें जो है हमारा, सेवक तो हो चुका हुं ॥ चाहे० ३ ॥ इति

तोरा सच नहीं कहनारे—इस चालमें।

तोरा कथन निभानारे। प्यारे नेम, धरू प्रेम, छतिया तरस मोहे रतियां सतावे ॥ तोरा०टेक ॥ सरस दरस तोरो बहुत सुहावे, देखि नयना दिलबरसे। साम साम साम, मेरे तुम सेती काम, मेरे सिरपर तुं है स्वामी, तु है अन्तर जामी ॥ तोरा० ॥ रथको फिराय पिया गिरवर चाले। शिववनिता ललचानेको। प्यारी प्यारी प्यारी, तोहे दिल शिव प्यारी। में पिण दिक्षा लेसुं सारी। मोहुं शिवनारी। तोरा०२ ॥ नेम राजुल दोनु मोक्ष सिधाए। जिन मङ्गल नित गुण गावे। ध्यान ध्यान ध्यान, तोरा नित करे ध्यान, पावे शिव लक्ष्मी प्रधान, थावे मोहन ज्ञान ॥ तो०३ ॥

राग कैरवी। एजी, साहब नतीजा—ए चाल।

मेरे साहब जिनन्दा दिलवासिया मे० ॥ सुनोरी समकित धर नर नारी, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनन्दा० टेक ॥ ध्यान दिलमें धारके सेवत बीश थानकों, जिननाम उपायके धारे अमर निधानकों। उत्तम कुलमें आयके ज्ञान त्रिकले साथकों, भोग सुख पायके लीनो चरण पद हाथकों ॥१॥ करम तपाई केवल जो पाये; सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनंदा० मेरे०२ ॥ केई अमर आयके नमन करे सुभ भावसे। समवसरण रचना करी, चौमुख जिन देखावसे। अतिशय गुण जिणधार, पर्षद बार प्रकारसे। शोभित मधुर स्वरे, कहे धर्म विस्तारसे। सहु भवि सुनकै व्रत गुण पाये, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिन०३॥ पार नहीं ले सके, सुरगुरूपिण कथनसे अरिहन्त पद आदरी अनन्त सिद्ध वतनसे। तीन भुवन प्रभु तणा, रहा चैत्य अनादिसें। श्रीवर शिवसुख पाय ध्यानगुण प्रसादसें ॥ सङ्घ चतुर्विध प्रभु मोहन कर, सेवो शिव श्री नृप ॥ जिनन्दा०४ ॥ इति

ऐसे धोखा देने वाले—ए चाल। ताल पञ्जाबी।

ऐसे पूजा करने वाले मैंने विरले देखे भाले। ए टेक ॥ ऐसे जिन आज्ञाको पालन वाले, विधि संयुतसे रहने वाले विनयादि गुण धरनेवाले भक्ति गुण दिखलानेवाले ॥ पूजा०

पनेजीके सुख पानेको, गुण गानेको गुण पानेको
जनको ध्याते हैं सो, शिव कामेको शिवपानेको
ईं भवनी घाते, त्यागी है कुमतीकी बातें, धारी है
ते, पाली है समकितकी वाते ॥ पूजा०२ ॥
ये भावे, शिवनगरी देता है, ऐसे निजगुण
दिल जाणें जग जाणें, सोभा सोभा भारी
सोभा, सूरजकी सोभा, जैसी है चन्द्रकी सोभा,
जिससें अधकी निजगुण सोभा, जिससें अधकी जिनपद
सोभा । धारो गुण सम, जेथी दूर हुवे क्रम, जैन मङ्गल
पावे धर्म, अजी सुनो सीखो धारो आगम श्रीवर मोहन
भाले ॥ ऐसे०३ ॥ इति

आई सुन्दर नार कर कर सृङ्गार–ताल पञ्जावी ।

जिनतत्व सार, सहु जग आधार, करि मोह जार, सुख
शांति सार प्रभु गुण अपार दिल समरण कीनो ॥ जि०१॥
जिन सुमति पाय दिल सुमति थाय । सहु कुमति जाय,
मोह मद न साय । गुण आत्म पाय वञ्छित सुख लीनो ॥
भवजल प्रधान प्रवहण समान सहु सुख निधान करि आत्म
ध्यान शिर श्री प्रधान गुण मोहन लीनो ॥ जि०३ ॥ इति

तु न कमला जीयरवा–इस चालमें ।

तु अवतार निमलवा ओ प्रभु मोरा ॥ तु० ॥ निमल

जिनेश्वर जग परमेश्वर करो महर निजरवा ॥ करो०ओ० ॥ तुं जग तारण विरुद श्रवण कर रहुं तुमरे शरणवा ॥ र० ओ०२ ॥ तुम गुण सुर गुरु पार न पावत, किसमें करूं वरणवा ॥ कि०ओ०३ ॥ सुमति सङ्ग मुज निजगुण पांउ। एती करो महरवा॥ एती० ओ०४॥ तत्व दीपक शिव श्रीवर मोहन गुण गायो तरणवा ॥ गुण० ओ० ५ ॥ इति

कोई रसीला छबीला—इस चालमें।

मेरे रङ्गीला चङ्गीला प्रभु पाशज्जी। जैसा सङ्गीला साथीला होय तासज्जी ॥ मेरे० टेक ॥ पल घरी छिनमें अह निश समरुं। जिम हुय सुमता नारीहो सुन्दरवाणी, सहज सें पाया चेतन गुण ज्ञानी। तन मन मोहन जाण सज्जन। मेरे०१ ॥ इति

ताल दादरा—हजूरियां ठाठी।

शरणमें आयो शरणमें आयो। वीर तेरे शरणमें आयो वीर०टेक॥ प्रभुजी मैं तो कुमती सङ्ग रमियो। बहुत भव भमियो ॥ वीर०१॥ प्रभुजी मोकुं सुमति अब दीजै। जगत जश लीजै॥ वीर०२॥ प्रभुजी शिवसुख श्रीवर चाहुं। मोहन गुण पाउँ ॥ वीर०३॥ इति

लावणीकी चाल।

नित ध्यावो फल पावो सदा तुम शाश्वत गिरिवर हां।

टेक ॥ तीरथ है ओ सहु जग मण्डण, सिद्धगिरि शिवपाज। जिसके ध्यान भविजन पामें, अरिहन्त पद शिवराज। केइ ध्याया केइ पाया केइ पावे केइ पामसी शिवसुख ज्ञानसे भविजन अनन्त काल गतियां ॥ नित०१ ॥ पूरव निनाणे आया इन गिरि, ऋषभजिनन्द जिनराय। नव घशि चैत्य सुहामणाजी। सहु जिनबिंब सुहाय। सहु आवे प्रभु ध्यावे सुख पावे। गुण ज्ञानसे श्रीवर जैन प्रकाशक मोहन जय वतिया ॥ नि०२ ॥ इति

दिलदारी कीनीरे इस चालमें।

दिलहर ना जावोरे, मेरा ओ प्यारे, सुख करियां प्रीत म वरियां दिल धरियां नजरियां, भरियां, हठ करके, फिर फर ना जावोरे ॥ दिल० ॥ टेक ॥ मन अन्दर रही शिव वनिता जो। जान लेई मुज घरको आ कर। अवतो अरजी सुनके गिरपर ना धावोरे ॥ दि०१ ॥ वात न मानी यादव सुख जो साथ रहुंगी सक्षम पा कर। पल पल दरशन कर के, शिवपूरको पावोरे ॥ दि०२ ॥ जैन प्रभाकर शिव श्री वरजो। मोहन श्रेणी जिनगुण गा कर। उच्छव नाटक कर के मनुजा तन्य दीपावोरे ॥ दिल०३ ॥ इति

—∞—

अथ श्रीजिनधर्म महिमा स्तवन।

आवो आवो नगरीया हमारीरे—इस चालमें।

आवो आवो सज्जन मिल सारारे। गुण गावो जिनन्द सुखकारारे ॥ आ० टेक ॥ कोई हाथे बंशी धारो। कोई हाथे वीणारे। मृदङ्ग बजावो गावो करी स्वरझीना ॥ आ०१ ॥ ठम ठम पाय नाचो घुङ्घरु बंधावोरे। नर नारी सहु जोड़े सुजश वधावो ॥ आवो०२ ॥ दान दया शील धारो। तप जप सारोरे। भाव शुद्ध धार करो आतम निस्तारो ॥ आ० पर पीड़ा दूर करो। करो उपगारोरे। पर निंदा दूर छोड़ो लेवो गुण सारो ॥ आ०४ ॥ जीवको बचाया चावो जिन धर्म धारोरे। समकित सुद्ध धारी करो भव पारी ॥ आ०५ ज्ञान गुणोंसें सोवत रखतां। होवेगी बड़ाई रे। लक्ष्मीमोहन शिव सुख पावे जय आनन्द वधाई ॥ आ०६ ॥ इति

राग सोरठ—ताल पञ्जाबी।

कुबरीने जादु डारा ए राह।

हो मन कर जिनवर गुण गाना ॥ ए टेक ॥ चन्दचकोर ज्युं प्रीति लगी है, केकी घन बरसानारे ॥ मन०१ ॥ दीप पतङ्ग भ्रमर शुभ गंधे, करीणी करी लपटानारे ॥ मन०२ ॥ पनीहारी हस बोलत मचकत, तदपि नदुकी भ्रधानारे ॥ मन० ३ ॥ वंश उपर नट खेलत तदपि, डोर उपर चित्त तानारे ॥

म ०४ ॥ दीन मीन घन जल पर मात्त, रात्त गुण ज्युं सयानारे ॥ मन०५ ॥ ते सें ध्यान ठराय जिनन्द पर, कर सुमरण सुप्रधानारे ॥ मन०६ ॥ बाळमित्र युं सब पावेगो, अक्षय ज्ञान निधानारे ॥ मन० ७ ॥ इति

मोही रह्यो छुं मंद हास्यमां रसीली तारा–ए राह।

मोही रह्यो छु गुणगानमां प्रभुजी तारा, गानमां बन्यो छुं गुलतानमां ॥ प्रभुजी तारा–ए टेक ॥ समकीत देई मुज ने ललचाव्यो, साने समझावो हवे सानमां ॥ प्रभुजी० १ ॥ दायक थईने दानज देतां, खोट आवे सी खजानमां ॥ प्र०२ प्रभु गुण रङ्ग रसे हुं भीनो, भुलु नहीं हवे भानमां ॥ प्र० ३ ॥ आगे अनेक उधारया तेमज, हू पण आव्यो मेदानमां॥ प्र०४ सेवा करी सेवा फल मांगु, राखो हवे प्रभु ध्यानमां ॥ प्र०५ नहीं देसो तो कभा रासिस, पकड़ी छेडो मेदानमा ॥ प्र०६ सेवक सेवाफल नहीं छोडे, हजुतो रहु छुं प्रभु आणमा॥ प्र०७ ज्यारेने त्यारे देवुंज पड़से, नहीं तो ठरसो नादानमां ॥प्र०८ सेवा फल निष्फल नहीं होवे, कह्युं छे तुमेज वखाणमां ॥ प्रभुजी० ९ ॥ नाभिनन्दन मरुदेवा माताने, दीधु केवल ज्ञानमां ॥ प्रभुजी० १० ॥ बाळमित्र गायन मंडलीनी, आशा अक्षय ज्ञानमां ॥ प्रभुजी० ११ ॥ इति

रागिणी खम्वाज ठुमरी ताल दादरा ।

आज श्याम मोह लीनी बंशरी वजायके–ए राह ।

देखो जिनराज आज अङ्गीया सु अङ्गकी ॥ ए टेक ॥ कनक पत्र कोरणीमें चन्द्रके प्रकाशसी; चन्द्रके प्रकाश जैसी हीराकी कणी वणी ॥ देखो० १ ॥ मस्तके मुकुट काण कुंडले शोभा बनी; हीरा कण्ठी हार गले माल मोतीयनकी ॥ दे० २ फुल तोले अमूल अफूल करणीका कली ; गन्धतो सुगन्ध धूप वासथी वनी वनी ॥ देखो० ३ ॥ बालमित्र अङ्गीया रचाविने रची रली ; देजो दरश ताहरु अक्षय ज्ञाननी आशा फली ॥ देखो० ४ ॥ इति

रागिणी वहार–ताल त्रिवट ।

दरशन विन अँखियां तरस रही–ए राह ।

जिन दरशन बिन अँखियां तरस रही ॥ ए टेक ॥ दीन दयालु दे मुज दरशन ; दरश विना सुधी नाही रही ॥ जि० विरह व्यथा तुज विन मुज व्यापत, बिरह दशा मोपे बरस रही ॥ जिन० २ ॥ छयल छविला है छोगाला छांड़ी न छुटत प्रीत रही ॥ जिन० ३ ॥ तुज सुरती मन मोहन गारी दूर रही ललचाय रही ॥ जिन० ४ ॥ युं कहती राजुल गिरनारी, समवसरणमें जाय रही ॥ जिन० ५ ॥ लही दिक्षा शिक्षा ग्रही जिननी, चरण करण गुण चाहाय रही ॥ जिन०

६ ॥ बाळमित्र दरशन फरशनसे, अक्षय ज्ञान गुण पाय रही ॥ जिन०७ ॥ इति

तुं न कमला जीयरवा-ए राह ।

मोरी लागी लगनवा हो केशरीया मोरी ॥ ए टेक ॥ सामरी सूरत मोहनी मूरत, मने लागे मन हरवा ॥ हो केशरी०१ ॥ तुं शरणागत वच्छळ है जिन, तुहि तारण तरणवा ॥ हो केशरी०२ ॥ भव भय हरणने शिव सुख करण तुहि अशरण शरणवा ॥ हो केशरी०३ ॥ तारक पद निसुणी तुज कार्णे, आव्यो पाप निहरवा ॥ हो केशरी०४ ॥ अक्षय ज्ञान दे बाळमित्रने, यात्रा सफळ करणवा ॥ हो केशरी०५ ॥ इति

रागिणी पिलु ।

जात्रानुं फल मोहे दीजे केशरीया, जात्रानु फल मोने दीजेरे केशरीया ॥ ए टेक ॥ जे गुण थी तुम शिवपद पाये ते गुण मुज प्रगटीजो केशरीया ॥ १ ॥ जे करतां क्षायक गुण प्रगटे, ते करणी बगशीजे केशरीया ॥ २ ॥ बाळमित्रने अक्षय ज्ञानी, तुम सरीखो प्रभु कीजे केशरीया ॥ ३ ॥ इति

दुर्जनने जादु डारा-ए राह ।

जय जय राणपुरा महाराजा ॥ ए टेक ॥ मुळ नायक श्रीआदि जिनेश्वर, चौमुख तीन उदारारे ॥ जय०१ ॥ समेत

शिखर नंदीश्वर अष्टापद, सहस्त्र कोट मनुहारारे ॥ जय०२॥ उत्तर दक्षिण पूरव पश्चिम, ए चिहुं चैत्य जुहारारे ॥ जय०३ पाछलना तीन चोमुख वंदो दो दो वली गम्भारारे ॥ जय०४ चार दिशि देरी चौराशी सन्मुख करिवर प्यारारे ॥ जय०५ तीन चौमुख एक चौमुख उपर, थम्भ तणो नहीं पारारे ॥ जय०६ ॥ चोराशी भूमिघर सुन्दर, पड़िमानो नहीं पारारे ॥ जय०७॥ सर्व मळी चौविशे मण्डप थम्भ उत्तम अपारारे ॥ जय०८ ॥ दीन दयाल दयानिधि गुणनिधि, दीठा दूरित हरनारारे ॥ जय०९ ॥ शरणागत वच्छल मन मोहन जिनवर जगदाधारारे ॥ जय०१० ॥ उल्लसित भाव चरण तुम भेट्या मेट्या पाप हमारारे ॥ जय०११ ॥ बाळमित्र जात्राफल मांगे अक्षय ज्ञान दातारारे ॥जय०१२ ॥ इति



आरती प्रभातका।

जय जय आरती शान्ति तुम्हारी तोरा चरण कमलकी मै जांउ बलिहारी ॥ जय० ॥ विश्वसेन अचिराजीके नन्दा शान्तिनाथ मुख पूणिमचन्दा ॥ जय०२ ॥ चालीश धनुष सोवंनमे काया मृगलञ्छन प्रभु चरण सुहाया ॥ जय०३ ॥ चक्रवर्त्ती प्रभु पञ्चम सोहे। सोलमों जिनवर सुर नर मोहे॥ जय० ॥ मङ्गल आरति भोरही कीजे जनम जनम को लाहो

लीजै ॥ जय०५ ॥ कर जोड़ी सेवक गुण गावै सुरनर नारी अमर पद पावे ॥ जय०६ ॥ इति

आरती सन्ध्या समयका।

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व की, जय महाराजकी आरती कीजै। इह विध मङ्गल आरती कीजै पञ्च परम पद भज सुख लीजै ॥ इह०१ ॥ चन्द सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य सुखदायक ॥ जय०२ ॥ विमल अनन्त धर्म अधिकाई, शान्तिनाथ प्रभु लायक ॥ जय०३ ॥ कुन्थु नाथ अर मल्लि मुनि सुव्रत, नमि जिन है शिव दायक ॥ जय०४ ॥ नेमिनाथ प्रभु पार्श्व जिनेश्वर वर्द्ध-मान सुख दायक ॥ जय०५ ॥ कञ्चन दीपक बहुविधि सज्ज कर लीजै २ है प्रभु हरष वधाय कि ॥ जय० ॥ सकल सङ्घ मिल आरती करत है आवा गमन निवारक ॥ जय० ॥ इति

॥ अथ निर्वाण आरती लिख्यते ॥

जय जगदीश्वर अति अलवेशर। वीर प्रभुराया॥ पतित उधारण भव भय भञ्जण। बोधवीज दाया॥ (जय २ जिन राया। आरति करुं मन भाया। होय वचन काया)॥ १ ॥ ज० ॥ क्षत्रीकुड नगर अति सुन्दर। सिद्धारथ राया। सुदि आषाढ छठेके दिनमे। त्रिशला सुत आया ॥ ज०२ ॥ चउद सुपन देखी अति उत्तम।, निज मानम भाये। अर्थ भेद

सहु निश्चे करनें। जिनगुण रस चाखे ॥ ज०३ ॥ चैत्र सुदि तेरस दिन उत्तम। सहु ग्रह उच्च पावे। जन्म लेई दिश कुमरी सहुना आसन कंपावे ॥ ज०४ ॥ उच्छव कर जावे निज थानक। इंद्र सहु आवै। मेरु शिखर पर स्नात्र महोच्छव करि आनन्द पावे ॥ ज०५ ॥ वसुधारा वृष्टि कर सहु सुर निज थानक जावै। सिद्धारथ कर जन्म महोच्छव। अचरज सहु पावै ॥ ज०६ ॥ कंचन वरण तेज अति दीपत। हरि लञ्छन छाजै। कुल इक्ष्वाकु अङ्ग सहु लक्षण। शशी ज्युं मुख राजै ॥ ज०७ ॥ दान सम्वच्छर दे प्रभु लेवै। चारित्र सुखदाई। मार्गसीर्ख दशमी वद पक्षै। उत्तम तरु पाई ॥ ज०८ ॥ बार वरश छद्मस्त पणामें। दुक्कर तप पालै। माधव सुद दशमीके दिनकुं। दोख सहु टाले ॥ ज०९ ॥ केवल पाय सबी सुर सङ्ग। पावापूर आवै। गुणगण लंकृत देशना देके। सङ्घ सहु पावै ॥ ज०१० ॥ भूमंडल बिच वहुत जीवकुं अविचल सुख देवै। नर सुर इंद्र सबी मिल पूजै। जगमें जश लेवै ॥ ज०११ ॥ चरम चौमाशि पावापूरि करकै। अन्त समय जाणी। हस्ति पालकी शुक्ल शालमें। सोलै पहर वाणी ॥ ज०१२ ॥ पर्यंकासन छठ तपस्या। एक चित्त गुणधामी। कार्त्तिक कृष्ण अमावसके दिन। शिव कमला पामी ॥ ज० १३ ॥ इंद्रादिक निर्वाण महोच्छव। करि प्रभु गुण गावे।

देव मुखे। गणधर गुरु गोतम सुणने पछतावे ॥ ज०१४ ॥ वीतराग गुण मनमे धारी अनित्य भाव भावे। केवल ज्ञान प्रगट हुय ततखिण। सुर नर गुण गावे॥ ज०१५ ॥ पञ्च कल्याणक शासन पतिकी। आरति ज्यो गावे। शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिले जब। मोहन गुण पावे॥ ज०१६ ॥ इति पञ्च कल्याणक आरती सपूर्णम् ॥

॥ अथ चक्रेश्वरीकी आरती ॥

जय जय जिनपद सेवन कारक, जय जय जगदवे॥ ए आंकणी॥ अहनिशि तुझ पद समरन कारन, दिल विच ध्यान धरे॥ जय०१॥ भविजन वञ्छित पूरन सुरतरु, चक्रेश्वरी अबे॥ जय०२॥ वसु भुज शोभित कनक छवी तनु, सेवित सुर वृंद॥ जय०३॥ पंचानन तिम खगपति वाहन, आयुध हस्त धरे॥ जय०४॥ ऋद्धि वृद्धि नित प्रति सेवक अपि, आनन्द सह धरे॥ जय०५॥ इति

॥ अथ यक्षराजाकी आरती ॥

जय जय ऋषभ पदांबुज सेवक, जय जय यक्षराया, भविजन सुखदाया॥ ज०॥ कामगवी जिम वछितदायक, कञ्चन वरण सुहाया॥ ज०१॥ सकट विकट निवारण कारण, वर कुजर चढि आया॥ ज०२॥ उदार्ष भुजे करि शोभित तनु छवि, गुणनिधि गोमुख सुरराया॥ जय०३॥

आरत हरवा करत आरति, श्रीसङ्घ चित्त हुलसाया ॥ ज० ४ ॥ इति

महावीर पञ्च कल्याणक स्तवन ।

श्रीइकमन वंदु स्वामी वीर जिनन्द, जिन समरचा होय परमानन्द । भोर भये उठ लीजै नाम, ते नर पामें उत्तम ठांम॥ १॥ कुण्डलपूर सब सीझै काज, राजा सिद्धारथ पालै राज । तसु घर राणी त्रिसला भली, पुण्य प्रभावे जोड़ी मिली ॥ २ ॥ सुख शिय्याए पोढ़ी सही, चउदे सुपना उत्तम लही । उठ राणी गई पीया पास, सुण राजा मोरी अरदास ३ ॥ चउदे सुपना उत्तम लह्या, जिण दख्या तिन सुन्दर कह्या । राजा चेरी लीया बुलाय, वहु पंडितने लावो जाय ४ ॥ ज्योतिष कथा पण्डित इम कहे, दशमा देव लोक सुं चवै । तीर्थङ्कर त्रिभुवन जिनराज, जीव दया प्रतिपालन काज ॥ ५ ॥ जननी दुक्ख न देवे काय, दयावन्त रह्या देह सङ्काय । राणी चित्त अंदेसा भया, गर्भ हमारा किन हर लीया ॥ ६ ॥ अवधि धरी देखे जिनदेव, इन पाछै हम सञ्जम लेय । अङ्ग सङ्कोचित वहु दुख भया, पग फुरकावत आनन्द थया ॥ ७ ॥ चैत सुदि तेरस तिथ जांण, जन्म्या स्वामी श्रीवर्द्धमान । फिरे ढंढोरो सुरपति तणो, करे महोच्छव आनन्द घणो ॥ ८ ॥ चन्द्र सुरेन्द्र विद्याधर मिल्या, चोपठ

सुरपति मिलकर चल्या। छपन कुमरी गावे गीत, करे महो-च्छव आनन्द चीत ॥९॥ इक गावे इक वींझे पोन, इक गड़ वाले ऊभी पोल। एक दिखावे आरसी दरस, इक भर लाई सोवन कलस ॥१०॥ मेरु शिखरपे नहावे इन्द्र, ढोले चवर डुलावे वृन्द। ऊंचा वेल विकुर्वे च्यार, यो वालक किम सहसी धार ॥११॥ अवधि धरी देखे जिनराय, मेरु अगुठो चाप्यो जाय। मेरु चूलिका अति थरहरी,सब सुरपति मिली वीनती करी ॥ १२ ॥ क्षमो अपराध हमारो वीर, अनन्त वली तुम साहस धीर। देव दुन्दभी चिहु दिशमे भई, इन्द्र इन्द्राणी देव लोके गई ॥ १३ ॥ भर जोवन प्रभु लीला करी, राज कुमर इक सुन्दरवरी। मात पिता थित पूरी थई, अब हम लेस्या संजम सही ॥ १४ ॥ पञ्च महाव्रत दुःधर घणा, करे महोच्छव चारित्र तणा। जैजै इन्द्र पुकारे धाय,खिण बंदे खिण लागे पाय ॥ १५ ॥ देव दुष्य वस्त्र इन्द्र देकर चल्या, फिर कर पीछा भोहित मिल्या। आधा वस्त्र दिया उतार, आधा उड़के लागा झाड़ ॥१६॥ तीस वरस घर भीतर रहे, तीस वरस दृढ केवल रहे। बार वरस छद्मस्त फिरंत, वरस बहुत्तर आउखानन्त ॥ १७ ॥ चवद सहस मुनीश्वर साथ, इग्यार गणधर गौतम आद। बतीस सहस्र आर्यका मिली, चन्दन वाला प्रमुख भली ॥ १८ ॥ उग्र विहार करे तिनवार, छठे

महीने ले आहार। कांन परीसा अधिक सह्या, मद त्यजके घर भीतर रह्या ॥ १९ ॥ जन्म मरणका आण्या अन्त, केवल पाम्या श्रीअरिहन्त। करे महोच्छव केवल तणो, आप तरया और तारया घणा ॥ २० ॥ भव जल तारण साहस धीर सिंह सियाल सुणीये एक तीर। दानां माहि वखांण्यो अभे, फिर कर खोड़ न लागै कदे ॥ २१ ॥ सिंह लञ्छन अतिशय गुण जांण, योजन वाणी करे वखान। कनक सरीखी दीपै काय मुक्ति पहुता श्रीजिनराय ॥ २२ ॥ कार्त्तिक वदि अमावस जांण, पावापूर पोहता निर्वाण। प्रह उठीने ध्यावो सदा, रोग सोग नहीं आवे कदा ॥ २३ ॥ चारित्र पालो निर्मल करी जिण गुण गावो हियडे धरी। पंचपञ्चा ध्यावे मन माहि, लोह जड़ित वेड़ी झड़जाहि ॥ २४ ॥ जो नरनारी ध्यावे इक चित्त ऋद्ध सिद्ध पावे नव निध। नित्य तवन कह्या मन भया आनंद मुगती द्यो मुझ वीर जिनन्द ॥ २५ ॥ पूरो इच्छा मनकी आश सेवक पामें शिवपूर वास (कलश) देवादि देव दयाल स्वामी मुक्तिगामी दुष्टकर्म निवारणो, सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन करो कृपा प्रभु हम तणो, करजोड़ी श्रीगुणसूर विनवै पूरो मनवञ्छित घणो ॥ २७ ॥ इति ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥*॥ इति स्तवनावली समाप्तम् श्रीरस्तु ॥*॥